पूर० गु० सब, कुल भरा, प्रवाह, धारा।
पूरक० गु० पूरा करनेहारा, पूरा होने वाला, पु० बिजौरा, श्वासविशेष को जिस क्रिया से खेंचते हैं।
पूरण० गु० भरा, पूरा, सब, सारा।
पूरणा० } ना० स्त्री० चन्द्रमा की कला
पूरणामृता० } विशेष।
पूरना० स० क्रि० भरना, पूरा करना, फैलाना।
पूरब० ना० पु० पूर्व।
पूरा० गु० पूरण, सब, समस्त।
पूराई० ना० स्त्री० भराई, पूरणता।
पूरिया० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
पूरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
पूर्ण० गु० पूरण, समस्त, सारा, भरा।
पूर्णज्या० ना० स्त्री० पूरारोदा, सूत्री रेखा।
पूर्णता० ना० स्त्री० पूरणता, पुराई।
पूर्णपात्र० ना० पु० पात्रविशेष, जिस में २५६ मुष्टिका चावल भरके संकल्प करे, गु० पात्र भरपूर, पूरापात्र।
पूर्णभूत० ना० पु० समस्त बीतगया।
पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुक्लपक्ष की समाप्ति की तिथि, पूनो।
पूर्णाहुति० ना० स्त्री० होम पूरा होनेपर जो आहुति देते हैं उसका नाम।
पूर्णिमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी।
पूर्व० गु० पहला, पिछला, अगला ना० पु० जिस दिशा में सूर्योदय होता है।
पूर्वक० गु० विस्तार युत, भराहुआ, साथ।
पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम।
पूर्वकृतकर्म० ना० पु० पूर्व जन्मके किये कर्म।
पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ाभाई।
पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर।
पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देशके पूर्व का देश। वा निज स्थानसे पूर्व का देश।

पूर्वपक्ष० ना० पु० पहला पक्ष चरचा करने में जो स्थापन वा निषेधकिया जाता है।
पूर्ववत्० अव्य० उसी प्रकार, वैसाही।
पूर्ववायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुरवाई।
पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गांव।
पूर्वाफाल्गुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवां नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।
पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने।
पूर्वार्द्ध० गु० पहिला, आधा।
पूर्वाषाढ़० ना० स्त्री० बीसवां नक्षत्र।
पूर्वाह्न० ना० पु० दिनका पहला भाग।
पूर्वी० गु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
पूर्वोक्त० गु० प्रथम कहा है, प्रथम कहाहुआ।
पूला० ना० पु० } तृण वा अन्न की छोटी २
पूली० ना० स्त्री० } गड्डी।
पूषण० ना० पु० सूर्य्य।
पूषा० ना० स्त्री० सूजन, चन्द्रकला विशेष, श्वास विशेष, जो दक्षिण कान में प्रकाशित है।
पूस० ना० पु० पौष मास, दशवां मास।
पृच्छा० ना० पु० जिज्ञासा, प्रश्न।
पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फौज, दल।
पृथक्० अव्य० भिन्न, अलग।
पृथक्करण० ना० पु० अलग २ करना।
पृथक्छद० ना० पु० अखरोट।
पृथक्त्व० ना० पु० भिन्नता, जुदाई।
पृथक्पर्णी० ना० स्त्री० सुरहरी।
पृथग्० अव्य० पृथक्।
पृथग्पृथग्० अव्य० अलग २ जुदा २।
पृथवी० ना० स्त्री० पृथिवी।
पृथवीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह।
पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन।
पृथु० गु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष।
पृथुरोमा० ना० स्त्री० मछली।
पृथुल० गु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल।
पृथुशिव० ना० पु० स्यौनावृक्ष।

पृथूदर० ना० पु० मेढ़ा, भेंड़ा ।
पृथ्वाक० ना० पु० पुनर्नवा ।
पृथ्वी० ना० स्त्री० धरती ।
पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलौंजी ।
पृथ्वीनाथ० } ना० पु० राजा, बादशाह ।
पृथ्वीपति०
पृथ्वीपाल०
पृष्ट० गु० पूछागया ।
पृष्ठ० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक ओरें ।
पृष्टा० ना० पु० पित्तपापड़ा, पूछनेवाला ।
पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।
पृष्ठि० ना० पु० पीठ, पृष्ठ ।
पृष्ठिस्थोरी० ना० पु० घोड़ा ।
पेइ० ना० स्त्री० पिटारी ।
पेँग० ना० पु० झूलेका हिलाना, पक्षी विशेष ।
पेँगना० अ० क्रि० झूलेको बढ़ाकर झूलना ।
पेँठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाजार ।
पेँड़० ना० स्त्री० डग, चलावा, टीला, वृक्ष ।
पेँदा० ना० पु० } तला, नीचानका खण्ड ।
पेँदी० ना० स्त्री०
पेखक० गु० यथोचित दूत भेजनेवाला ।
पेखना० ना० पु० स्वांग, खिलौना, स्त्रियों का छल, स० क्रि० देखना ।
पेखनिया० ना० पु० स्वांगी ।
पेखित० गु० भेजागया ।
पेच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेरु ।
पेचक० } ना० पु० उलूक ।
पेचा०
पेट० ना० पु० उदर, गर्भ ।
पेटक० ना० पु० पिटारा ।
पेटार्थी० } गु० पेटपालू, खाऊ, भक्षक ।
पेटार्थू०
पेटिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, सीधा ।
पेटी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेटका बन्धन, पिटारी, सन्दूक, छाती ।

पेटू० गु० पेटार्थी ।
पेटौखा० ना० पु० पेटचलने का रोग ।
पेठा० ना० पु० लौकी वा कद्दू, वा कुम्हड़ा विशेष ।
पेड़० ना० पु० वृक्ष, बूटा ।
पेड़ा० ना० पु० मिठाई विशेष, लोई ।
पेड़ी० ना० स्त्री० पेड़ा० सुपारी, नील आदि का वृक्ष जो एकबार कटगया, और पेड़का स्तम्भ ।
पेड़ू० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग ।
पेम० ना० पु० प्रेम ।
पेमी० ना० पु० प्रेमी ।
पेय० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, गु० जो पीने के योग्य हो ।
पेरना० स० क्रि० प्रेरण, कोल्हू में कुचल के रस वा तेल निकालना ।
पेरू० ना पु० कुक्कुट विशेष ।
पेलड़० } ना० पु० आंड़, कौड़ी, कोच ।
पेलड़ा०
पेलन० ना० पु० पालन, झूलना ।
पेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, ठांसना, दबाना, भरना, घुसेड़ना, अ० क्रि० पिलजाना, घुसड़जाना ।
पेला० ना० पु० झाड़, दोष, उपद्रव, टेकन ।
पेलू० ना० पु० ढकेलू, घुसेडू ।
पेवड़ी० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष ।
पेवसी० ना० स्त्री० पीयूष जो दूध फटे को पकाते हैं ।
पेषण० ना० पु० दलैंती, किसी वस्तु को दो पत्थरों से घिसना ।
पेषणीय० गु० पीसने के योग्य ।
पै० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री० दोष, अव्य० ऊपर, तौभी, परन्तु ।
पैँचना० स० क्रि० पछोड़ना, फटकना, बदलना ।
पैँचा० ना० पु० बदला, पलटा ।
पैँजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष ।

पैंड़॰ }
पैंड़ा॰ } ना॰ पु॰ मार्ग, बाट वा बाट देखना।

पैंतालीस॰ गु॰ चालीस और पांच, ४५।

पैंतीस॰ गु॰ तीस और पांच ३५,।

पैंसठ॰ गु॰ साठ और पांच, ६५।

पैकड़ा॰ ना॰ पु॰ } बेड़ी, पैर का गहना
पैकड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } विशेष।

पैगू॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा देशका प्रदेश।

पैज॰ ना॰ स्त्री॰ प्रतिज्ञा, प्रण, पराक्रम।

पैठ॰ ना॰ पु॰ हुण्डी की पतिया, पहुँच, प्रवेश।

पैठना॰ अ॰ क्रि॰ घुसना, धसना।

पैठालना॰ स॰ क्रि॰ प्रवेश कराना, घुसाना।

पैड़॰ ना॰ पु॰ पावोंका चिह्न।

पैड़ा॰ ना॰ पु॰ ऊंची खड़ाऊं।

पैड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ सीढ़ी।

पैतला॰ गु॰ उथला, छिछला।

पैतृक॰ गु॰ बपौती, पूर्व जनों से जो धन वा व्यवहार प्राप्त हो।

पैदल॰ अव्य॰ पैरों से, ना॰ पु॰ पियादे।

पैन॰ ना॰ पु॰ नाली, पोखरा।

पैना॰ ना॰ पु॰ पशु हांकने का अस्त्र, गु॰ तीव्र, तीक्ष्ण, तेज।

पैनाना॰ स॰ क्रि॰ तीक्ष्ण करना, बाढ़िदेना।

पैनाला॰ ना॰ पु॰ परनाला, मुहरी।

पैया॰ ना॰ पु॰ पहिया, चक्र।

पैर॰ ना॰ पु॰ पांव, खलियान, गु॰ जो पैरने के योग्य है।

पैरना॰ अ॰ क्रि॰ हेलना, तिरना, पवरना।

पैराई॰ ना॰ स्त्री॰ पैरने का काम।

पैराक॰ ना॰ पु॰ पैरनेहारा।

पैराकी॰ ना॰ स्त्री॰ पैरनेहारी।

पैराना॰ स॰ क्रि॰ तैराना, हिलाना।

पैराव॰ गु॰ जो पैरने के योग्य है।

पैरी॰ ना॰ स्त्री॰ पांवका गहना विशेष।

पैला॰ ना॰ पु॰ अन्न मापने का पात्र, डलवा।

पैशून्य॰ ना॰ पु॰ दुष्टता, पिशुनता, चुगली।

पैसा॰ ना॰ पु॰ तांबे का मुद्रा।

पैसार॰ ना॰ पु॰ पैठ, पहुँच, प्रवेश।

पैसारना॰ स॰ क्रि॰ पैठाना, पहुँचाना, प्रवेश कराना, घुसेड़ना।

पोआ॰ ना॰ पु॰ पौधा, दूधपीनेहारा बच्चा, सांप का बच्चा थोड़े दिनों का।

पोआना॰ स॰ क्रि॰ धमाना।

पोईस॰ अव्य॰ अरे, बचो, पोइश शुद्धहै, फ़ारसी शब्द है।

पोंकना॰ अ॰ क्रि॰ पेट चलनां।

पोंका॰ ना॰ पु॰ कीड़ा विशेष।

पोंगा॰ ना॰ पु॰ उल्लू, मूर्ख, ढीला विशेष, पोर, गु॰ छूंछा।

पोंगी॰ ना॰ स्त्री॰ नली, छूंछी, खोखली, मूर्ख स्त्री।

पोंछन॰ ना॰ पु॰ झाड़ना, गूदड़।

पोंछना॰ स॰ क्रि॰ झाड़ना, स्वच्छ करना।

पोखना॰ स॰ क्रि॰ पालना।

पोखर॰ }
पोखरा॰ } ना॰ पु॰ जल, तड़ाग, तालाब।

पोच॰ गु॰ नीच, लटा, यह शब्द फ़ारसीकाहै।

पोट॰ ना॰ स्त्री॰ मोट, गांठ, गठरी।

पोटला॰ ना॰ पु॰ बड़ी गठरी।

पोटली॰ ना॰ स्त्री॰ गठरी, खांड़ विशेष।

पोटा॰ ना॰ पु॰ गेंदा, पलक, पक्षी का झोझ, ओझ, रेंटा गु॰ पोटनेहारा।

पोढ़ा॰ गु॰ कड़ा, बलवान्, ठोस, दृढ़।

पोढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ापन, ठोसाई, दृढ़ता।

पोत॰ ना॰ स्त्री॰ कांचकी सूक्ष्म गुरिया, नाव, स्वभाव, प्रकृति, बच्चा, कपड़ा।

पोयकी॰ ना॰ स्त्री॰ पोय, बेलि।

पोतड़ा॰ ना॰ पु॰ छोटे लड़कों का बिछौना, गुदड़ी।

पोतड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ खेरी, हल।

पोतना॰ स॰ क्रि॰ लीपना, घरपोतना, ना॰ पु॰ पिण्डोर, मृत्तिका विशेष।

पोता॰ ना॰ पु॰ पुत्रका पुत्र, पौत्र।
पोती॰ ना॰ स्त्री॰ पुत्रकी कन्या, पौत्री।
पोथा॰ ना॰ पु॰ बड़ा ग्रन्थ।
पोथी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा ग्रन्थ।
पोदना॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।
पोदनी॰ ना॰ स्त्री॰ पोदना की स्त्री।
पोना॰ स॰ क्रि॰ पकाना, पिराना, ना॰ पु॰ झरना।
पोनी॰ ना॰ स्त्री॰ पूणी।
पोपनी॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।
पोपला॰ गु॰ दांतों से रहित।
पोमचा॰ ना॰ पु॰ जय नगरी, वस्त्र विशेष।
पोय॰ ना॰ स्त्री॰ साग विशेष, बेलि विशेष।
पोया॰ ना॰ पु॰ साग विशेष।
पोर॰ ना॰ पु॰ दो गांठियों का मध्यभाग।
पोरी॰ ना॰ स्त्री॰ बांसकीगांठ, टोंटा।
पोला॰ गु॰ छूंछा, कोमल, खोखला, खाली।
पोली॰ ना॰ स्त्री॰ छूंछी, खोखली, अनाड़ी।
पोषक॰ ना॰ पु॰ पालनेहारा।
पोषण॰ ना॰ पु॰ पालन, पालना।
पोषना॰ स॰ क्रि॰ पालना।
पोषित॰ गु॰ पालागया, पालाहुआ।
पोष्य॰ गु॰ पालने के योग्य।
पोष्यपुत्र॰ ना॰ पु॰ लै पालक।
पोष्यवर्ग॰ ना॰ पु॰ कुटुम्ब।
पोषना॰ स॰ क्रि॰ पालना।
पोसे॰ क्रि॰ पाले।
पोह॰ ना॰ स्त्री॰ पोर, तड़का, भोर।
पोहना॰ स॰ क्रि॰ पिरोना, पेड़ा बनाना।
पोत्री॰ ना॰ पु॰ सुअर, शूकर।
पौ॰ ना॰ पु॰ जल पिलाने की शाला, पांसेमेंका एका।
पौंड़ा॰ ना॰ पु॰ मोटा इक्षु विशेष गन्ना।
पौंरि॰ ना॰ स्त्री॰ ड्योढ़ी।
पौंरिया॰ ना॰ पु॰ ड्योढ़ीवान, द्वारपाल।
पौढ़ना॰ स॰ क्रि॰ लेटना, सोना।
पौढ़ा॰ गु॰ पोढ़ा, लेटाहुआ।
पौढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ पोढ़ाई, लेटास।
पौण्ड्रक॰ ना॰ पु॰ ऊख, गन्ना, पौंड़ा।
पौत्तलिक॰ ना॰ पु॰ मूर्त्तिपूजक।
पौत्र॰ ना॰ पु॰ पुत्रकापुत्र, पोता।
पौत्री॰ ना॰ स्त्री॰ पुत्रकी कन्या, पोती।
पौधा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष जो तरुण है, बिरवा एक वर्षका।
पौन॰ गु॰ तीन चौथाई, ¾ ना॰ पु॰ पवन।
पौनचक्र॰ ना॰ पु॰ बौंडरा, पवनग्रन्थि।
पौना॰ ना॰ पु॰ झरना, पौनका पहाड़ा।
पौने॰ गु॰ चतुर्थांश रहित।
पौर॰ ना॰ स्त्री॰ फाटक, द्वार।
पौराणिक॰ ना॰ पु॰ श्रीवेदव्यास, सूतजी, पुराण का वक्ता।
पौरी॰ ना॰ स्त्री॰ पौर।
पौरुष॰ ना॰ पु॰ मनुष्यत्व, बल।
पौरोहित्य॰ ना॰ स्त्री॰ पुरोहिताई।
पौलस्त्य॰ ना॰ पु॰ रावण, कुबेर।
पौलिया॰ ना॰ स्त्री॰ पौरिया, छोटी खड़ाऊं।
पौली॰ ना॰ स्त्री॰ पौरि, खड़ाऊं।
पौलोमी॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्राणी, देवरानी।
पौवा॰ ना॰ पु॰ सेरका चौथा भाग।
पौष॰ ना॰ पु॰ नवांमास, पूस।
पौष्कराह्वय॰ ना॰ पु॰ पुहकरमूल।
पौष्टिक॰ गु॰ पुष्टिकारक।
पौसरा॰ ना॰ पु॰ पिआऊ।
पौह॰ ना॰ पु॰ जल पिलाने का स्थान।
पौहदा॰ ना॰ पु॰ पौधा।
पौह्वा॰ ना॰ पु॰ गाय बैलादि पशु।
प्यार॰ ना॰ पु॰ प्रेम, दुलार।
प्यारा॰ गु॰ प्रिय, दुलारा, लाड़िला।
प्यारी॰ ना॰ स्त्री॰ प्रिया, दुलारी, लाड़िली।
प्यावना॰ स॰ क्रि॰ पिलाना।
प्यास॰ ना॰ स्त्री॰ तृषा।

प्यासा॰
प्यासी॰ } गु॰ तृषावन्त, तृषित।

प्यौसार॰
प्यौहर॰ } ना॰ पु॰ पतिका घर स्त्री॰ ससुराल।

प्र॰ अव्य॰ जिस शब्दकी आदि में यह मिलित हो उसका अर्थ कभी आगे कभी अधिक है।

प्रकट॰
प्रकटित॰ } गु॰ प्रकट, प्रसिद्ध।

प्रकम्पन॰ ना॰ पु॰ आंधी, झकड़।

प्रकर॰ ना॰ पु॰ समूह, गिरोह।

प्रकरण॰ ना॰ पु॰ एक विषय का प्रस्ताव, पाठ में विश्राम स्थान, अध्याय, समूह।

प्रकाम॰ ना॰ पु॰ सिद्धि विशेष।

प्रकार॰ ना॰ पु॰ रीति, तरह, विशेषण, भेद, सादृश्य, डौल।

प्रकारान्तर॰ गु॰ दूसरे प्रकार, दूसरा प्रकार।

प्रकाश॰ ना॰ पु॰ ज्योति, उजाला, रोशनी, गु॰ प्रकट।

प्रकाशक॰ ना॰ पु॰ प्रकाशकर्त्ता।

प्रकाशवान्॰ गु॰ प्रकाशयुत, प्रकाशित, रोशन।

प्रकाशित॰ गु॰ प्रकाश कियागया, रोशन।

प्रकाश्य॰ गु॰ प्रकाश के योग्य।

प्रकीर्ण॰ ना॰ पु॰ चौरी, अध्याय, गु॰ प्रकट, व्याप्त।

प्रकीर्त्तन॰ ना॰ पु॰ कथन, भाषण।

प्रकीर्त्तित॰ गु॰ कथित, भाषित।

प्रकृत॰ ना॰ स्त्री॰ स्वभाव, गुण, गु॰ जो बनाया गया।

प्रकृतार्थ॰ ना॰ पु॰ प्रकृतका जो अर्थ।

प्रकृति॰ ना॰ स्त्री॰ स्वभाव, मूल, माया, संसार।

प्रकृष्ट॰ गु॰ उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य, अच्छा।

प्रक्रम॰ ना॰ पु॰ चलन, गमन, अवकाश।

प्रक्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकरण का ग्रन्थ विशेष, साधनिका।

प्रखर॰ ना॰ पु॰ पाखर गु॰ तीक्ष्ण।

प्रख्यात॰ गु॰ प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आनन्दित।

प्रगट॰ गु॰ व्यक्त, साक्षात्, प्रत्यक्ष, प्रकाश, प्रसिद्ध।

प्रगटना॰ अ॰ क्रि॰ प्रकटहोना।

प्रगल्भ॰ गु॰ शास्त्र से विजयी, अभय, योद्धा, प्रतिष्ठावान्, सामर्थी।

प्रगाढ़॰ ना॰ पु॰ पीड़ा, तपस्या, गु॰ बहुत गाढ़ा, कठिन।

प्रग्रह॰ ना॰ पु॰ किरवाली।

प्रघट॰ गु॰ प्रगट।

प्रघटी॰ ना॰ स्त्री॰ सुवर्ण वा रौप्यके लिये सांचा।

प्रचण्ड॰ गु॰ बलवान्, तेज, अनसहा, भयङ्कर, क्रोधी।

प्रचलित॰ गु॰ जो चलता है, जारी।

प्रचार॰ ना॰ पु॰ विस्तार, फैलाव, चलन, प्रकाश, जारी होना, प्रकटता।

प्रचारक॰ गु॰ प्रचार करनेहारा।

प्रचारना॰ स॰ क्रि॰ चलाना, बाढ़ देना, उमहाना।

प्रचारित॰ गु॰ विस्तारित, चालित और प्रकाशित।

प्रचुर॰ गु॰ बहुत।

प्रचेता॰ ना॰ पु॰ वरुणदेवता।

प्रचोदित॰ गु॰ प्रेरित, जो आज्ञा कियागया।

प्रच्छन्न॰ ना॰ पु॰ चोर, खिड़की, गु॰ गुप्त, आच्छादित।

प्रजरण॰ ना॰ पु॰ ज्वलन, जलन।

प्रजरना॰ अ॰ क्रि॰ जलना, बरना।

प्रजरित॰ गु॰ ज्वलित, जलताभया।

प्रजा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्तान, सेवक, राज्यके वासी रैयत।

प्रजाता॰ ना॰ स्त्री॰ जननी, जच्चा।

प्रजापति॰ ना॰ पु॰ राजा, ब्रह्मा, दक्ष, कुम्हार,

प्रजारक॰ गु॰ जलानेहारा।

प्रजारण॰ ना॰ पु॰ जलावन, दहकावट।

प्रजारना० स० क्रि० जलाना, दहकाना।
प्रजाशन० गु० प्रजाभक्षक।
प्रजेश० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, कुम्हार।
प्रज्वलता० ना० स्त्री० ज्योति, उज्ज्वलता और जलाव।
प्रज्वलित० गु० ज्योतिष्मान्, उज्ज्वल, जला।
प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दावा।
प्रणऊं० क्रि० प्रणाम करों।
प्रणत० गु० अतिदीन, अतिनय, शरणागत।
प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम।
प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, मुक्ति, भरोसा, अपनापन।
प्रणव० ना० पु० अक्षर, मन्त्रराज, आद्याक्षर।
प्रणवा० क्रि० प्रणाम करो।
प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम।
प्रणावली० ना० स्त्री० नाली।
प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग।
प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम।
प्रणी० गु० प्रण करनेहारा, मनचला।
प्रतन० गु० पुराना, प्रत्न।
प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य्य, तेज, पुरमान।
प्रतापवान० } गु० तेजवान्, तेजस्वी, तेज
प्रतापी० } धारी।
प्रतारक० ना० पु० ठग, चंचल, वंचक।
प्रतारण० }
प्रतारणा० } ना० गु० वंचन, ठगाई।
प्रतारित० गु० ठगाया, बंचित।
प्रति० ना० स्त्री० नक़ल, अव्य० यह शब्द जिस शब्द के आदि में होता है, उसका अर्थ कभी फेर कभी सन्ते कभी एक एक।
प्रतिउपकार० ना० पु० प्रत्युपकार, प्रतीकार।
प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलटा।
प्रतिकूल० गु० विरुद्ध, उलटा, प्रतिबन्धक।
प्रतिग्रह० ना० पु० दान, जो ब्राह्मण के लायक हो वा ऐसा दान लेना, ग्रहपीछे।
प्रतिघात० ना० पु० मारण, वध।

प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, सदृश, मूर्त्ति।
प्रतिछाइ० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, फेरदेना।
प्रतिदिन० अव्य० दिन दिन।
प्रतिधा० अव्य० बार बार, हरबार, हरदफा।
प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदृश, तदनुरूप प्रतिभू, पेशकार।
प्रतिपत्० ना० स्त्री० परेवा, पक्षकी प्रथमतिथि।
प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० यश, ज्ञान।
प्रतिपद्० ना० स्त्री० प्रतिपत्, परेवा।
प्रतिनिका० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
प्रतिपन्न० गु० जानागया, निश्चित।
प्रतिपक्ष० ना० पु० } शत्रु, वैरी।
प्रतिपक्षी० स्त्री० }
प्रतिपादन० ना० पु० दान, बुझावना।
प्रतिपादित० गु० जिसका प्रतिपादन होगया।
प्रतिपाद्य० गु० बोध्य, वर्णन के योग्य।
प्रतिपाल० ना० पु० पालन, पोषण।
प्रतिपालक० ना० पु० पालन करनेहारा।
प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण।
प्रतिपालना० स० क्रि० पालन करना, पोषणा।
प्रतिप्रसव० ना० पु० जो बात और बात से सिद्ध हो।
प्रतिफल० ना० पु० संपूर्ण फल, इनआम।
प्रतिबन्ध० ना० पु० काम का विनाशक।
प्रतिबन्धक० ना० पु० बाधक, रोकनेहारा, अटकानेहारा।
प्रतिभट० ना० पु० समान योद्धा, तुल्यकावीर।
प्रतिभा० ना० स्त्री० बुद्धि, ज्योति, समझ।
प्रतिभाग० ना० पु० अंश, अंशपर, हरहिस्सह।
प्रतिभू० ना० पु० मनौती, जामिन, दरमियानी।
प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्त्ति, तसवीर, पुतला।
प्रतिमास० ना० पु० महीने २ मास २, हरमाह।
प्रतिमूर० ना० पु० परछाईं, छाया, प्रतिबिंब।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य द्वितीय।

प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर।

प्रतियोगी० गु० शत्रु, वैरी, विरोधी।

प्रतिरूप० ना० पु० सदृश, चित्र, मूर्त्ति।

प्रतिरोध० ना० पु० अटकावर, रोक।

प्रतिरोधक० ना० पु० चोर, रोकनेवाला।

प्रतिलोम० गु० बायां, औंधा, उलटा, दुष्ट, नीच।

प्रतिवचन० ना० पु० उत्तरपीछे वचन,वचनपर।

प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल।

प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, गु० जो उत्तर देने के योग्य है।

प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, झगड़ा, विरोध।

प्रतिवादी० ना० पु० विवादी विरोधी, प्रत्यर्थी।

प्रतिवास० ना० पु० पड़ोस।

प्रतिवासी० ना० पु० पड़ोसी।

प्रतिबिम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि देखने में रूप देख पड़ता है, अक्स, प्रतिरूप।

प्रतिशब्द० ना० पु० शब्द पीछे, शब्द के साथही शब्द।

प्रतिशब्दक० ना० पु० झांई शब्द, जो शब्द के साथही कूपादि से शब्द सुनाई देता है।

प्रतिषिद्ध० ना० पु० निषिद्ध, वर्जित।

प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई।

प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्त्ति स्थापन, सुख्याति, कीर्त्ति, आबरू, बड़ाई।

प्रतिष्ठित० गु० स्थापित, कीर्त्तिमान्, यशी, सुख्यातियुत, इज्जतदार।

प्रतिहत० गु० जो निराशभया, रोकागया, भ्रष्ट, नष्ट।

प्रतिहार० ना० पु० डयोढ़ीवान, चोबदार।

प्रतिहिंसक० गु० घातक का घाती, कीनावर।

प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, अवधि, अवश्य करने का स्वीकार।

प्रतीक० ना० पु० अवयव, अंग।

प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला।

प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पछांह।

प्रतीत० गु० प्रतिष्ठित, प्रकट।

प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, श्रद्धा, भरोसा, समझ।

प्रतीक्षा० ना० स्त्री० और का मार्ग देखना, प्रत्याशा।

प्रतोली० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।

प्रतोष० ना० पु० सन्तोष, धीरज, सबर।

प्रत्न० गु० पुराना।

प्रत्यक० ना० पु० ऊंगा।

प्रत्यय० ना० पु० विश्वास, समझ, चिह्न, निशान।

प्रत्यवाय० ना० पु० वियोग।

प्रत्यह० अव्य० प्रतिदिन, हररोज।

प्रत्यक्ष० गु० प्रसिद्ध, साक्षात्, दृष्टि गोचर, देखने के योग्य, अव्य० आगे।

प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद।

प्रत्याहार० ना० पु० स्वल्प भोजन।

प्रत्युत्तर० ना० पु० उत्तर का उत्तर, जवाब।

प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके जो सन्मान।

प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पलटे उपकार, पलटादेना, इनाम।

प्रत्येक० गु० एका एक, एक, एक, हरएक।

प्रथम० गु० पहला, आदि, अव्वल, मुख्य।

प्रथमा० ना० स्त्री० पहली।

प्रथमान्त० गु० जो नाम वा सर्व नाम प्रथम विभक्ति में हो।

प्रथा० ना० स्त्री० सुख्याति, यश, कीर्त्ति।

प्रथित० गु० यशवन्त, प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान्।

प्रद० गु० दाताका चिह्न शब्दांत में, दाता।

प्रदक्षिण० } ना० स्त्री० पूज्यको दाहिनेकरउस
प्रदक्षिणा० } के चारोंओर फिरकर निजासन पर आना, फिरना।

प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड, देश, स्थान, परदेश, छोटी बितस्ति।

प्रदोष० ना० पु० सूर्यास्त से दोदण्ड, शिवव्रत विशेष, दोष।

प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि।

प्रद्युम्न० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीकापुत्र, कामदेव।

प्रद्योतन० ना० पु० सूर्य।

प्रधान० ना० पु० मुख्यमंत्री, श्रेष्ठ, गु० पहला।

प्रधानता० ना० स्त्री० मुख्यता, श्रेष्ठता, बजारत।

प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर।

प्रनाम० ना० पु० प्रणाम।

प्रनाशी० गु० नाशनेवाला, मिटानेवाला।

प्रपंच० ना० पु० छल, विरोध, ढेर, धोखा, चूक, संसार, बातों का विस्तार।

प्रपंचित० गु० जो विस्तारयुत वर्णनहुआ, जो छला गया।

प्रपंची० ना० पु० प्रपंचकर्त्ता घाती, छली।

प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता, परदादा।

प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता, परदादी।

प्रपुन्नाड० ना० पु० पवांर पौधा।

प्रपौत्र० ना० पु० पौत्रका पुत्र, परपोता।

प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौत्रकी पुत्री, परपोती।

प्रफुला० ना० पु० फफूल बेलि।

प्रफुल्ल० गु० विकसित, फूला, खश।

प्रफुल्लित० गु० विकसित, फूलाभया, आनन्द, मग्न, खुश।

प्रबन्ध० ना० पु० क्रम से वाक्य की बनावट, रचना विशेष, कथा, वृत्तान्त, बन्दोबस्त।

प्रबन्धाधीन० गु० प्रबन्धके आधीन।

प्रबल० गु० बलवान्, पहलवान।

प्रबलता० ना० स्त्री० बलात्कारी, बरबस।

प्रबोध० ना० पु० ज्ञान उपदेश, सुर्त्त, उजगता, तसल्ली, सबर।

प्रबोधक० गु० प्रबोध करने हारा।

प्रभद्र० ना० पु० नींब वृक्ष।

प्रभंजन० ना० पु० पवन, गु० विनाशन।

प्रभव० ना० पु० उत्पत्ति, उत्पन्न, उत्पत्तिकारी।

प्रभा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, दीप्ति, चमक।

प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।

प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल।

प्रभात० ना० पु० प्रातःकाल, भोर, तड़का।

प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

प्रभावती० ना० स्त्री० पातालगंगा।

प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष।

प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, (प्रभिन्नोगर्जितोमत्तः इत्यमरः)।

प्रभु० ना० पु० नाथ, स्वामी, राजा, ईश्वर, प्रतिपालक, गुरु।

प्रभुता० ना० स्त्री०
प्रभुताई० ना० स्त्री०
प्रभुत्व० ना० पु०
} राज्यादि अधिकार, धनाढ्यता, स्वामित्व, ईश्वरता।

प्रभुतालय० ना० पु० नीतिगृह, कचहरी, अदालत।

प्रभृति० अव्य० इत्यादि।

प्रमदा० ना० स्त्री० सुलक्षणा स्त्री।

प्रमद्री० ना० स्त्री० कलिहारी।

प्रमथा०
प्रमथ्या०
} ना० स्त्री० हड़, शिवा।

प्रमथान०
प्रमथाधि०
प्रमथाधिप०
} ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा (मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः इत्यमरः)।

प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव।

प्रमाण० ना० पु० निश्चय का कारण, साक्षी, अवधि, प्रत्यक्ष, निश्चय, सच्चा, ग्राह्य।

प्रमाणिक० गु० योग्य, निश्चयकारक, ग्राह्य रूप प्रमाण के योग्य।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता, परनाना।

प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामहकी माता, परनानी।

प्रमाद० ना० पु० भूल, चूक, गफलत, आनाकानी।

प्रमादी० गु० अचेत, अशौच, भुक्कड़।

प्रमीलिका० } ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी।
प्रमीला०

प्रमुख० ना० पु० निशाचर विशेष, प्रधान।

प्रमुदित० गु० हर्षित, आनन्दित।

प्रमेह० ना० पु० वीर्य्यका रोग, क्षीणरोग।

प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द।

प्रमोदित० गु० हर्षित, आनन्दित, खुश।

प्रयन्त० अव्य० पर्य्यन्त।

प्रयाग० ना० पु० तीर्थराज, इलाहाबाद।

प्रयाण० ना० पु० यात्रा, गमन।

प्रयान्ति० क्रि० पाता है।

प्रयुक्त० गु० मिला हुआ, भराहुआ।

प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय, तदवीर, प्रयोजन।

प्रयोगी० गु० उपायी, चलानेवाला।

प्रयोजक० ना० पु० प्रेरक, उठाने हारा।

प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य्य, गरज, मतलब।

प्रयोजनी० गु० अवश्य, मतलबी, गरजी।

प्रयोज्य० गु० मुख्य, ना० पु० सेवक, चेला।

प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बासुर, लम्बा।

प्रलम्बघ्न० ना० पु० बलदेव जी।

प्रलय० ना० पु० कल्पान्त, सर्वनाश, तूफान।

प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय।

प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का वाक्य, निरर्थवाक्य।

प्रलेप० ना० पु० औषधि आदिका लेपन।

प्रवञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगी, चोरी।

प्रवर० ना० पु० सन्तान, वंश, गोत्र, गु० बलवान्, श्रेष्ठ, बहादुर।

प्रवर्त्तक० ना० पु० प्रेरक, उतारनेहारा।

प्रवर्षण० ना० पु० पर्वतविशेष।

प्रवाल० ना० पु० मूंगा।

प्रवास० ना० पु० विदेश, देशावर, परदेश।

प्रवासा० ना० स्त्री० मधुशर्करा।

प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी।

प्रवाह० ना० पु० नदीकी धारा, बहाव, मुख्य पवन।

प्रविष्ट० गु० जो प्रवेश हुआ, घुसा, पैठा।

प्रवीण० गु० निपुण, सुचतुर, स्याना।

प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्यानपन।

प्रवृत्तकर्त्ता० गु० विश्वासी, मञ्जूर, नजर।

प्रवृत्ति० ना० स्त्री० काज, समाचार, धारा, इच्छा, किसी काम में लगना वा लगाना यत्न।

प्रवेक० गु० प्रधान, सरदार।

प्रवेणी० ना० स्त्री० वेणी, केशपाश।

प्रवेश० ना० पु० पैठ, पहुंच, घुसाव।

प्रशक्त० गु० लीन, लगाहुआ, थकित।

प्रशंसक० गु० स्तुतिकर्त्ता, बड़ाई करनेहारा।

प्रशंसनीय० गु० प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसा० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई।

प्रशमन० ना० पु० वध।

प्रशस्त० गु० आनन्दी, योग्य, भला।

प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, योग्य, अच्छी।

प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल पूछना।

प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल जवाब।

प्रषद० ना० पु० मृग, हरिण।

प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा।

प्रसक्त० अव्य० सादा, गु० सनातन, प्राप्त।

प्रसंग॰ ना॰ पु॰ प्रस्ताव, मेल, संगम, संयोग, सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रव, वंस्ल।

प्रसन्न॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश।

प्रसन्नता॰ ना॰ स्त्री॰ प्रसाद, हर्ष, आनन्द, कृपा।

प्रसन्नित॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित, दयालु,राज़ी।

प्रसमित॰ गु॰ रहित, हीन, बिहून, बिन।

प्रसव॰ ना॰ पु॰ गर्भ से बालक का निकलना, जनाया, पैदायश, उत्पत्ति।

प्रसवत॰ क्रि॰ उपजते, जन्मते।

प्रसव्य॰ गु॰ बायां, प्रतिकूल उपजने के योग्य।

प्रसाद॰ ना॰ पु॰ देवताओंकी वा गुरुकीजूठन, कृपा, दान, भोजन।

प्रसादी॰ ना॰ स्त्री॰ जो कुछ देवताओं को चढ़ायागया, भोजन, खाना।

प्रसारण॰ ना॰ पु॰ फैलाव, पसराव, गन्धपसा-रण, पौधा।

प्रसादक॰ ना॰ पु॰ भाजी, बथुआ का साग।

प्रसारित॰ गु॰ विस्तारित, जो फैलायागया।

प्रसिद्ध॰ गु॰ प्रकाशित, विख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धता॰ ना॰ स्त्री॰ प्रकटता, सुख्याति,ज़हूर।

प्रसीद॰ क्रि॰ दयालुहो, कृपाकरो।

प्रसूत॰ ना॰ पु॰ जात, जन्मा, प्रसूति।

प्रसूति॰ ना॰ स्त्री॰ रोग विशेष, पानीबहने का रोग विशेष।

प्रसूतिका॰ }
प्रसूती॰ } गु॰ स्त्री॰ जननी जच्चा, माता।

प्रसून॰ ना॰ पु॰ पुष्प, फूल, फल।

प्रसौती॰ ना॰ स्त्री॰ प्रसूती।

प्रस्तर॰ ना॰ पु॰ पत्थर, पाषाण।

प्रस्तरमय॰ गु॰ पाषाणमय, पथरीला।

प्रस्ताव॰ ना॰ पु॰ अवसर, चर्चा।

प्रस्ताविक॰ गु॰ समयपर, सामयिक।

प्रस्तुत॰ गु॰ कथित, सिद्ध, स्तुत किया गया।

प्रस्थ॰ ना॰ पु॰ परिमाण विशेष।

प्रस्थर॰ ना॰ पु॰ पत्थर।

प्रस्थान॰ ना॰ पु॰ गमन, बिदा, धावा करने हारेका गमन, पावतुराव, नकल मकान।

प्रस्थापित॰ गु॰ प्रेरित, भेजा गया।

प्रस्थित॰ ना॰ स्त्री॰ कीर्ति, नेकनामी।

प्रस्फुटित॰ गु॰ बिकसित।

प्रहर॰ ना॰ पु॰ पहर, याम, दिन वा रात का चौथा भाग।

प्रहरण॰ ना॰ पु॰ अस्त्र, मारण।

प्रहस्त॰ ना॰ पु॰ राक्षस विशेष।

प्रहार॰ ना॰ पु॰ चोट, ठोकर, मार।

प्रहारित॰ गु॰ मारागया वा माराहुआ।

प्रहारी॰ गु॰ मारनेहारा।

प्रह्वन॰ ना॰ पु॰ विनय, प्रणाम।

प्रहेलिका॰ ना॰ स्त्री॰ पहेली, दृष्टिकूट।

प्रहृष्ट॰ गु॰ सन्तुष्ट।

प्रह्लाद॰ ना॰ पु॰ भक्त विशेष।

प्रह्लादिनी॰ ना॰ स्त्री॰ हंसपादी बूटी।

प्रक्षालन॰ ना॰ पु॰ धोलाई।

प्रक्षालित॰ गु॰ जो धोयागया।

प्रज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती, निर्मल बुद्धि।

प्रज्ञात्मा॰ गु॰ आत्मज्ञाता, आत्मध्यानी।

प्राक्॰ अव्य॰ आगे, पहले, पूर्व।

प्राकार॰ ना॰ पु॰ गढ़।

प्राकृतकवि॰ ना॰ पु॰ सूरदासादि।

प्राकृतभाषा॰ ना॰ स्त्री॰ संस्कृतभाषाविशेष।

प्राक्तन॰ गु॰ पुराना।

प्रागल्भ्य॰ ना॰ पु॰ प्रगल्भता, ढिठाई, घमंड।

प्राची॰ ना॰ स्त्री॰ पूर्व दिशा।

प्राचीन॰ गु॰ पुराना, अगला।

प्राचीना॰ ना॰ पु॰ पानी, आंवला।

प्राड्विवाक॰ ना॰ पु॰ राजा की आज्ञासे वि-चार करने के लिये स्थापितपुरुष, न्यायक।

प्राण॰ ना॰ पु॰ श्वासवायु, जीव, प्रियतमे।

प्राणदा॰ ना॰ स्त्री॰ जीव दाता।

प्राणप्रतिष्ठा॰ ना॰ पु॰ मंत्र से देवता में जीव धारण करना।

प्राणदण्ड० ना० पु० वध,फांसीआदिकी सज़ा ।
प्राणान्त० ना० पु० प्राणकानाश, मृत्यु, मौत ।
प्राणायाम० ना० पु० श्वासको रोकना वा प्राण को ऊर्ध्व खींचना ।
प्राणी० गु० जीवधारी, जन्तु ।
प्रातः० } ना० पु० प्रभात, तड़का, सबेरा,
प्रातःकाल० } बिहान ।
प्रातःक्रिया० ना० स्त्री० सबेरेकी क्रिया ।
प्रादुर्भाव० ना० पु० आविर्भाव, महिमा ।
प्राधान्य० ना० पु० श्रेष्ठता, मुख्यता, उत्तमता ।
प्रान्त० ना० पु० कगर, शेषभाग, देशकाभाग ।
प्रान्तर० ना० पु० दूरदेशका मार्ग, अपथ ।
प्रापक० ना० पु० जो पहुंचावे वा पावे ।
प्राप्त० गु० जो मिला, लब्ध ।
प्राप्ति० ना० स्त्री० लाभ, उपार्जन, गोड़ी, फ़ायदह, नाम सिद्धि विशेषका ।
प्राविट्० } ना० पु० वर्षाकाल, बरसात ।
प्रावृट्० }
प्रावृष० ना० पु० कदम वृक्ष ।
प्रामाणिक० ना० पु० अतिमान्यलोग, प्रधान ।
प्रायः० अव्य० कभी कभी, बहुधा, अक्सर ।
प्रायद्वीप० ना० पु० जो प्रायःजल से घिराहो, और एक ओर थलसे मिलाहो, जज़ीरानुमा ।
प्रायश्चित्त० ना० पु० पापमात्र का नाशक कर्म, पाप दोष ।
प्रारब्ध० ना० स्त्री० भाग लिखा, नसीब ।
प्रारम्भ० ना० पु० आरम्भ, शुरूअ ।
प्रार्थना० ना० स्त्री० बिनती, चहत, अर्ज़ ।
प्रार्थित० गु० वाञ्छित, यांचाहुआ ।
प्रावृत० ना० पु० घूंघट घोंघी गु० ढका, छुपा ।
प्रासाद० ना० पु० मन्दिर, राजभवन, सदन ।
प्रांशु० गु० बड़ा, मोटा ।
प्राह्ण० ना० पु० प्रातस्सन्ध्या ।
प्राज्ञ० गु० पण्डित, चतुर, बुद्धिमान् ।
प्रिय० गु० प्यारा ।
प्रियक० ना० पु० कदमवृक्ष, अनार ।
प्रियंगु० ना० पु० औषधि विशेष ।
प्रियतम० गु० अतिप्यारा, ना० पु० प्रिय, प्रेमीपति, मित्र ।
प्रियतमा० ना० स्त्री० अति प्यारी ।
प्रियवादिनी० ना० स्त्री० अच्छा कहनेहारी ।
प्रिया० ना० स्त्री० प्यारी स्त्री, चहीती, आंख लगनी ।
प्रियाल० ना० पु० चिरौंजी ।
प्रीति० ना० स्त्री० प्रेम, प्यार, मोह, दोस्ती और व्यवहार, चन्द्रमा की कला विशेष ।
प्रेत० ना० पु० पिशाच, भूत, निशाचर, दैत्य, मरा ।
प्रेतनदी० ना० स्त्री० वैतरणी, नरककीनदी ।
प्रेतनी० ना० स्त्री० प्रेतस्त्री, चुड़ैल, प्रेत की स्त्री ।
प्रेतराज० ना० पु० यमराज, अन्तक ।
प्रेतनिवास० ना० पु० श्मशान, मरघट ।
प्रेम० ना० पु० स्नेह प्यार, लाड़, प्रीति ।
प्रेमी० गु० प्रेमकर्त्ता, स्नेही, छोही, प्रियतम ।
प्रेयस० गु० मित्र, यार, दोस्त, उपपति, जार ।
प्रेयसी० गु० स्त्री० प्यारी, परकिया ।
प्रेरक० ना० पु० भेजनेहारा, हाकिम, करानेहारा, चलानेवाला ।
प्रेरण० ना० पु० } नियोग, भेजना, चलाना,
प्रेरणा० ना० स्त्री० } सुझाना, ताकीद ।
प्रेरणार्थ० गु० जिसमें प्रेरण का ज्ञानहो ।
प्रेरणार्थक० गु० आज्ञाकारक ।
प्रेरित० गु० जो दूतादि भेजा गया ।
प्रेषक० गु० यथोचित दूत भेजनेहारा ।
प्रेषित० गु० प्रेरित ।
प्रेष्ठ० गु० प्रियतम ।
प्रेष्य० ना० पु० दूत, सेवक ।
प्रेक्षण० ना० पु० चक्षु, नेत्र, दृष्टि ।
प्रोक्त० गु० कथित, कहाभया ।
प्रोत्साह० ना० पु० बड़ा उछाह, अत्युयोग ।

प्रोदिका० ना० स्त्री० पोय बेलि।

प्रोषित० गु० जो उकसागया, विदेशी।

प्रोषितपतिका० } ना० स्त्री० जिसका पति
प्रोषितभर्तृका० } विदेशको गया हो।

प्रोष्ठी० ना० स्त्री० सफरी, मछली।

प्रोहित० ना० पु० पुरोहित।

प्रोक्षण० ना० पु० यज्ञमें बलिदान करना, छिड़कावा, वध।

प्रोक्षित० गु० जो छिड़कागया, वधकियागया।

प्रौढ़० गु० जो बाढ़चुका, स्याना, सभ्य, चालांक विद्वानों की सभाका।

प्रौढ़ता० ना० स्त्री० प्रौढ़ाई, स्यानपन, चतुराई।

प्रौढ़ा० ना० स्त्री० स्त्री तीसवर्ष से पचपन वर्ष तक।

प्रौढ़ि० ना० स्त्री जोखिम, ध्वनि, अभिमान से बात कहना।

प्लवंग० } ना० पु० वानर, बन्दर।
प्लावी० }

प्लीह० ना० स्त्री० पिलई, तिल्ली।

प्लीहारी० ना० पु० सरफोंका।

प्लुत० ना० पु० त्रिमात्रिकक्षर, स्वर विशेष, रागका ग्राम विशेष।

प्लुति० ना० स्त्री० कूदना, फांदना।

[फ]

फंदना० अ० क्रि० फसना, कूदना।

फंदलाना० स० क्रि० फुसलाना।

फंदा० ना० पु० फसड़ी, फांसी, जंजाल।

फंसाव० ना० पु० उलझाव, अटकाव।

फंसियारा० ना० पु० बटपार जो पथिकों को फांसी देकर मारडालता है।

फकड़ी० ना० स्त्री० अनादर करने का नाम।

फक्कड़० ना० पु० झगड़ा, गालीगलौज, ठठोली।

फक्का० ना० पु० पंगा।

फक्किका० ना० स्त्री० फांकी।

फकिया० ना० स्त्री० फांक।

फक्की० ना० स्त्री० फांकी।

फगुनहटे० गु० फागुनके पास, फागुनके दिनों।

फगुवा० ना० पु० होली के दिन, अथवा जो स्त्री फागुनमें नेग लेती हैं।

फंका० ना० पु० } चूर्ण इत्यादि को हाथ में
फंकी० ना० स्त्री० } रखकर मुखमें डालना।

फटक० ना० पु० स्फटिक।

फटकना० स० क्रि० पछोड़ना, झाड़ना, अ० क्रि० तड़फड़ाना।

फटकरी० ना० स्त्री० फिटकरी।

फटकी० ना० स्त्री० चिड़ीमार का जाल, बड़ा पिंजरा, पक्षियों के डराने के लिये फटा बांस आदि जो रस्सी में बांधकर वृक्षादि पर लटकाते हैं।

फटना० अ० क्रि० टूटना, चिरना, फूटना।

फटपड़ना० अ० क्रि० बहुतसा उपजना, एकाएक मोटा होजाना, कामकी अधिकता में व्याकुल होना, फाट के गिरना।

फटफटाना० स० क्रि० पंखझाड़केउड़ना, कान बजाना कुत्ता आदिका, अ० क्रि० तड़पना, व्याकुल होना।

फटा० गु० चिराहुआ।

फटाक० अव्य० उसी समय, तुरन्तही।

फटाका० ना० पु० बन्दूकादि का शब्द।

फटाना० अ० क्रि० संगसे अलग चलना।

फटाव ना० पु० चिराव, जुदागी, अलगहोना।

फटिक० ना० पु० स्फटिक।

फड़० ना० पु० द्यूतस्थान, पल्ला।

फड़कना० अ० क्रि० उछलना, फड़फड़ाना, मांसआदि का उछलना, टीसना।

फड़फड़ाना० अ० क्रि० फड़कना।

फड़फड़िया० ना० पु० फड़कनेहारा।

फड़ाना० स० क्रि० चिराना, फटाना।

फण० ना० पु० सांप, वा सांपका पसरा हुआ माथा।

फणधर० ना० पु० सांप।

फणपति० ना० पु० शेषजी सर्पोंका राजा।
फणा० ना० पु० फण।
फणि० ना० पु० सांप वा उसकी मणि।
फणिक० ना० पु० सांप।
फणिज्जक० ना० पु० मरुआ, सुगन्धितपौधा।
फणी० ना० पु० फणि, सांप।
फणीन्द्र०
फणीश० } ना० पु० सांपोंका राजा, शेषजी।
फड़कना० अ० क्रि० दालआदिका चुरना।
फदफदाना० अ० क्रि० बलबलाना, छोटे २ दाने पड़ना।
फन० ना० पु० फण।
फनगा० ना० पु० टिड्डा, आंखफोड़ा।
फनफनाना० अ० क्रि० फण खोलना, फुसकारना।
फन्दा० ना० पु० फांसी, पेंच, उलझाव।
फफला० ना० पु० फूलाहुआ।
फफूंदी० ना० स्त्री० गीलापन के कारण से जो सफेदी अचार आदि में लगजाती है, सड़ता।
फफोला० ना० पु० फुलका, छाला।
फब० ना० स्त्री० शोभा।
फबकना० अ० क्रि० पनपनां, डाल निकलना।
फबता० ना० पु० योग्य, ठीक, छजता।
फबती० ना० स्त्री० शोभा, किसी को वस्त्र पहिने देखकर कहना यह किस जातिका है।
फबन० ना० स्त्री० शोभा, छाजन।
फबना० अ० क्रि० सोहना, छाजना, सजना।
फबीला० गु० शोभित, सजीला, शोभायमान।
फर० ना० पु० फल, तीरकीगांसी, पछा।
फरकना० अ० क्रि० फड़कना।
फरचा० ना० पु० मेघोंका फट जाना, फैसला।
फरचाना० स० क्रि० न्यायकरना, आज्ञा देना।
फरछा० गु० निर्मल, स्वच्छ, खरा।
फरछाना० स० क्रि० स्वच्छ वा निर्मल कराना, खराना।
फरफन्द० ना० पु० छल, कपट, धोखा।
फरफन्दिया० गु० छली, धूर्त्त, ठग, कपटी।
फरस० ना० पु० फरसा।
फरसा० ना० पु० फावड़ा, कुल्हाड़ा, तबर, अस्त्र विशेष।
फरहरा० ना० पु०
फरहरी० ना० स्त्री० } ध्वजा, पताका, गु० अधसूखा।
फरहा० ना० पु० खोखला, फफला, निर्बीज।
फरिया० ना० स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष, लड़कियों के पहरनेका वस्त्र विशेष।
फरी० ना० स्त्री० ढाल, डाली फल समेत।
फरांटा० ना० पु० बांसका टुकड़ा, ध्वजाके हिलने वा घोड़े की श्वासका जो शब्द होता है।
फरांना० अ० क्रि० हिलना वा उड़ना।
फल० ना० पु० वृक्षादिका सस्य, पलटा मोती, कर्मोंका भोग, सन्तान, बाण के आगेका लोहा खड्गादि।
फलकना० अ० क्रि० फड़कना।
फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
फलजनक० ना० पु० जोफलजन्मावे।
फलताड़० ना० पु० ताड़का फल।
फलद० ना० पु० वृक्ष गु० फलका दाता।
फलदाता०
फलदानि० } गु० फल देने हारा।
फलना० अ० क्रि० फललाना, भाग्यवान्होना।
फलमूल० ना० पु० फूल की दण्डी।
फलराज० ना० पु० खरबूजह, दशांगुल।
फलवर्तुल० ना० पु० तरबूज, हिंदुवाना।
फलवान्० गु० जो फल युक्त हो।
फला० ना० पु० संयुक्ताक्षर, समस्तस्वर, गु० फलित।
फलांग० ना० स्त्री० कूदन, लंघन, डेग, जस्त।
फलाशिन० ना० पु० खिरनी।
फलाश० ना० स्त्री० फलांग।
फलित० गु० फलाहुआ, फलों समेत।

फलितार्थ० ना० पु० तात्पर्यार्थ, ठीक अर्थ।
फलिनी० ना० पु० प्रियंगु।
फलिया० ना० स्त्री० छीमी, तुकमा।
फली० ना० स्त्री० छीमी, तुकमा, ना० पु० वृक्ष, गु० स्त्री० फलित।
फलीश० ना० पु० पारसपीपल।
फलोदय० ना० पु० फलोत्पत्ति, प्राप्तकाम, स्वर्ग आनन्द।
फलोपम० ना० पु० सफेद बैंगन, श्वेतभांटा।
फसकड़० ना० स्त्री० बैठक विशेष।
फसकना० अ० क्रि० फटना, फूटना।
फसकाना० स० क्रि० फाड़ना, तोड़ना, फोड़ना।
फसकाऊ० ना० पु० फाड़ू, तोड़ू, फोड़ू।
फसना० अ० क्रि० बझना, उलझना, जाल में पड़ना, बन्दीशाला में पड़ना, रुकना, फंदे में आना, क़ाबू में आना।
फसफसा० गु० पिलपिला, अलगा।
फसफसाना० अ० क्रि० पिलपिलाना, डरना।
फसवाना० स० क्रि० उलझाना, अटकवाना, रुकवाना, बन्दी करवाना।
फसाना० स० क्रि० बझाना, उलझाना, रुकाना, अटकाना, जाल में डालना, और बन्दीशाला में रखवाना।
फहरना० अ० क्रि० फर्राना।
फहराना० अ० क्रि० फर्राना, उछलना, कूदना।
फांक० ना० स्त्री० फलका टुकड़ा।
फांकना० स० क्रि० फंका मारना।
फांकी० ना० स्त्री० फांक, फक्किका, पूर्वपक्ष।
फाटना० स० क्रि० बांटना, विभाग करना।
फांट० ना० पु० चौड़ाव, हिस्सह, विभाग।
फांद० ना० पु० फंद, फंदा।
फांदना० स० क्रि० लांघना, कूदजाना।
फांदा० ना० पु० फांद, गुंझा।
फांदी० ना० स्त्री० गन्नों का एक बोझ।

फांफड़० ना० पु० छेद, सुंड़।
फांस० ना० स्त्री० सूक्ष्म कांटा।
फांसना० स० क्रि० बांधना, रोकना, बन्दकरना, जाल में लाना।
फांसा० ना० पु० डोर का उबका।
फांसी० ना० स्त्री० फन्दी, फसड़ी, फन्द, कंठरुंधन।
फाग० ना० पु० गुलाल वा उसका डालना वा उड़ाना, होली का समय।
फागुन० ना० पु० फाल्गुन।
फाटक० ना० पु० बड़ा द्वार, अटकाव।
फाटना० अ० क्रि० फटना।
फाड़खाना० स० क्रि० भंभोरना, झंझोरना।
फाड़ना० स० क्रि० चीरना, फोड़ना, तोड़ना, मसकाना।
फाड़ा० गु० चीराहुआ।
फाल० ना० स्त्री० हलके आगेका लोहा, चौकड़ी, सुपारी का टूक, डग चौ।
फालसा० ना० पु० फल वा वृक्ष विशेष।
फाल्गुन० } ना० पु० फागुन मास, अर्जुन।
फागुन० }
फाल्गुनिका० ना० स्त्री० फगुई, होली।
फाव० ना० पु० घलुआ, रूखन।
फावड़ा० ना० पु० मांटी खोदने का अस्त्र, फर्सी, बड़ी और चौड़ी कुदाल।
फावड़ी० ना० स्त्री० बैरागा, बैरागी।
फावना० अ० क्रि० सोहना, शोभादेना।
फाबित० गु० शोभित।
फाबी० गु० शोभित भई, शोभा दी।
फाहा० ना० पु० मरहम से भीगाहुआ कपड़ेका छोटा टुकड़ा, तीसी।
फिकारना० स० क्रि० शिर नंगा, करना।
फिट० ना० पु० फिटकारा।
फिटकार० ना० स्त्री० धिक्कार, लानत।
फिटकरी० ना० स्त्री० फटकरी।

फिटकारना॰ स॰ क्रि॰ धिक्कार करना, कोसना, शापना।

फिटाना॰ स॰ क्रि॰ फेंटना, फिनाना।

फिर॰ अव्य॰ पुनि, पुनः, फेर।

फिरकवाहनी॰ ना॰ स्त्री॰ सेजगाड़ी।

फिरकी॰ ना॰ स्त्री॰ बंगी, भौंरा, चकई, फिराने की वस्तु जिसको लड़के फिराते हैं।

फिरजाना॰ अ॰ क्रि॰ पलटना, फिरना।

फिरत॰ ना॰ पु॰ वस्तु जो अप्रसन्नता से लौटादी।

फिरता॰ गु॰ रमता, फेरने का पैसा।

फिरतारहना॰ अ॰ क्रि॰ रमना, फेरा करना, भटकता रहना।

फिराना॰ स॰ क्रि॰ घुमाना, भटकाना, रमाना।

फिराव॰ ना॰ पु॰ घुमाव, फेर।

फिर्ना॰ अ॰ क्रि॰ घूमना, लौटना, भटकना, रमना।

फिर्नी॰ ना॰ स्त्री॰ फिरकी।

फिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ पिण्डली।

फिसफिसा॰ गु॰ डरपोक, फसफसा।

फिसफिसाना॰ अ॰ क्रि॰ भयभीत होना, डराना।

फिसलन॰ ना॰ स्त्री॰ खिसलन, बिछलना।

फिसलना॰ अ॰ क्रि॰ खिसलना, बिछलना, रपटपड़ना।

फिसलाना॰ स॰ क्रि॰ खिसलाना, बिछलाना, चूकना।

फिसलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ खिसलाहट, चिकनाहट।

फींचना॰ क्रि॰ ना॰ खँघालना, धोना।

फीका॰ गु॰ स्वाद रहित, सीठा, सांवला, बदरंग, बेमजे।

फुंकार॰ ना॰ स्त्री॰ सांपकी फनफनाहट।

फुंकारना॰ अ॰ क्रि॰ फनफनाना।

फुंहार॰ ना॰ स्त्री॰ झीसी, फूही।

फुकना॰ अ॰ क्रि॰ जलना, ना॰ पु॰ थैली।

फुकनी॰ ना॰ स्त्री॰ धौंकनी, निगाली, आग फूकने की जो बांस वा पीतलादि की होती है।

फुट॰ गु॰ अयुग्म।

फुटकर॰ गु॰ अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म।

फुटकी॰ ना॰ स्त्री॰ छींट, छिटकी, गु॰ अयुग्म।

फुड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ फुन्सी छोटा फोड़ा।

फुदकना॰ अ॰ क्रि॰ कुदकना, थोड़ा थोड़ा उछलना।

फुदकी॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षी विशेष।

फुनगी॰ ना॰ स्त्री॰ कली, कोपल, वृक्षकीचोटी।

फुनंग॰ ना॰ स्त्री॰ शिखर, चोटी।

फुनसी॰ ना॰ स्त्री॰ मुहासा, फुड़िया, पिरकी।

फुनिया॰, **फुन्नी॰**, **फुन्नो॰** } ना॰ स्त्री॰ लोलो।

फुपकार॰ ना॰ स्त्री॰ फुंकार।

फुप्फा॰ ना॰ पु॰ फूफा।

फुप्फी॰ ना॰ स्त्री॰ फूफू, फूआ।

फुफेरा॰ ना॰ पु॰, **फुफेरी॰** ना॰ स्त्री॰ } गु॰ जो फूफूसे उत्पन्न भया वा जो फूफू का सम्बन्धी होवे।

फुर॰ गु॰ सच, ठीक, सत्य।

फुरति॰ ना॰ स्त्री॰ फुर्त्ती।

फुरफुराना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, हिलना।

फुरफुरी॰ ना॰ स्त्री॰ कम्पाहट, थरथराहट।

फुर्त्त॰, **फुर्त्ती॰** } ना॰ स्त्री॰ वेगता, शीघ्रता, चालाकी चटपटी, जल्दी।

फुर्त्तीला॰ गु॰ वेगी, चालाक, चटपटिया।

फुलका॰ गु॰ फूलाहुआ, हलका, ना॰ पु॰ फफोला, पतली छोटी रोटी।

फुलकारना॰ अ॰ क्रि॰ फूलना, फण, उठाना।

फुलकारी॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़ा जिस में फूलहों।

फुलकिया॰, **फुलकी॰** } ना॰ स्त्री॰ रोटी विशेष।

फुलझड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ आतशबाजी विशेष।

फुलवाई॰ ना॰ स्त्री॰ फुलवाड़ी, रामायणे यथा, एक सखी सियसंग बिहाई, गई रहे देखन फुलवाई।

फुलवाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ फूलोंकी बाड़ी वा बाग।

फुलाना॰ स॰ क्रि॰ सुजाना, मोटाकरना।

फुलासरा॰ ना॰ पु॰ लल्लोपत्तो, फुसलाहट।

फुलेल॰ ना॰ पु॰ चंबेली का तेल।

फुलौरी॰ ना॰ स्त्री॰ पकौड़ी।

फुल्ल॰ गु॰ फूला, खिला।

फुल्लड़॰ गु॰ बचेला, फूलसे थोड़े दिनके फल।

फुल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ आंखकी फूली।

फुसफुसाना॰ अ॰ क्रि॰ धीरे धीरे बातकहना, झींसी पड़ना।

फुहार॰ ना॰ स्त्री॰ पानी के कण छोटे २ पड़ना।

फुहारा॰ ना॰ पु॰ फव्वारह छोटी २ बूंदें छूटना।

फूआ॰ ना॰ स्त्री॰ फूफू, बापकी बहन।

फूंक॰ ना॰ पु॰ फूंकने का काम वा चाल।

फूकना॰ स॰ क्रि॰ मुखसे वायु छोड़ना, सुलगाना, मुखसे बजाना, उड़ाना, जलाना।

फूकारना॰ अ॰ क्रि॰ फनफनाना।

फूही॰ ना॰ स्त्री॰ झींसी, फूही।

फूकना॰ स॰ क्रि॰ फूकना।

फूट॰ ना॰ स्त्री॰ ककड़ीविशेष, अयुग्म, बिगाड़, भिन्नता, खोंट।

फूटन॰ ना॰ स्त्री॰ अनबनाव, विरोध।

फूटना॰ अ॰ क्रि॰ टूटना, फटना, भिन्न भिन्न होना, प्रकट होना, दुर्गन्धि निकलना।

फूटा॰ गु॰ टूटा।

फूटी॰ ना॰ स्त्री॰ विरोध, बिगाड़, गु॰ टूटी।

फूफा॰ ना॰ पु॰ फूफूका पति।

फूफी॰
फूफू॰ } ना॰ स्त्री॰ बापकी बहन।

फूल॰ ना॰ पु॰ पुष्प, कली, निहानी, सूज, जले हुये मृतक की हड्डी।

फूलना॰ अ॰ क्रि॰ खिलना, बिगसना, आनन्दितहोना, सूजना, अभिमानी होना।

फूला॰ गु॰ सूजा, ना॰ पु॰ धानों के लावा।

फूलाव॰ ना॰ पु॰ सूजन।

फूली॰ ना॰ स्त्री॰ फुल्ली जो आंखमें होती है।

फूस॰ ना॰ पु॰ पुरानी घास, तृण, पूसमास।

फूसड़ा॰ ना॰ पु॰ गूदड़।

फूसी॰ ना॰ स्त्री॰ भूसी।

फूहड़॰ ना॰ स्त्री॰ फूहर।

फूहड़ा॰ गु॰ कुवचन कहनेहारा।

फूहर॰ ना॰ स्त्री॰ अनसीखी, धामड़, कुचाल चलनेहारी, ना॰ स्त्री॰ भिष्टल।

फूहा॰ ना॰ पु॰ स्तनके सदृश रुई, गोढ़ा।

फूहार॰ ना॰ स्त्री॰ फूहर, फुहरा।

फूही॰ ना॰ स्त्री॰ झीसी।

फेंक॰ ना॰ स्त्री॰ फेंकने का काम वा चाल।

फेंकना॰ स॰ क्रि॰ डालना, झोंकना।

फेंकाव॰ गु॰ फेंकने के योग्य।

फेंट॰ ना॰ स्त्री॰ डब, कटिबन्ध, पटका।

फेंटन॰ स॰ क्रि॰ मिलाना, सानना, लतपत करना।

फेंटा॰ ना॰ पु॰ छोटी पगड़ी, पटका।

फेंटी॰ ना॰ स्त्री॰ आंटी।

फेट॰ ना॰ स्त्री॰ फेंट।

फेटना॰ स॰ क्रि॰ फेंटना।

फेटा॰ ना॰ पु॰ फेंटा।

फेणु॰ ना॰ पु॰ फेना।

फेणोबारि॰ ना॰ पु॰ समुद्र फेणु।

फेन॰
फेना॰ } ना॰ पु॰ झाग, फेणु।

फेनाना॰ अ॰ क्रि॰ फेना उठना।

फेनी॰ ना॰ स्त्री॰ पकवान विशेष।

फेनुस॰ ना॰ पु॰ पीयूष।

फेफड़ा॰ ना॰ पु॰ अंग विशेष जिसके द्वारा श्वासलेते हैं।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलनेकी आशक्ति।

फेर० अव्य० पुनः।

फेर० ना० पु० बांक, टेढ़ाई, घुमाव, घेरा, कुण्डली, घोल घुमाव।

फेरना० स० क्रि० घुमाना।

फेरा० ना० पु० घुमाव, फैलाव।

फेराफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, आवागमन।

फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।

फेरीवाला० ना० पु० फेरनेवाला, बिसाती आदि।

फेरु० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोखा, अन्तर, फेर।

फैंटा० ना० पु० फेंटा।

फैलना० अ० क्रि० बिछना, पसरना, बिथरना, प्रकट होना।

फैलाना० स० क्रि० बिछाना, चौड़ाना, पसारना, बिथराना, प्रकट करना।

फैलाव० ना० पु० बिछाव, पहराव, प्रकटता, प्रचार, भरपूर।

फोंक० गु० खोखल, पोला, ना० स्त्री० बाण की एक ओर जिधर से पेंच में लगाते हैं।

फोंफी० ना० स्त्री० नली, छूंछी।

फौहार० ना० स्त्री० फुहार।

फोक० ना० पु० तरछट, सीठी, गु० खोखला, वस्त्र का फटावा, बाणका एक ओर।

फोकट० ना० पु० कंगाल।

फोकड़० ना० पु० खूद, तरछट, कूड़ा।

फोड़ना० स० क्रि० तोड़ना, फाड़ना।

फोड़ा० ना० पु० स्फोटक, बालतोड़, पिरकी।

फोला० ना० पु० फफोला, छाला।

[ब]

बंझोटी० ना० स्त्री० बांझ होने की औषधि विशेष।

बंटवाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्सहकरवाना।

बंटवैया० ना० पु० भागकर्त्ता, बांटनेहारा।

बंटाना० स० क्रि० बांटना, वा बंटवाना।

बंटैत० ना० पु० बंटवैया।

बंड़ोहा० ना० पु० बवण्डर, बौहरा।

बंश० ना० पु० बांस।

बंशकार० ना० पु० बांस का बननेवाला।

बंशरोरी० ना० पु० बंशरोचन।

बंशरोचन० पु० बंशलोचन।

बंशावली० ना० स्त्री० बंसावली।

बंशी० ना० स्त्री० बंसी।

बक० ना० पु० बक, ना० स्त्री० झक, गप।

बकुची० ना० स्त्री० पौधा विशेष जिसके बीज से खुजली जाती है।

बकझक० ना० स्त्री० बकवाद।

बकना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, झकलगाना।

बकबक० ना० स्त्री० बड़बड़, गप शप।

बकबकाना० स० क्रि० बकबक करना।

बकरा० ना० पु० अज, छाग।

बकरी० ना० स्त्री० अजा, छेरी, छाग।

बकला० ना० पु० छिलका, छाल।

बकवाद० ना० स्त्री० बकबक।

बकवादी० ना० पु० बकबकिया।

बकवास० ना० पु० बकवाद।

बकवाहा० ना० पु० } बड़बड़िया।
बकवाही० ना० स्त्री० }

बकसा० गु० समेट, बन्धेजी।

बकसूवा० ना० पु० चपड़ास, चपरास।

बकसैला० गु० बकसा।

बकायन्० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।

बकारा० ना० पु० अगुवा, पथिक, बटोही।

बकारी० ना० स्त्री० टेढ़ीलकीर।

बकिया० ना० स्त्री० छुरी, चाकू।

बकुला० ना० पु० बगला।

बकेनी० ना० स्त्री० बहुत दिनकी ब्यानी गाय अथवा भैंस।

बकेलू० ना० पु० पलाशे अर्थात्ढाकी छाल।

को कूटकर बनाते हैं जिसकी रस्सी आदि बनती है।

बकोटना० स० क्रि० खसोटना, नोचना।

बक्कम० ना० पु रंगने का काठ।

बक्कल० ना० पु० बकला।

बक्का०ना पु० } गु० झक्की, गप्पी, बकवादी।
बक्की०ना स्त्री० }

बखरी० ना० स्त्री० झोपड़ी, घर, मकान।

बखा० ना० पु० बतौरा, मोढ़ा।

बखान० ना० पु० वर्णन, स्तुति।

बखानना० स० क्रि० वर्णनकरना, स्तुतिकरना, सराहना।

बखार० ना० पु० } खाता, भण्डार, अनाज रखने की कोठी वा कोठरी।
बखारी०ना० स्त्री० }

बखेड़ा० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई, रौला।

बखेड़िया० गु० झगड़ालू, लड़ाका।

बखेरना० स० क्रि० बिथराना, छिण्डाना।

बखोर० ना० स्त्री० टोक, रोक, अपशकुन।

बखोरना० स० क्रि० टोकना, पूंछना।

बखौरा० ना० पु० कन्धा, मोढ़ा।

बग० ना० पु० बक, बगुला, बाग।

बगछुट० ना० पु० सरपट।

बगपांति० } ना० स्त्री० बगुलों की पांती।
बगपांती० }

बगड़० ना० पु० चावल विशेष।

बगड़ा० ना० पु० छल, दुःख।

बगड़िया० गु० छली, ठग।

बगड़ना० अ० क्रि० फिरना, बिगड़ना, भूलना फैलना।

बगड़ाना० स० क्रि० फिराना, बिगाड़ना, भुलाना, फैलाना।

बगमेल० ना० पु० अति निकट, बाग में बाग का मिलजाना।

बगर० ना० पु० घर आंगन, सहन।

बगराना० स० क्रि० छिटकाना, फैलाना, बिथराना।

बगला० ना० पु० बक, बगुला, पक्षी विशेष।

बगलाभगत० गु० कपटी, धूर्त्त, छली।

बगहंस० ना० पु० हंस विशेष।

बगिया० ना० स्त्री० } फुलवाड़ी, छोटाउपवन,
बगीचा० ना० पु० } छोटाबाग, फारसीशब्दहै।

बगुला० ना० पु० बक, पक्षी विशेष।

बगूला० ना० पु० बवण्डर, बौंडरा।

बघनहा० ना० पु० सुगन्धि विशेष, जड़ विशेष।

बघना० ना० पु० बाघ के नख वा दांत जो बालक को पहिनाते हैं।

बघरूरा० ना० पु० बवण्डर, बगला, पवनग्रन्थि।

बघार० ना० पु० छौंक।

बघारना० स० क्रि० छौंकना।

बघी० ना० स्त्री० डांस, बुड़मक्खी।

बघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष।

बघेलखण्ड० ना० पु० देश विशेष, रीवांका प्रदेश।

बघेला० ना० पु० बघेल, बाघका बच्चा, डामरू।

बंक० ना० पु० बांका।

बंकाई० ना० स्त्री० फेंट, टेढ़ाई।

बंग० ना० पु० धातु विशेष, उल्टपन, बंगाला देश।

बंगरी० ना० स्त्री० गहना विशेष।

बंगला० ना० पु० छप्पर वा खपरैल का घर विशेष, पान विशेष, बंगाले के अक्षर वा भाषा।

बंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।

बंगा० ना० पु० बांसकी जड़का पोर, गु० उल्लू, नासमझ, रामायणे यथा, तीर्थ प्रयाग नदी पुनि गंगा, राममनुज कसरे शठबंगा।

बंगाल० } ना० पु० देश विशेष जो गयाजी से पूर्व में है।
बंगाला० }

बंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री।

बंगाली० गु० बंगाले का वासी।

बंगी० ना० स्त्री० }
बंगू० ना० पु० } भौंरा जो बेल आदि का बनता है जिसको बालक नचाते हैं।

बच० ना० स्त्री० पौधे विशेष की जड़, बात।

बचकाना० गु० छोटा, ना० पु० भैया, भगतिया।

बचत०
बचती० } ना० स्त्री० शेष, बाक़ी, अधिक।

बचन० ना० पु० भाषा, बोली, बात, प्रण, वाद, नियम, मर्य्याद इक़रार, वचन।

बचनदत्त० गु० मगेतर, जो सगाई किया गया।

बचना० अ० क्रि० रक्षापाना, शेषरहना।

बचपन० ना० पु० लड़कपन, बालकता, लड़काई।

बचांसि० ना० पु० बात।

बचाना० स० क्रि० उद्धार वा रक्षा करना, छोड़ाना, शेषरखना, छुपाना।

बचाव० ना० पु० रक्षा, पक्ष।

बच्चा० ना० पु० लड़का, ढोटा, गेद, वत्स।

बच्छ० ना० पु० वत्स, लड़का, बछड़ा।

बच्छनाग० ना० पु० विष विशेष।

बच्छा०
बछड़ा०
बछड़ू०
बछरू० } ना० पु० गायका बच्चा।

बछेड़ा० ना० पु०
बछेड़ी० ना० स्त्री०
बछेरा० ना० पु०
बछेरी० ना० स्त्री० } घोड़ी का बच्चा।

बजना० अ० क्रि० शब्दहोना, लड़ना।

बजनी० ना० स्त्री० लड़ाई जो वस्तु बजे।

बजंत्री० ना० पु० समाजी, बाजाबजानेहारा।

बजबजाना० अ० क्रि० उबलना।

बजरबट्टू० ना० पु० फल विशेष।

बजरंग० ना० पु० हनुमान् जी का एकनाम।

बजरंगी० ना० पु० तिलक विशेष।

बजरा० ना० पु० नाव विशेष।

बजरी० ना० स्त्री० जो कंकर पत्थरादि छोटे २ गचमें डाले जाते हैं।

बजाक० ना० पु० सर्प विशेष।

बजाना० स० क्रि० शब्द वा स्वर निकालना।

बजालाना० स० क्रि० पूराकरना, पार करना, निर्वाहकरना, मानना।

बंजर० ना० पु० वह धरती जो जोती बोई नहीं गई है।

बझना० अ० क्रि० फ़सना, पकड़ाजाना।

बझाना०
बझावना० } स० क्रि० पकड़वाना, फसाना।

बट० ना० पु० बड़गद, पण्डित, ब्राह्मण, मार्ग, एक कौड़ी।

बटई० ना० स्त्री० बटेरपक्षी, बादला बनाने की विद्या विशेष।

बटना० स० क्रि० बलदेना, ऐंठनदेना, रस्सी बनाने का काम, अ० क्रि० विभागित होना, ना० पु० पत्थर जिससे चटनीआदि बांटते हैं, यन्त्र जिससे रस्सी को बलदेते हैं।

बटपार० ना० पु० ठग, हत्यारा, लुटेरा, राहज़न।

बटपारी० ना० स्त्री० ठगई, डकैती, राह मारना।

बटलोई०
बटलोही० } ना० स्त्री० पात्र विशेष जिसमें दाल आदि पकाते हैं।

बटवार० ना० पु० करलेनेहारा, भाग, हिस्सह।

बटवारा० ना० पु० बांट, भाग, अंश, हिस्सह।

बटाई० ना० स्त्री० बांट रस्सी आदि बटने का काम वा पैसा।

बटाऊ० ना० पु० बटोही, पथिक, मुसाफ़िर।

बटिया० ना० स्त्री० छोटा मार्ग, पगदण्डी, पत्थर का छोटाबांट।

बटु० ना० पु० ब्रह्मचारी, वटु।

बटुक० ना० पु० भैरव विशेष।

बटुवा० ना० पु० थैली, बटलोई।

बटुरना० अ० क्रि० इकट्ठाहोना।

बटेर० ना० स्त्री० पक्षी विशेष।

बटोर० ना० पु० भीड़, समेट, जमाव।

बटोरना० स० क्रि० इकट्ठा करना, समेटना।

बटोही० ना० पु० पथिक, राही, मुसाफिर।

बट्टा० ना० पु० खोटापन, बांटेकायन्त्र, प्याला।

बट्टी० ना० स्त्री० ढेली, बरी।

बड़० ना० पु० बरगद, वृक्ष विशेष, बड़ा।

बड़ना० अ० क्रि० पैठना।

बड़बड़० ना० स्त्री० बकबक।

बड़बड़ाना० स० क्रि० कुड़कुड़ाना, बकबककरना।

बड़बड़िया० ना० पु० बक्का बकबकी।

बड़बाग्नि० ना० पु०
बड़वानल० ना० पु० } अग्नि विशेष जो समुद्रमें बसती है।

बड़हल० ना० पु० वृक्ष विशेष वा उसका फल।

बड़ा० गु० महा, लम्बा, ऊंचा, ना० पु० उरदका पकवान विशेष अर्थात् बरा।

बड़ाई० ना० स्त्री०
बड़ापन० ना० पु०
बड़पा० ना० पु० } महत्त्व, प्रधानता, घमंड।

बड़ादिन० ना० पु० जो दिसम्बर की २५ तारीख को होता है।

बड़ी० गु० स्त्री० महाप्रधान, ऊंची, ना० स्त्री० जो उरद पीस के बनाते हैं मुगौरी।

बडूखा०
बडौंखा० } ना० स्त्री० इक्षुविशेष, ऊंख विशेष।

बढ़ई० ना० पु० खाती, सुतार, जाति विशेष।

बढ़ता० ना० पु०
बढ़ती० ना० स्त्री० } अधिकाई, बढ़ाव।

बढ़इन० ना० स्त्री० बढ़ईकी स्त्री।

बढ़ना० अ० क्रि० अधिकहोना, आगे जाना, उगना, चढ़ना।

बढ़नी० ना० स्त्री० झाड़ू, बुहारी, अगाड़ी।

बढ़ाना० स० क्रि० अधिकाना, लंबाना, चलाना, बुझाना, चढ़ाना, दुकानउठाना।

बढ़ालाना० स० क्रि० आगेलाना, दुकानउठा लाना।

बढ़ाव० ना० पु० चढ़ाव, बढ़ती, आधिकता।

बढ़िया० गु० मँहगी, बहुमूल्य, कीमती।

बढ़ेला० ना० पु० बनैलाशूकर।

बढ़ोतर० ना० पु०
बढ़ोतरा० ना० पु०
बढ़ोतरी० ना० स्त्री० } ब्याज, लाभ, सूद।

बणिया० ना० पु० वणिक्. वैश्यजाति विशेष।

बत० ना० पु० कीट विशेष ना० स्त्री० बात वा बातका संक्षेप।

बतकहा० गु० बकी, बातूनी।

बतकहाव० ना० पु०
बतकही० ना० स्त्री० } बड़ बक, बातचीत, तकरार।

बतक्कड़० गु० बकी।

बतराना० स० क्रि० बातचीत करना।

बतलाना० स० क्रि० बातचीत करना, बताना, पढ़ाना, समझाना, सुझाना।

बता० ना० पु० खपाच, लम्बा चौड़ा पत्थर विशेष जिसपर चूरणपीसते हैं।

बताना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना, सिखलाना ना० पु० पगड़ी के नीचे का फेंटा।

बताली० ना० स्त्री० भांड़ेती।

बतास० ना० पु० वायु, पवन।

बतासा० ना० पु० बुल्ला, बुलबुला, मिठाई विशेष।

बतियाना० स० क्रि० बातचीतकरना, बोलना, छोटे छोटे फल लगना।

बतूनी० गु० गप्पी।

बतौरी० ना० स्त्री० फुड़िया विशेष।

बत्ती० ना० स्त्री० दीपक में जलाने के लिये ऐंठीहुई रुई, मोम आदि की, कपड़े की जो घावमें भरते हैं, योग किया में साधन विशेष।

बत्तीस० गु० तीस और दो, ३२।

बत्तीसा० ना० पु० घोड़े आदि के हेतु औषधि विशेष।

बत्तीसी० ना० स्त्री० सब दांत, गु० जिसमें बत्तीस वस्तु का समुदाय हो।

बत्ता० ना० पु० चावल विशेष।

बथुआ० ना० पु०
बथुई० ना० स्त्री० } शाकविशेष भाजी।

बद० ना० स्त्री० रोगविशेष, बाघी।

बदना० स० क्रि० दांवलगाना, मानना, अंगीकार करना।

बदर० ना० पु० सेव मेवा एक सहस्र मुद्रा की थैली अर्थात् तोड़ा, यह शब्द अरबी में शुद्ध बदरः है परन्तु अयोध्या काण्ड में यों लिखा है, यथा, विश्व बदर जनु तुम्हरे हाथा।

बदल० ना० पु० मेघ, प्रतीकार, अव्य० सन्ते।

बदलना० स० क्रि० पलटना, पौथना।

बदला० ना० पु० सन्ती, तोड़ाव, पलटा, पौथा।

बदलाई० ना० स्त्री० तोड़वाई, पलटाई, पौथाई।

बदलाना० स० क्रि० फेरडालना, तोड़ाना, पौथाना।

बदली० ना० स्त्री० अंधेरा, छोटा मेघ।

बदा० गु० जो प्रारब्ध में लिखित है।

बदाबदी० अव्य० हिसका समेत लड़ाई से झगड़े से।

बदि०
बदी० } ना० स्त्री० कृष्णपक्ष, हेतु, लिये।

बद्दल० ना० पु० मेघ।

बद्ध० गु० जो बांधागया।

बद्धी० ना० स्त्री० गलेमें पहरने की वस्तु विशेष, तसमा चमड़े का।

बद्रीवन० ना० पु० बद्रीनाथ का वन।

बध० ना० पु० हत्या, हिंसा, हतन।

बधन० ना० पु० हतन, हनन।

बधना० स० क्रि० मारडालना, हत्या करना ना० पु० पानी पीने का पात्रविशेष।

बधवंश० ना० पु० वंश का वध।

बधस्थान० गु० जिस स्थान में वध कियाजाय।

बधाई० ना० स्त्री०
बधावा० ना० पु० } जयकार मानना, आनन्द, मंगलाचार जो छठी आदिको लड़के के घर फूफी लेजाती है।

बधिक० गु० पु० खटकी, हत्यारा, फसियारा, बहेलिया, कसाई।

बधिया० ना० स्त्री० पशुओं में जो अण्डहीन हुआ।

बधिर० गु० बहिरा।

बधू०
बधूटी० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।

बध्य० गु० जो वध करने के योग्य है।

बन० ना० पु० बन, पानी।

बनज० ना० पु वणिज, व्योपार, कमल।

बनजारा० ना० पु० अन्न का व्योपारी, जो बैलोंपर अन्न लादकर लेजाता है।

बनजारी० ना० स्त्री० बनजारा की स्त्री, तम्बू विशेष, अधसीझा जो अन्न।

बनठन० गु० शृंगारयुत, सवारी सजधज से।

बनत० ना० पु० गोटेसे बनीहुई वस्तु विशेष जो शोभा के लिये टोपी आदि में लगाते हैं।

बनतराई० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

बनना० अ० क्रि० रूपकड़ना, तैयार होना, बचा।

बनपड़ना० अ० क्रि० बनेना, सुधारना।

बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।

बनमञ्जरी० ना० स्त्री० संभालू।

बनमाल०
बनमाला० } ना० स्त्री० माला जो बहुपुष्पों से गूंथी और लम्बी पांव तक होती है।

बनमालिका० ना० स्त्री० बराहीकन्द, बनमाला।

बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।

बनरा० ना० पु० दुलहा।

बनरी० ना० स्त्री० दुलहन्।

बनवाई ना० स्त्री० किसी वस्तु के बनवानेका पैसा।

बनवाना० स० क्रि० रचाना, तय्यार कराना, मुंडवाना।

बनवारी० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का नाम।

बनविलासिनी० ना० स्त्री० शेखाहोली।

बनवैया० ना० पु० बनानेहारा, कर्त्ता।

बनसी० ना० स्त्री० बांसली, मुरली, मछली पकड़नेकी कटिया बड़िस।

बना० ना० पु० दुलहा, गु० बनायाहुआ, बना-भया।

बनात० ना० स्त्री० ऊनका वस्त्रविशेष।

बनाती० गु० जो बनात से बनाया गया।

बनाना० स० क्रि० पकाना, रचना, कमाना, सधाना, उठाना, सुधारना, गांठना, शृंगारना. साटना।

बनायुज० ना० पु० घोड़ा अश्व।

बनाव० ना० पु० रचाव, शृंगार, मिलाप।

बनावट० ना० स्त्री० सांठगांठ, डौल, बहाना, जुगति, छलावा, बांधन।

बनिज्ज० ना० पु० बणिज, ब्योपार, लेनदेन।

बनिन्० ना० स्त्री० बनियां की स्त्री।

बनिया० ना० पु० ब्योपारी, वणिक्।

बनियायिन्० ना० स्त्री० बनिन्।

बनी० ना० स्त्री० दुलहन्।

बनेटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी जिसके दोनों ओर बत्ती लगाकर फिराते हैं।

बनेला० गु० बनैला।

बनैनी० ना० स्त्री० बनिन्।

बनैला० गु० जंगली, वन्य।

बनौटिया० ना० स्त्री० कपासी रंग।

बनौटी० ना० स्त्री० कपास, कपासकी लकड़ी।

बनौटीरंग० ना० पु० कपासी रंग।

बन्दनवार० ना० पु० }
बन्दनवारि० ना० स्त्री० } सिहरा मौर, हार, गजरा।

बन्दर० ना० पु० कपि, वानर वा जहां जहाज लगते हैं।

बन्दरिया०
बंदरी० } ना० स्त्री० बन्दर की स्त्री।

बन्दरी० ना० स्त्री० छींटाविशेष, खड्गविशेष तृणविशेष।

बन्दी० ना० स्त्री० बन्धन।

बन्दी० ना० पु० बंधुआ, कैदी, ना० स्त्री० माथे परका गहना।

बन्दीगृह० ना० पु० बंधुओं का निवासस्थान, कैदखाना, जिहलखाना।

बन्दीजन० ना० पु० बंधुआ, कैदी।

बन्दीशाला० ना० स्त्री० बन्दीगृह, कैदखानह।

बन्ध० ना० पु० गांठ, पट्टी, गु० जो बांधागया।

बन्धक० ना० पु० गहना, गिरवी, धरोहर।

बन्धन० ना० पु० गांठ, बांध, अटकाव, पट्टी, कैद।

बन्धनी० ना० स्त्री० मालती, बांधनेकी वस्तु।

बन्धान० ना० पु० बन्दीजीविका, मुकर्रह जो सूर में चमड़े को लगाते हैं।

बन्धानी० ना० पु० नीचजाति जो पत्थर वा लट्ठा उठाते हैं जो बन्धान पाते हैं।

बन्धु० ना० पु० भाई, नतैत, मित्र।

बन्धुजीव० ना० पु० दुपहारी फूलका वृक्ष।

बन्धुता० ना० स्त्री० मित्रता, मित्रों वा भाइयों की अधिकता।

बंधुवा० ना० पु० कैदी, बन्दी,।

बन्ध्या० ना० स्त्री० बांझ अनफल।

बन्ना० अ० क्रि० रचना, संवरना, मिलना। सधना, होना, सुधरना, चिढ़ना, ना० पु० दूल्हा।

बन्य० गु० वनवासी।

बन्हा० ना० पु० टोनहा।

बन्हाई० ना० स्त्री० टोनही, टोन्हाई।

बपंश०
बपैती०
बपौती० } ना० स्त्री० पैतृक, बापका अंश।

बफारा० ना० पु० बाफ, भाफ।

बबुआ० ना० पु० लड़का, बालक।

बबूल० ना० पु० वृक्ष विशेष, कीकड़।

बम० ना० स्त्री० सोता, पुर्सा।

बमकना० अ० क्रि० उभरना, सूजना, फूलना।

बम्बई० ना० पु० देश वा नगर विशेष।

बम्बा० ना० पु० कूप विशेष, सोता, यंत्र विशेष।

बया० ना० पु० पक्षी विशेष, निरखी।

बयार० ना० पु० वायु, पवन, हवा।

बयाला० ना० पु० रोशनदान, धुधुका, गु० जिस वस्तु में बाई रहती है।

बयालीस० गु० चालीस और दो, ४२।

बयासी० गु० अस्सी और दो, ८२।

बर० ना० पु० आशीर्वाद, पदार्थ, दुलहा, थान की चौड़ाई, कांकई वृक्ष वरदान, ना० स्त्री० बिरनी, गु० श्रेष्ठ, सुन्दर, अभिराम।

बरई० ना० पु० तम्बोली।

बरखना० अ० क्रि० बरसना।

बरगत० } ना० पु० बट, वृक्ष विशेष।
बरगद० }

बरजना० स० क्रि० निषेध करना, हटकना, बारना, रोकना।

बरत० ना० पु० व्रत बर्त्त, चमोटी, चमड़े की रस्सी जिस से पुलका पानी खींचते हैं, गु० जलत, धधकत।

बरतना० स० क्रि० शोचना, विचारना।

बरतनी० ना० स्त्री० अक्षरौटी, वर्णमाला।

बरदैत्त० ना० पु० भाट, दसौंधी, बानावाले।

बरध० ना० पु० बैल, वृषभ।

बरधना० स० क्रि० गौ और बैलका प्रसंगहोना।

बरधाना० स० क्रि० गौका बैल से प्रसंग कराना।

बरन० ना० पु० वर्णन, अव्यय तौ भी, किंवा, बल्कि।

बरनन० ना० पु० वर्णन।

बरना० ना० पु० वृक्ष विशेष, स० क्रि० विवाह करना अ० क्रि० जलना, धधकना, नदी विशेष।

बरनी० ना० स्त्री० पपनी।

बरबस० ना० पु० बल, बलात्कार, प्रबलता।

बरब० ना० पु० पक्षी विशेष,

बरबट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष, बरबस, बरियाई।

बरवा० ना० पु० छन्द विशेष, कांटा मछली मारने का ना० स्त्री० रागिनी विशेष जिससे हरिण और सर्प मोहता है।

बरस० ना० पु० वर्ष, मोदक वस्तु विशेष जो अफीम से बनती है।

बरसगांठ० ना० स्त्री० जन्मदिन, जन्मदिन में सर्वदा गांठ बांधने का व्यवहार।

बरसना० अ० क्रि० पानी पड़ना।

बरसवान० गु० वर्षी, संवती, वार्षिक।

बरसौड़ी० ना० स्त्री० बर्ष का भाड़ा वा कर, वार्षिक।

बरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौचराते हैं, रस्सा चमोटी, खेतमें पानी लेजाने का मार्ग, पुत्र जन्म के बारहवेंदिन का व्यवहार।

बरा० ना० पु० बड़ा, भोजन में व्यंजन विशेष, स्त्री० बाकुची, गु० अच्छी स्त्री।

बराक० ना० पु० बराक, देवता।

बरात० ना० स्त्री० दूलह और उसके साथी।

बराती० ना० पु० विवाह के न्योतहारी।

बराना० अ० क्रि० परे रहना, अलग होना, आचारकरना तजना, छोड़ना।

बराव० ना० पु० संयम, अलगाव।

बरियाई० ना० स्त्री० बड़ाई, उमंग, बरबस।

बरियाय० ना० पु० बरट, जबरदस्ती।

बरियार० गु० बलवान्, प्रबल, तेजस्वी।

बरियारा० ना० पु० पौधा विशेष, बेरेरा।

बरी० ना० स्त्री० कुली, बड़ी औषधि की गोली, वटी, बिवाही।

बरीस० } गु० वर्ष, काव्ये यथा, कृष्णावस्था
बरीसा० } पांच बरीसा, जब राधिका प्रथम दिन दीसा।

बरु० अव्य० चाहो, अगर्चि।

बरेठन० ना० स्त्री० धोबिन्।

बरेठा० ना० पु० धोबी।

बरेरा० ना० पु० बिरवा विशेष, बिरनी।

बरै० ना० स्त्री० तम्बोली।

बरैन० ना० स्त्री० तम्बोलिन्।

बरोठा० } ना० पु० ड्योढ़ी।
बरौठा० }

बर्छा० ना० पु० } भाला विशेष।
बर्छी० ना० स्त्री० }

बर्छैत० ना० पु० भालैत, भाला मारनेवाला।

बर्त० ना० पु० काम, अभ्यास, बरत।

बर्तन० ना० पु० बासन, भांड़े, पात्र।

बर्तना० स० क्रि० काममें लाना।

बर्मा० ना० पु० वेधक, बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बर्माना० स० क्रि० वेधना, छेदना।

बर्म्हा० ना० पु० देशविशेष जो भरतखण्ड के पूर्व है।

बर्रै० ना० पु० कुसुम का बीज, डंकदारकांट विशेष।

बर्वै० ना० पु० भाषाका छन्दविशेष।

बर्स० ना० पु० वर्ष।

बर्सात० ना० स्त्री० वर्षा, प्रावृट्।

बर्साती० ना० पु० घोड़े के पैर में रोगविशेष गु० जो बर्सातमें उपजता वा संबन्धरखताहो।

बर्साना० स० क्रि० पानी गिराना, ना० पु० व्रजमें नगर विशेष।

बर्सी० ना० स्त्री० बरसवेंदिन का श्राद्ध।

बर्ह० ना० पु० मोरपंख।

बर्ही० ना० पु० मोर, मयूर।

बल० ना० पु० सामर्थ, श्रीबलदेवजी, बली, ऐंठन, दल, वीर्य धीरज, दैत्य विशेष।

बलकना० अ० क्रि० खोलना, निज बड़ाई करना।

बलताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष।

बलतोड़० ना० पु० फुड़िया जो बाल के टूटने से होती है।

बलद० ना० पु० बैल जो बोझा ढोता है।

बलदाऊ० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलदिया० } ना० पु० बैल का लादने हारा
बलदी० } वा बैल का चलाने वा चराने हारा।

बलदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के ज्येष्ठ भ्राता।

बलना० अ० क्रि० जलना।

बलिबकरा० ना० पु० बलिका बकरा, युद्ध में जो विना लड़े मारा जावे।

बलबलाना० अ० क्रि० उबलना, कामातुर होना।

बलवीर० ना० पु० श्रीबलदेव जी वा श्रीकृष्ण।

बलभद्र० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति।

बलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, प्रियतम राग विशेष जो होली में गाते हैं।

बलराम० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलवन्त० गु० पराक्रमी, सामर्थी, योद्धा।

बलवर्द्धक० गु० बलका बढ़ाने हारा।

बलवान्० गु० बलवन्त।

बलही० ना० स्त्री० आंटी, भार।

बलाईलेना० स० क्रि० और की दुर्गति को आप चाहना।

बलात्कार० ना० पु० बरबस, अनिच्छा से काम कराना, जबरदस्ती।

बलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज।

बलि० ना० पु० भोजन, भाग, अंश, पूजा, गन्धक, सदकह, राजा विशेष, ना० स्त्री० न्योछावर, लहुरी।

बलित० गु० भरा, परा, बल संयुक्त।

बलिदान॰ ना॰ पु॰ देवता के हेतु पशु का अर्पण।

बलिपुष्ट॰ } ना॰ पु॰ कौआ, काग।
बलिभुक्॰ }

बलिरसा॰ ना॰ स्त्री॰ गन्धक।

बलिष्ठ॰ गु॰ बलवान्, पहलवान।

बलिहारी॰ ना॰ स्त्री॰ न्योछावर, कुर्बान्।

बली॰ गु॰ बलवान्, पहलवान, वीर।

बलीमुख॰ ना॰ पु॰ वानर, कपि, बन्दर।

बलीवर्द॰ ना॰ पु॰ बलद।

बलुआ॰ गु॰ बालुमय।

बलूला॰ ना॰ पु॰ बुलबुला।

बलेंड़ा॰ ना॰ पु॰ बवण्डर, नौंड़रा, बड़ीबलेंड़ी।

बलेंड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ लम्बी धरनि, जो दो छप्परों के बीच में रखते हैं।

बलिक॰ क्रि॰ बकवादकर, निज बड़ाई कर।

बल्गुजा॰ ना॰ स्त्री॰ बकुची।

बल्पा॰ ना॰ स्त्री॰ असगन्ध।

बल्लक॰ ना॰ पु॰ मोठ अन्न।

बल्लकी॰ ना॰ स्त्री॰ बीण, तम्बूरा

बल्लम॰ ना॰ पु॰ भाला, सेल।

बल्लरी॰ ना॰ स्त्री॰ बेल, गुरच।

बल्लरीकोष्ठ॰ ना॰ पु॰ हरसिंगाड़।

बल्ला॰ ना॰ पु॰ लट्ठा, दण्डा, लम्बा बांस, जिस से नाव चलाते हैं गोबर की बनी वस्तु जो होली में डालते हैं।

बवंडर॰ ना॰ पु॰ बण्डोहा, बगूला, बौंडरा, पवन की ग्रन्थि।

बवासीर॰ ना॰ स्त्री॰ गुदा में रोगविशेष।

बवेसिया॰ ना॰ पु॰ गांड़, गंड़िया।

बस॰ ना॰ पु॰ वश।

बसन॰ ना॰ पु॰ कपड़ा।

बसना॰ अ॰ क्रि॰ रहना, भराहोना, ना॰ पु॰ कपड़ाविशेष जिसमें पान लपेटते हैं।

बसनी॰ ना॰ स्त्री॰ खरिया, थैली।

बसाना॰ स॰ क्रि॰ आबाद कराना, अ॰ क्रि॰ गन्ध देना।

बसूला॰ ना॰ पु॰ बढ़ईका अस्त्र विशेष।

बसूली॰ ना॰ स्त्री॰ ईंट छांटने के लिये अस्त्र विशेष, छोटा बसूला।

बसेंधा॰ गु॰ सड़ा, उबसा।

बसेरा॰ ना॰ पु॰ वकत, सायंकाल, बसना।

बसोबास॰ ना॰ पु॰ बसगति।

बस्त॰ ना॰ स्त्री॰ वस्तु, चीज।

बस्ती॰ ना॰ स्त्री॰ ग्राम, गांव, नगर, बढ़ावा।

बस्ना॰ ना॰ पु॰ बेठन।

बहकना॰ अ॰ क्रि॰ निराश होना, भटकना, भूलना।

बहकाना॰ स॰ क्रि॰ निराश करना, भटकाना, भुलाना, डहकाना।

बहंगी॰ ना॰ स्त्री॰ जिस में कहार बोझ लेचलते हैं।

बहजाना॰ अ॰ क्रि॰ बहना, बिगड़ना, उजड़ना।

बहत्तर॰ गु॰ सत्तर और दो, ७२।

बहना॰ अ॰ क्रि॰ चलना, भसना, उमड़ाना, मर्याद से बाहर जाना, भूलजाना।

बहनेऊ॰ ना॰ पु॰ बहिनकास्वामी, बहनोई।

बहनेली॰ ना॰ स्त्री॰ ले पालक, बहन।

बहनोई॰ ना॰ पु॰ बहनका पति।

बह्मनेटा॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणका बालक।

बहर॰ ना॰ स्त्री॰ अनेक मौका।

बहरा॰ गु॰ बधिर, जिसको सुनाई नहीं देता है।

बहरिया॰ गु॰ अनजान, बाहरका।

बहरी॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षी विशेष जो कबूतर को पकड़ लेता है।

बहल॰ ना॰ स्त्री॰ चलने की गाड़ी।

बहलाना॰ अ॰ क्रि॰ मन प्रसन्न रहना वा करना।

बहलाना॰ स॰ क्रि॰ खिलाना, फिराना, मन प्रसन्न करना।

बहलिया॰ ना॰ पु॰ आखेटकी, बधिक, धनुर्धर, नीचजाति विशेष।

बहली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी बहल।

बहाना॰ स॰ क्रि॰ चलाना, भसाना, उमड़ाना भुलाना, मर्यादा बाह्य चलाना।

बहाव॰ ना॰ पु॰ अहिला, बाढ़ चढ़ाव।

बहिः॰ अव्य॰ बाहर।

बहिःकोण॰ ना॰ पु॰ बाहरका कोना।

बहिजाना॰ अ॰ क्रि॰ पतित होना, बहना, बिगड़जाना, खराब होना।

बहिन॰ ना॰ स्त्री॰ भगिनी, अनुजा।

बहिरन्तर॰ अव्य॰ बाहर, भीतर।

बहिरा॰ गु॰ बधिर, बहरा।

बहिराना॰ स॰ क्रि॰ बहलाना, अ॰ क्रि॰ निकलना।

बहिर्देश॰ ना॰ पु॰ बाह्यस्थान, बाहरकादेश।

बहिर्मुख॰ ना॰ पु॰ धर्मकरने में अचेत, अभगत।

बही॰ ना॰ स्त्री॰ महाजनों के हिसाब की पोथी, खसरह, खाता।

बहीर॰ ना॰ स्त्री॰ सेनाके संग जो भीड़आदि सामग्री।

बहु॰ गु॰ बहुत, ढेर, अनेक।

बहुकाल॰ ना॰ पु॰ अनेक दिन, बहुत दिन।

बहुकालीन॰ गु॰ बहुत दिनों का।

बहुत॰ गु॰ अधिक ढेर, बड़ा।

बहुतात॰ } ना॰ स्त्री॰ अधिकता, सरसाई।
बहुतायत॰ } विस्तार, जियादती।

बहुतेरा॰ गु॰ अनेक, अधिक।

बहुत्व॰ ना॰ पु॰ बहुतायत।

बहुदर्शी॰ ना॰ पु॰ जिसने बहुत देखा है।

बहुधा॰ अव्य॰ अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार, कईबार, अक्सर।

बहुनयन॰ }
बहुनेत्र॰ } ना॰ पु॰ इन्द्र।
बहुनैन॰ }

बहुपद॰ ना॰ पु॰ बरगदवृक्ष।

बहुपत्रा॰ ना॰ पु॰ भौंरा, भ्रमर।

बहुपुट॰ ना॰ पु॰ भोजपत्र।

बहुपुत्रिका॰ } ना॰ स्त्री॰ बड़ी शतावर,
बहुपुत्री॰ } बहुतबेटी।

बहुबाहु॰ } ना॰ पु॰ बाणासुर, नागार्जुन, रावण,
बहुभुज॰ } गु॰ जिसके बहुत भुजाहों।

बहुभुजक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ बहुतमेड़ों का खेत।

बहुमञ्जरी॰ ना॰ स्त्री॰ तुलसी।

बहुमूल्य॰ } गु॰ मँहगा वा जिसका बहुत
बहुमोल्य॰ } मोलहै, क़ीमती।

बहुर॰ अव्य॰ फेर, पुनि।

बहुरंगी॰ गु॰ अनेक रंग का अस्थिर।

बहुरना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, फिरआना।

बहुराना॰ स॰ क्रि॰ फेरलाना, फिराना।

बहुरि॰ अव्य॰ पुनः फेर।

बहुरिया॰ ना॰ स्त्री॰ बधू, बहू।

बहुरूपा॰ ना॰ पु॰ शरट।

बहुरुपिया॰ } ना॰ पु॰ भांड़, स्वांगी।
बहुरूपी॰ }

बहुरूप्य॰ ना॰ पु॰ भांड़ैती।

बहुल॰ } गु॰ बहुतायत, अधिकता, इफ़रात।
बहुलता॰ }

बहुलच्छद॰ ना॰ पु॰ सहिंजनवृक्ष।

बहुला॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी कटाई।

बहुवचन॰ ना॰ पु॰ अधिकत्व संख्या का बोधक, प्रत्यय, बहुतबातें।

बहुविध॰ } गु॰ अनेक प्रकार, बहुधा।
बहुविधि॰ }

बहुव्रीहि॰ ना॰ पु॰ समासविशेष।

बहुशः॰ अव्य॰ बारम्बार, बार बार।

बहू॰ ना॰ स्त्री॰ बधू, दुलहन।

बहेड़ा॰ ना॰ पु॰ फलविशेष।

बहेतू॰ ना॰ पु॰ लुच्चा, फिरन्ता, गु॰ बहाहुआ।

बहेलिया॰ ना॰ पु॰ बधिक, चिड़ीमार।

बहोरना॰ स॰ क्रि॰ फिराना, लौटाना।

बहोरि॰ अव्य॰ फिर, बहुरि।

बांक० ना० पु० बाजूविशेष, कटारविशेष, फेर, टेढ़ाई, घुमाव, दोष।

बांकपन० ना० पु० टेढ़ापा, छछोड़पन, लुचपन।

बांका० ना० पु० छैला, अकड़ैत, बांसकाटने का अस्त्र विशेष, गु० टेढ़ा।

बांबी० ना० स्त्री० सांप का बिल।

बांगा० ना० स्त्री० बिनौला समेत रुई, पीले सरसों।

बांचना० स० क्रि० पढ़ना।

बांजर० ना० पु० बंजर, बिना जोती बोई धरती।

बांझ० ना० स्त्री० बंध्या।

बांट० ना० पु० भाग, अंश, बटखरा।

बांटना० स० क्रि० भागकरना, पीसना।

बांड़ा० गु० पूछ बिना पशु, मनुष्य जिसके कोई नहीं रहा, सर्प पूछरहित।

बांड़ी० ना० स्त्री० लठ, लबाड़।

बांदा० ना० पु० आकाशलता जो वृक्षपर होतीहै।

बांदी० ना० स्त्री० लौंडी, दासी।

बांध० ना० पु० मेड़, बन्ध, पुल।

बांधना० स० क्रि० जकड़ना, गांठना, लगाना, बन्दकरना, बनाना, लटकाना, लपेटना, उठाना, तकाना।

बांधनू० ना० पु० रंगनेकीरीतिविशेष, कलंक, उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तोताविशेष।

बांस० ना० पु० वृक्षविशेष, तालाबआदिनापने के लिये मापकविशेष।

बांसफोड़ा० ना० पु० जातिविशेष जो बांस की वस्तु बनाता है।

बांसली० ना० स्त्री० मुरली, वंशी।

बांसा० ना० पु० नासिका की हड्डी।

बांसी० ना० स्त्री० मुरली, छोटाबांस, बांस से बनी हुई वस्तु, बांस का फल।

बांसुरी० ना० स्त्री० मुरली।

बांह० ना० स्त्री० बाहु।

बांहिया० गु० पक्षी, ओरी तरफदार।

बाई० ना० स्त्री० महाराष्ट्रों में स्त्रियों का नाम, कंचनी बात अव्य० जीर्ण।

बाईस० गु० बीस और दो, २२।

बाईसी० ना० स्त्री० राजा की फौज बाईस हजार पलटन प्रधानता।

बाकला० ना० पु० तरकारीविशेष।

बाकस० ना० पु० झाड़ी जिसके कोयलों से बारूत बनाते हैं।

बाखर० } ना० पु० अंगनाई, कई एकघर
बाखल० } जो एक हाते के भीतर हों।

बाग० ना० स्त्री० लगाम।

बागडोर० ना० स्त्री० लम्बी बाग, लगामकी रस्सी।

बागा० ना० पु० जोड़ा, खिलत, पहिरने का वस्त्रविशेष।

बागी० ना० पु० अश्ववार, घुड़चढ़ा।

बाघ० ना० पु० व्याघ्र, शेर।

बाघन० } ना० स्त्री० व्याघ्री, शेरनी।
बाघनी० }

बाघम्बर० ना० पु० बाघकी खाल।

बाघा० ना० पु० बाघ।

बाछ० ना० स्त्री० चुनाव, छांट, हिस्सह, लगान होंठके दोनोंओरके कोने, गु० निकम्मा।

बाछना० स० क्रि० चुनना, छांटना।

बाजगाज० ना० पु० अनेक बाजों का इकट्ठा शब्द।

बाजन० ना० पु० कई एक बाजा।

बाजना० अ० क्रि० बजना, प्रकट होना, भिड़ना।

बाजरा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़।

बाजा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़ गया।

बाजी० ना० पु० घोड़ा।

बाजू० ना० पु० बांहमें पहिरने का गहनाविशेष।

बाह्य० अव्य० बाहर।

बाह्यालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर।
बाट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पन्थ।
बाट० ना० पु० बांट जो पत्थर आदिके होते हैं।
बाड़० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पंक्ति।
बाड़व० ना० पु० ब्राह्मण।
बाड़वाग्नि० } ना० पु० जलमें की अग्नि।
बाड़वानल० }
बाढ़ा० ना० पु० हाता, घेर, मन्दिर, भूर, दान।
बाढ़िया० ना० पु० बाड़ बनाने हारा।
बाड़ी० ना० पु० उपवनविशेष, उपवन समेत जो घर।
बाढ़० ना० स्त्री० धार, बढ़ती, अधिकाई, सरसई, जलार्णव, अढ़िला, बढ़िया।
बाढ़ना० } अ० क्रि० बढ़ना, उमण्डना।
बाढ़नो० }
बाण० ना० पु० शर, बान, खाटकी रस्सी।
बानप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो परन्तु स्त्री के साथरहे।
बाणा० ना० पु० मूंज।
बाणासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, राजाबलि का पुत्र।
बाणिज्य० ना० पु० ब्योपार, तिजारत, सौदागरी।
बाणी० ना० स्त्री० सरस्वती, आवाज।
बात० ना० स्त्री० वार्त्ता, बाणी, बचन, कारण, काज, समाचार, पवन।
बातकीबातमें० अव्य० अभी, तुरन्त।
बाती० ना० स्त्री० बत्ती, दीपक की वत्ती, छप्पर की बत्ती।
बातूनिया० } गु० बड़बड़िया, चचैत, बड़ा बतकहा, बकवादी।
बातूनी० }
बादल० ना० पु० मेघ।
बादला० ना० पु० सोनेरूपे का तारविशेष, लप्पा।
बादली० ना० स्त्री० लप्पा।
बादुर० ना० पु० चमगीदड़।
बाध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्सी।
बाधक० ना० पु० जोबाधकरे, प्रतिबन्धक, दुःखदाता।
बाधा० ना० स्त्री० दुःख, पीड़ा, अटकाव, रुकाव, मिथ्या, आफत।
बाध्य० गु० बाधने के योग्य।
बान० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यहमन तजत नहिं घुरबिनिया की बान, ना० पु० बाण, खाटबुनने की रस्सी।
बानगी० ना० स्त्री० नमूना, सरीखा, दृष्टान्त।
बानबे० गु० नब्बे और दो, ९२।
बाना० ना० पु० स्वभाव, ब्यवहार, अस्त्र विशेष, कपड़े की ब्योंत, भर्नी, भेष, निशानी, प्रतिज्ञा, फैलाना।
बानि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल।
बानिक० ना० पु० बनाव, चलाव, सजाव।
बानी० ना० स्त्री० बाणी।
बानीबोली० ना० स्त्री० बिनवाई।
बानूआ० ना० पु० जलपक्षीविशेष।
बानूसा० ना० पु० } वस्त्रविशेष।
बानूसी० ना० स्त्री० }
बानैत० गु० बानावाले, बानधारी, और धनुर्धर।
बान्धव० ना० पु० भाई, नतैत, सम्बन्धी।
बाप० ना० पु० पिता, जनक।
बापड़ा० ना० पु० बापुरो।
बापरो० } गु० तुच्छ, नीच, दीन, कंगाल, असमर्थ।
बापुरो० }
बाफ० ना० स्त्री० भाफ, बफारा।
बाबर० ना० पु० मिठाईविशेष।
बाबा० ना० पु० नानक, दादा, बूढ़ा, बालक संन्यासी।
बाबू० ना० पु० बालक, राजा, स्वामी।
बाम० ना० स्त्री० बामा, औरत।
बाह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।

बाह्मनी० ना० स्त्री० औषधि पौधाविशेष, कंजिया, ब्राह्मणी, अंजनहारी, कीटविशेष, छिपकली।

बायन० ना० पु० व्योहारी, मिठाई आदि जो मित्रों के घर भेजते हैं।

बायब० गु० दूसरा, अलग, ना० पु० वायु कोण।

बायव्य० ना० पु० वायुकोण।

बायां० गु० बामा, दक्षिणांग के विपरीत अंग।

बायो० क्रि० फैलाया, पसारा।

बार० ना० पु० द्वार, दिन, बालक, बाल, ना० स्त्री० समय, घात, बाला, स्त्री।

बारण० } ना० पु० हाथी, निवारण, सन्नाह।
बारन० } रुकावट, बचाना, न्योछावर।

बारना० अ० क्रि० खिण्डना, बिलगना, स०क्रि० निषेध करना, जलाना।

बारनारि० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया॥

बारम्बार० अव्य०बारबार, प्रतिक्षण, घड़ीघड़ी।

बारह० गु० द्वादश, १२।

बारहखड़ी० } ना० स्त्री० द्वादश मात्रा जो
बाराखरी० } व्यंजनों में मिलाकर बालकोंको पढ़ाते हैं।

बारासिंगा० ना० पु० कन्दसार, मृगविशेष।

बाराह० ना० पु० शूकर।

बाराहीबेर० ना० पु० नेत्रबाला।

बारी० ना० स्त्री० बाड़ी, झरोखा, बिनब्याही कन्या, ओसरी, नौबत, ना० पु० जातिविशेष, दाव, बाला, ना० स्त्री० बाली।

बारूत० ना० स्त्री० बारूद जिससे बन्दूक चलाते हैं।

बारे० ना० पु० बच्चे, लड़के।

बाल० ना० पु० सिरोरुह, बालक, बाली, मूर्ख, गूंगा, बाला, दरार, चाक, रामायणका प्रथम काण्ड।

बालक० ना० पु० लड़का, नेत्रबाला औषधि।

बालकता० } ना० स्त्री० लड़काई।
बालकपन० }

बालका० ना० पु० योगी वा संन्यासीका चेला।

बालछड़० ना० स्त्री० औषधि वा सुगन्धिविशेष।

बालतोड़० ना० पु० बलतोड़।

बालतृक० ना० पु० कत्था, खैर।

बालदशा० ना० स्त्री० बालकता।

बालना० स० क्रि० जलाना, सुलगाना।

बालपत्र० ना० पु० जवासा।

बालबच्चे० ना० पु० लड़केबाले।

बालभाव० ना० पु० लड़काई, बालकता।

बालभोग० ना० पु० प्रातःकाल जो श्रीकृष्णचन्द्रजीके निमित्त भोग लगाते हैं।

बालम० ना० पु० प्रियतम, पति, कपड़ाविशेष।

बालमूल० ना० पु० मूली।

बालरांड़० ना० स्त्री० जो बालकपन से विधवा है।

बाला० ना० स्त्री० सोलह वर्षतक की कन्या, युवती, पौधाविशेष, जूही, ना० पु० कानमें पहरने का भूषण, बालक।

बालापन० ना० पु० लड़कपन, बालकता।

बालिक्य० ना० पु० मांई औषधि।

बाली० ना० स्त्री० लड़की, गेहूं आदिकी फली, कानमें पहरनेका भूषणविशेष।

बालुक० ना० पु० एलुवा, मुसब्बर।

बालुका० ना० स्त्री० बालू, रेत।

बालुकामय० गु० रेतीला, रेतला, किरकिरा।

बालू० ना० स्त्री० रेत, रेणु।

बालूचर० ना० पु० गांजाविशेष।

बाल्मीक० ना० पु० मुनिविशेष, रामायणकर्त्ता।

बाल्य० } ना० स्त्री० लड़काई, बाल-
बाल्यावस्था० } कता।

बाल्हिक० ना० पु० घोड़ा।

बाल्हीक० ना० पु० हींग देशविशेष।

बाव० ना० पु० वायु।

बावग० ना० पु० बोवाई, बोआरा।

बावगोला० ना० पु० वायुशूल।

बावभक० गु० गप्पी, बकी।

बावड़ी० ना० पु० बड़ाकूप।
बावबतास० ना० स्त्री० दैवग्रस्त, दुर्गति, आपदा।
बावन० गु० पचास और दो, ५२ छोटा, ना० पु० श्रीविष्णुनारायण का पांचवां अवतार।
बावर० गु० बावला, अनाड़ी, बकवादी, अधर्मी।
बावरि० ना० स्त्री० मृगबन्धनी, बागुरि, गु० सिड़न।
बावला० गु० विक्षिप्त, सिड़ी।
बावली० ना० स्त्री० बड़ाकूप, धोवा, छल-सिड़न।
बावसड़ना० अ० क्रि० पादना, गुदा से पवन का निकलना।
बावशूल० ना० पु० वायुशूल, पेटमें रोगविशेष।
बास० ना० पु० बसने का स्थान, ठांव, ना० स्त्री० गन्धि, महक।
बासन० ना० पु० बरतन, पात्र।
बासना० स० क्रि० सोंधाना, महकाना, ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि।
बासन्ती० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
बासा० ना० पु० बूटी प्रसिद्ध, रहनेकास्थान।
बासित० गु० सुगन्धित कपड़े पहनेहुये।
बासी० गु० भोजनादि जो कलकापका है, महकीला, बासयुत।
बाह० ना० पु० घोड़ा।
बाहक० ना० पु० बहनेहारा।
बाहन० ना० पु० वाहन, सवारी।
बाहना० स० क्रि० अस्त्रचलाना वा फेकना, भैंस का गर्भित वा प्रसंगित होना।
बाहर० अव्य० बहिः, परदेश।
बाहिनी० ना० स्त्री० सेना।
बाहु० ना० स्त्री० भुजा, बांह।
बाहुदा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से निकलती है।
बाहुदेना० अ० क्रि० हाथ पकड़ना।
बाहुमुख० ना० पु० हाथ।
बाहुयुद्ध० ना० पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती।
बाहुलेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
बाहुलय० ना० पु० } आधिक्य, अधिकाई,
बाहुलयता० ना० स्त्री० } बहुतायत।
बिआरी० ना० स्त्री० बयाल, सायंकालका भोजन।
बिंजन० ना० पु० व्यंजन।
बिक० ना० पु० हुण्डार, भेड़िया।
बिकट० गु० कठिन, भयानक, भयंकर, टेढ़ा, प्रबल।
बिकना० अ० क्रि० खपना, बिकजाना।
बिकरार० } गु० भयानक, भोंड़ा, भयंकर,
बिकराल० } टेढ़ा, डरौना, कठिन।
बिकल० गु० व्याकुल, निरिथर, घबड़ा।
बिकलता० स्त्री० } व्याकुलता, घबड़ाहट, बेचै-
बिकलत्व० पु० } नी, निस्थिरता।
बिकलित० गु० व्याकुल, घाबड़ा, बेचैन।
बिकलप० ना० पु० विचार, मन्सूबा, तर्क।
बिकसन० ना० पु० प्रकाश, हर्ष, फूलन।
बिकसना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हर्षित होना।
बिकसित० गु० प्रफुल्लित, हर्षित, फूलाहुआ।
बिकसोभरण्डा० ना० पु० भँजीठ।
बिकाऊ० गु० बिकनेहारा।
बिकाना० अ० क्रि० बिकजाना, स० क्रि० बेचवाना।
बिकाव० ना० स्त्री० बिक्री।
बिकास० ना० पु० प्रकाश, फैलाव, दिखलावा, हर्ष, आनन्द।
बिक्री० ना० स्त्री० खपन, कटनी, भाव, बेचना, चर्वित, कटित।
बिखरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना, क्रोधित होना।
बिगड़ना० अ० क्रि० नाश वा भ्रष्ट होना, झगड़ना,
बिगड़ी ना० स्त्री० लूट, लूट, लड़ाई।

बिगसन॰ ना॰ पु॰ बिकसन, खिलना।

बिगसना॰ अ॰ क्रि॰ बिकसना, खिलना, फूलना।

बिगहा॰ ना॰ पु॰ बीघा।

बिगाड़॰ ना॰ पु॰ भंगता, तोड़, लड़ाई झगड़ा।

बिगाड़ना॰ स॰ क्रि॰ नसाना, टोटा देना, मित्रों में लड़ाई कराना।

बिगोना॰ स॰ क्रि॰ भुलाना, छुराना, भ्रष्टकरना।

बिघन॰ ना॰ पु॰ विघ्न।

बिच॰ अव्य॰ बीच।

बिचकना॰ अ॰ क्रि॰ निराशहोना, भागजाना, अंगीकार करके बदलजाना।

बिचकाना॰ स॰ क्रि॰ निराशकरना न मानना, वचन तोड़ना।

बिचल॰ गु॰ चलायमान, मचल।

बिचलना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, घूमना, चलना, बिछलना।

बिचली॰ गु॰ भागी, घूमी, घबड़ानी।

बिचवई॰ ना॰ पु॰ बिचवानी, जामिन।

बिचार॰ ना॰ पु॰ विचार, सोच, बूझ, ध्यान।

बिचारक॰ ना॰ पु॰ विचारी, सोची, बूझने हारा, न्यायक।

बिचारना॰ स॰ क्रि॰ सोचना, ध्यानकरना, यांचना, समझना।

बिचारित॰ गु॰ सोचाहुआ, विचाराहुआ, बूझा, समझा।

बिचारी॰ गु॰ विचारी, विचारक।

बिचाली॰ ना॰ स्त्री॰ पोआरवाल।

बिचौलिया॰ ना॰ पु॰ मध्यस्थ, तिसरैत।

बिच्छू॰ ना॰ पु॰ वृश्चिक, जन्तुविशेष।

बिछना॰ अ॰ क्रि॰ फैलना, पसरना।

बिछरना॰ अ॰ क्रि॰ भिन्नहोना, जुदाहोना।

बिछराहट॰ ना॰ स्त्री॰ भिन्नता।

बिछर्ना॰
बिछलना॰ } अ॰ क्रि॰ खिसलना, फिसलना, भिन्न भिन्नहोना, बिलगना।

बिछवाना॰ स॰ क्रि॰ फैलाना, पसराना।

बिछाना॰ स॰ क्रि॰ फैलाना, पसारना।

बिछुआ॰ ना॰ पु॰ कटारविशेष, पैरोंकाभूषण।

बिछुड़ना॰ अ॰ क्रि॰ बिछलना।

बिछुरन॰ ना॰ पु॰ वियोग, जुदायगी।

बिछुरना॰ अ॰ क्रि॰ वियोगहोना, जुदाहोना।

बिछोना॰ स॰ क्रि॰ भिन्नकरना, बिलगाना।

बिछोह॰
बिछोहा॰ } ना॰ पु॰ वियोग, जुदायगी, विरह।

बिछौना॰ ना॰ पु॰ बिस्तर, सेज।

बिजना॰ ना॰ पु॰ पंखा, बेना।

बिजली॰ ना॰ स्त्री॰ विद्युत्, चंचला, वज्र।

बिजान॰ गु॰ अज्ञान, मूर्ख, जो कुछ नहीं जानता।

बिजायठ॰ ना॰ पु॰ बांहका गहनाविशेष।

बिजार॰ ना॰ पु॰ सांड़, बैल।

बिजाला॰ गु॰ बीज संयुक्त।

बिजया॰ ना॰ स्त्री॰ भंग, बूटी।

बिझकना॰ अ॰ क्रि॰ चौंकना, डरना, भाग जाना, बदलजाना।

बिझका॰ गु॰ चौंका, चौंकेल, भागा, डराभया।

बिझकाना॰ स॰ क्रि॰ चौंकाना, डरवाना, भगाना, न मानना, बदलना।

बिट॰ ना॰ पु॰ बीट, विष्ठा।

बिटचर॰ ना॰ पु॰ शूकर, घरैला।

बिटना॰ अ॰ क्रि॰ बिथुरना, छिटकना, गिर जाना।

बिटप॰ ना॰ पु॰ वृक्ष का नया कैल, पल्लव, पसराव, गुच्छा।

बिटाना॰ स॰ क्रि॰ छिटकाना, बिथराना, गिराना।

बिठाना॰ स॰ क्रि॰ बैठाना।

बिडकन॰ ना॰ पु॰ बटेरादि पक्षी, रामचन्द्रिकायां यथा, बिडकनघन घूरे भक्षि के बाज जीवे।

बिडरना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना, डरजाना।

बिडार० ना० पु० बनबिलाव, भगौड़ा।
बिडारना० स० क्रि० भगाना, बिचलाना, डराना।
बिडारी० गु० भगाई।
बिडौजा० ना० पु० इन्द्र।
बिढ़ई० ना० स्त्री० कमाई, फायदा उठाया, बिसनौटी।
बित्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य।
बितना० अ० क्रि० व्यतीत होना, गु० छोटा ना० पु० बितस्ति, बालिश्त।
बिततानी० गु० घबरानी, बिललानी।
बितरना० स० क्रि० देडालना, दान करना।
बिताना० स० क्रि० गँवाना, काटना, व्यतीत करना।
बितीत० ना० पु० व्यतीत।
बित्त० ना० पु० वित्त, धन, द्रव्य।
बित्ता० ना० पु० बितस्ति, बालिश्त।
बित्तिया० ना० पु० बौना, बांटा, ठुमका।
बिथरना० अ० क्रि० छिटकना, बिखरना।
बिथराना० स० क्रि० खिण्डाना, छिटकाना, छिड़काना, बिखराना।
बिथा० ना० स्त्री० पीड़ा, आपदा।
बिथुरना० अ० क्रि० बिथरना, पसरना।
बिथुरा० ना० पु० दुःख, पीड़ा गु० छिटकाहुआ।
बिदरना० अ० क्रि० फरना, चिरना।
बिदा० ना० स्त्री० रुखसत करना।
बिदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना।
बिदारना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
बिध० ना० स्त्री० विधि।
बिधना० ना० पु० विधाता, ब्रह्मा।
बिधावट० ना० स्त्री० साल, छेद।
बिन० अव्य० विना।
बिनती० ना० स्त्री० विनय, प्रार्थना, बड़ाई करना।
बिनना० अ० क्रि० बिनजाना।
बिनवाई० ना० स्त्री० बिनाई।

बिनसना० अ० क्रि० नशाना, बिगड़ना।
बिना० अव्य० रहित, बिन।
बिनाई० ना० स्त्री० बिनने का काम वा पैसा।
बिनाना० स० क्रि० बिनवाना, उठाना।
बिनावट० ना० स्त्री० बिनने का काम।
बिनु० अव्य० रहित, छोड़ि।
बिनौना० स० क्रि० बिनती करना अरचना पूजना, भजना, छांटना।
बिनौला० ना० पु० रुईका बीज।
बिनौली० ना० स्त्री० छोटाओला जो आकाश मार्ग से बरसता है।
बिन्द०
बिन्दी० } ना० स्त्री० बिन्दु।
बिन्धना० स० क्रि० डसना, डंकियाना, अ० क्रि० छिदना, फसना।
बिन्ना० स० क्रि० चुना, जाली निकालना, चुनना।
बिपत०
बिपता०
बिपति० } ना० स्त्री० विपत्ति, आफत।
बिफनी० अ० क्रि० चिढ़ना, दुःखित होना। मगरा, हठीला वा ढीठहोना।
बिया० ना० पु० बीज।
बियारी०
बियालू० } ना० स्त्री० सायङ्काल का भोजन, पश्चात् का भोजन।
बियाह० ना० पु० विवाह।
बिरकट० ना० पु० योगीविशेष, गु० जिसका मन उच्चाटित है।
बिरचन० ना० पु० बेरका आटा।
बिरद० ना० पु० यश, स्तुति, बीरबाना और हथियार।
बिरदावलि० ना० स्त्री० सुयश, स्तुति।
बिरमना० अ० क्रि० रहना, बिलम्बकरना।
बिरमाना० स० क्रि० ठहराना, अटकाना अपने वश में करना।
बिरवा० ना० पु० वृक्ष छोटा बूटा, पौधा।

बिरह॰ ना॰ पु॰ वियोग।

बिरहा॰ ना॰ पु॰ वियोग धोबियों का गीत विशेष।

बिरहित॰ गु॰ वियोगित।

बिरहिनी॰ गु॰ बिरहिनी, वियोगिनी।

बिरहिया॰ ना॰ स्त्री॰ बिरहनी।

बिरही॰ गु॰ जो पुरुष अपनी सजनीसे भिन्नहै।

बिराजना॰ अ॰ क्रि॰ प्रकाशित वा प्रज्वलित होना, स्वाधीन होके सुख भोग करना, शोभित होना, बैठना।

बिराट्॰ ना॰ पु॰ जगद्रूप, ईश्वर, जगत्, राजाधिराज, देशविशेष, राजाविशेष।

बिराना॰ गु॰ पराया, स॰ क्रि॰ चिढ़ाना, सताना।

बिराम॰ गु॰ व्याकुल, स्थिर, मांदा।

बिरिया॰ ना॰ स्त्री॰ समय, जून।

बिर्नी॰ ना॰ स्त्री॰ वर।

बिल॰ ना॰ स्त्री॰ सर्पादि जन्तुका घर वा छिद्र वा भट्टा वा भार।

बिकलना॰ अ॰ क्रि॰ सिसकना, कूकना, किसी वस्तुपर जी लगना।

बिलख॰ ना॰ पु॰ दुःख, अप्रसन्नता।

बिलखना॰ स॰ क्रि॰ देखना, निरेखना, विलोकना, अ॰ क्रि॰ सिसकना, अप्रसन्नहोना।

बिलखाय॰ } अ॰ क्रि॰ अप्रसन्नहोय, दुख
बिलखि॰ } मान।

बिलग॰ गु॰ अलग, भिन्न, ना॰ स्त्री॰ भिन्नता, फूट, ईर्षा, बुराई।

बिलगना॰ अ॰ क्रि॰ अलग २ होना, फटना, फूटना, जमना, दुखना।

बिलगाना॰ स॰ क्रि॰ भिन्न २ करना, फोड़ना, बिछोड़ना।

बिलगाव॰ ना॰ पु॰ भिन्नता, बिछुराहट, असहता।

बिलगाही॰ अ॰ क्रि॰ अलग होजावे।

बिलगना॰ स॰ क्रि॰ चढ़ावकरना, चढ़ना।

बिलनी॰ ना॰ स्त्री॰ अंजनहारी।

बिलपना॰ अ॰ क्रि॰ रोना, विलापकरना।

बिलपाना॰ स॰ क्रि॰ रोआना, विलापकराना।

बिलबन्द॰ ना॰ पु॰ निपटारा, निस्तोष।

बिलबिलाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुलहोना, पीड़ासे दुःखितहोना, हायहायकरना, तड़पना।

बिलम्ब॰ ना॰ पु॰ देरी, ढील, टाल मटोल, शिथिलता।

बिलम्बना॰ अ॰ क्रि॰ ढीलकरना, अटकना।

बिलम्भ॰ ना॰ पु॰ विलम्ब।

बिलम्भना॰ अ॰ क्रि॰ बिलम्बना।

बिललाना॰ अ॰ क्रि॰ बिलबिलाना।

बिलसना॰ } अ॰ क्रि॰ भोगना, तृप्तहोना, आनन्दित होना।

बिलस्त॰ ना॰ पु॰ बित्ता, बिलस्त।

बिलहरा॰ ना॰ पु॰ पान रखने का पात्र।

बिलहरी॰ ना॰ स्त्री॰ पली, छोटा बिलहरा।

बिलाई॰ ना॰ स्त्री॰ बिल्ली, कद्दूककड़ी आदि रगड़ने की लोहे की वस्तु।

बिलाईकंद॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष।

बिलाना॰ अ॰ क्रि॰ अलोपना, मिटना, भटकना, स॰ क्रि॰ अलोप कराना, उड़ाना, बांटना, खोना।

बिलाप॰ ना॰ पु॰ विलाप, हाहाकार।

बिलापना॰ अ॰ क्रि॰ रोकना, कूकना, हाहाकार करना।

बिलार॰ ना॰ पु॰ मार्जार, पशुविशेष, बिलौटा।

बिलाव॰ ना॰ पु॰ बिलार।

बिलावल॰ ना॰ पु॰ रागिनीविशेष।

बिलास॰ ना॰ पु॰ विलास, आनन्द।

बिलासी॰ गु॰ विलासी।

बिलास॰ ना॰ पु॰ विलास, हर्ष, तृप्ति, क्रीड़ा, सुखभोग।

बिलासी॰ गु॰ सुखभोगी, आनन्दी, सर्प।

बिलोकना॰ स॰ क्रि॰ देखना, निरेखना।

बिलोना०
बिलोवना० } स० क्रि० मथना,महना।

बिलौटा० ना० पु० विलार।

बिलौड़िया० ना० स्त्री० बिल्ली।

बिल्ला० ना० पु० बिलार, बिलाव।

बिल्ली० ना० स्त्री० बिलाई, बिल्ली।

बिल्लीलोटन० ना० पु० बिलाईकन्द औषधि विशेष।

बिस० ना० पु० विष।

बिसखपरा० ना० पु० औषधि पौधाविशेष, जन्तुविशेष जो गोहके सदृश होता है।

बिसखोपरा० ना० पु० जन्तुविशेष जो गोह के सदृश होता है।

बिसन० ना० पु० दोष, पाप, बुराई, काम, कामना।

बिसनपन० ना० पु० छैलपन, लुचपन।

बिसनी० ना० पु० लुच्चा, लम्पट, गु० सुघड़, छैल, छिछोर।

बिसबिसाना० अ० क्रि० बजबजाना, सड़ी हुई वस्तु से शब्द निकलना।

बिसमार० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।

बिसर० ना० पु० चूक, भूल।

बिसरा० गु० भूलाहुआ, चूकाहुआ।

बिसराना० स० क्रि० भुलाना, बहकाना।

बिसर्ना० अ० क्रि० भूलना भटकना।

बिसात० ना० स्त्री० मूल, पूजी।

बिसांध०
बिसांयध० } ना० स्त्री० कुबास, दुर्गंध।

बिसांसी० ना० पु० विश्वासघाती।

बिसाना० स० क्रि० मोललेना, चलना पौरुष का, वश, क़ाबू।

बिसार्ना० स० क्रि० भुलाना।

बिसाह० ना० स्त्री० वस्तु जो मोलली, खरीद।

बिसाहना० स० क्रि० मोल लेना।

बिसुरना० अ० क्रि० सिसकाना, हुकना।

बिसेला० गु० विषधर, जहरीला।

बिस्तर०
बिस्तार० } ना० पु० विस्तार, बढ़ाव के कहना, ब्यौरेवाल चौड़ाव, आसार,

बिस्तुइया०
बिस्तुई० } ना० स्त्री० छिपकली।

बिहन० ना० पु० बीज।

बिह्वल० गु० व्याकुल, भयभीत, विह्वल।

बिहरना० अ० क्रि० रीझना, हुलसना, स० क्रि० भोग करना, रिझाना, फटना।

बिहरी० ना० स्त्री० चन्दा, दामशाही।

बिहसना० अ० क्रि० हँसना।

बिहाग० ना० पु० रागविशेष जो थोड़ी रातरहे पर गाया जाता है।

बिहान० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का, बीतगया।

बिहाना० अ० क्रि० काल काटना, बिताना, तजना, छोड़ना।

बिहाने० अव्य० सबेरे।

बिहार० ना० पु० क्रीड़ा, लीला, आनन्द, देशविशेष।

बिहारस्थल०
बिहारस्थली० } क्रीड़ा का घर, लीलाभवन, आनन्दगृह।

बिहारी० गु० खिलाड़ी, क्रीड़ाकर, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम।

बिहारीलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी,शतसई-कर्त्ता कविविशेष।

बिहून०
बिहूना० } अव्य० रहित, बिन, बिहून।

बी० अव्य० भी।

बींड़ा० ना० पु० लपेटाहुआ, काग़ज़, गट्ठा।

बींधना० स० क्रि० बेधना, छेदना।

बीघा० ना० पु० २० बिस्वा, बिगहा।

बीच० अव्य० मध्य में, अन्तर।

बीछी० ना० पु० बिच्छू।

बीज० ना० पु० वीर्य्य, अमर, जड़, मणी, कारण, सबब, किया।

बीजक० ना० पु० चलान, चिट्ठी, लेखा, विजय-सार, फिहरिस्त।
बीजना० ना० पु० पंखा, बेना।
बीजार० गु० बिजैला।
बीजी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष, नकुल।
बीझना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, खोदना।
बीट० ना० स्त्री० विष्ठा, गुह।
बीटना० अ० क्रि० छलकना, ढलना, बिथरना।
बीठ० ना० स्त्री० पक्षियों का विष्ठा।
बीठा० ना० पु० बिड़वा, एडुवा।
बीड़ा० ना० पु० लगायाहुआ पान।
बीतना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पूराहोजाना, गुजरना, होचुकना।
बीता० गु० गुजरगया, व्यतीत होगया, ना० पु० बितस्ति।
बीन० ना० स्त्री० वीणा, विद्याविशेष।
बीनना० स० क्रि० बुनना, उठाना।
बीमा० ना० पु० वस्तु को टोटे समेत पहुंचाने के लिये जो पैसा दियाजाता है, ठीका, हुंडा, भाड़ा यह शब्द फ़ारसी है।
बीर० ना० पु० भाई, वीर, कानका भूषण।
बीरता० ना० स्त्री० वीरता, मर्दुमी, शूरता।
बीरबहुट्टी० / **बीरबहूटी०** } ना० स्त्री० लालरंगका कीड़ा विशेष।
बीरा० ना० पु० बीड़ा, भाई।
बीरी० ना० स्त्री० बीड़ा।
बीर्य० ना० पु० वीर्य, पराक्रम।
बील० ना० पु० बिल्वफल।
बीस० गु० दो दहाई, २०।
बीसा० ना० पु० बीस नखका कुत्ता।
बीसी० ना० स्त्री० अन्नमापनेका परिमाणविशेष, गु० बीसकी।
बुन्दा० ना० पु० बिन्द।
बुन्दिया० ना० स्त्री० मिठाई वा भोजनविशेष।
बुन्देला० ना० पु० बुन्देलखण्डका राजपूत
बुकटा० / **बुकट्टा०** } ना० पु० नख, मूठीभर।
बुकनी० ना० स्त्री० चूर्ण, बूरा।
बुकलाना० अ० क्रि० आपीआप बकना,
बुक्का० ना० पु० बुकटा।
बुक्की० ना० स्त्री० गांती, मूठीभर।
बुजना० ना० पु० निहानी के कारण से जो वस्त्र स्त्रियां पहनती हैं।
बुजहरा० ना० पु० पानी गर्म करनेकापात्र।
बुझना० अ० क्रि० ठंढा होना।
बुझाना० स० क्रि० ठंढाकरना, समझाना, सुझाना।
बुड़ाना० स० क्रि० डुबाना।
बुड्ढा० गु० बूढ़ा, प्राचीन मनुष्य।
बुढ़भस० गु० जो बूढ़ा तरुणकी चालचले।
बुढ़वा० गु० बुड्ढा।
बुढ़ापा० ना पु० वृद्धावस्था।
बुढ़िया० गु० बूढ़ी स्त्री।
बुंडा० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
बुत० ना० पु० जुआ वा पचीसी खेलनेमें जिसपर पांसा फेंकते हैं धूंसा।
बुताना० स० क्रि० बुझाना।
बुत्ता० ना० पु० ठगाई, छल।
बुद्बुद० ना० पु० बुल्बुला।
बुदबुदाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना।
बुद्ध० ना० पु० पण्डित, चौथाग्रह, चौथावार, नवम अवतार।
बुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बूझ, सोच, अक़्ल।
बुद्धिमान्० गु० ज्ञानवान्, समझदार, चतुर, पण्डित।
बुद्धिहा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
बुद्धी० गु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान्।
बुध० ना० पु० चौथाग्रह, चन्द्रपुत्र, चौथादिन नवम अवतार जो गया में भया, पण्डित, देवता।

बुधबार० ना० पु० चौथावार ।
बुधि० ना० स्त्री० बुद्धि ।
बुन्द० ना० पु० बिन्दु, शून्य, कतरह ।
बुनना० स० क्रि० बिनना ।
बुभुक्षित० गु० भूखा ।
बुरभसिया० गु० बुढ़भस।
बुरा० गु० दुष्ट, लटा, खराब, अकर ।
बुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, खोट ।
बुर्ज० ना० पु० रस्सा, लासा ।
बुर्जरी० ना० स्त्री० स्त्रियों की गाली ।
बुर्जारी० ना० स्त्री० बुर्जरी ।
बुलबुला० ना० पु० बुल्ला ।
बुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष ।
बुलाना० स० क्रि० पुकारना, हांक देना, तलब करना ।
बुलाहट० ना० स्त्री० आवाहन ।
बुहनी० ना० स्त्री० अगवानी, पहिलीबिक्रीकानाम, बयानह ।
बुहरी० ना० स्त्री० भुनेहुये जौ ।
बुहारन० ना० स्त्री० झाड़न ।
बुहारना० अ० क्रि० झाड़ना ।
बुहारी० ना० स्त्री० झाड़ू ।
बुहारू० ना० पु० भंगी ।
बूआ० ना० स्त्री० बहिन, फूफी, माता ।
बूई० ना० स्त्री० लड़कों के डराने का शब्द ।
बून्द० ना० स्त्री० बिन्दु, टपकन, गु० भला, ऊंचा, लड़ाकू ।
बून्दा० ना० पु० बड़ीबूंद ।
बून्दी० ना० स्त्री० टपका, वर्षा की बूंद, मिठाई विशेष ।
बूकना० स० क्रि० पीसना, बुकनी करना ।
बूका० ना० पु० चूर्ण, छोटामोती, बुकनी ।
बूचा० ना० पु० जिसके कान नहीं, कनकटा ।
बूची० गु० स्त्री० कनकटी ।
बूझ० ना० स्त्री० समझ, बुद्धि ।
बूझना० अ० क्रि० समझना, जानना ।
बूट० ना० पु० हराचना, तरकारी ।
बूटा० ना० पु० पौधा, वृक्ष, फूल कपड़े का ।
बूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, औषधि, छोटा बूटा, बिरवा, भंग, बिजया ।
बूड़ना० अ० क्रि० डूबना ।
बूड़मरना० अ० क्रि० डूबमरना ।
बूड़िया० ना० पु० डूबनेहारा ।
बूत०, बूता० } ना० पु० बल, सामर्थ्य, पौरुष, ताकत ।
बूबू० ना० स्त्री० बहन, बीबी ।
बूर० ना० स्त्री० भूसी, छिलका ।
बूरा० ना० स्त्री० खांड़, लकड़ी की बुकनी, चूर्ण, यह शब्द फारसी का है ।
बे० अव्य० अरे ।
बेंट० ना० पु० हथकड़ा, दस्ता ।
बेंड़ा० पु० गु० टेढ़ा, बांका ।
बेंधना० स० क्रि० गूंथना, चुनना ।
बेग० ना० पु० वेग, ज़ोर ।
बेगवान्० गु० वेगवान्, ज़ोरवाला ।
बेगार० ना० पु० बरबस काम कराना ।
बेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बेगारकर्त्ता ।
बेगी० गु० वेगी ।
बेंग० ना० पु० मेढक, भेक ।
बेंचना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना ।
बेचू० गु० बेचनेवाला ।
बेजू० ना० पु० जन्तुविशेष ।
बेझा० ना० पु० निशाना, जिसपर तीर वा गोली का अभ्यास करते हैं ।
बेटा० ना० पु० पुत्र, लड़का ।
बेटी० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या ।
बेठन० ना० पु० वेष्टन, लपेटन ।
बेड़० ना० पु० बाड़ा, बियाबर, अम्बका ।
बेड़िया० ना० पु० जातिविशेष ।
बेड़ी० ना० स्त्री० पैकड़ा, जिसटोकरी से खेत सींचते हैं ।

बेड़ना० स० क्रि० बाड़ाबांधना, छेकना, हकारना, लाभउठाना, छीनलेना, कमाना, चुराना।
बेत० ना० पु० वेत्र, छड़ी, आकाश।
बेद० ना० पु० वेद।
बेदगिरा० ना० पु० वेदवाणी।
बेध० ना० पु० छेद, सूराख।
बेधक० गु० छेदनेवाला।
बेधड़क० गु० निधड़क।
बेधना० स० क्रि० छेदना।
बेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी।
बेधा० ना० पु० ब्रह्मा, खराफूल।
बेधी० ना० पु० वेधक।
बेन० ना० स्त्री० बांसुरी, वंशी।
बेना० ना० पु० पंखा, खस खस।
बेनी० ना० स्त्री० जूड़ा, चोटी, किवाड़काएक काठविशेष।
बेर० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, ना० स्त्री० बार, विलम्ब, वेला।
बेरबेर० अव्य० बारंबार।
बेरभयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, मृतककी रात।
बेरी० ना० स्त्री० बेरका वृक्ष।
बेरे० ना० पु० नाव, जहाज।
बेल० ना० पु० बिल्वफल, पुष्पविशेष, बेलि।
बेलन० ना० पु० रोटी बेलने की वस्तु।
बेलना० स० क्रि० फैलाना० ना० पु० बेलन।
बेलनी० ना० पु० टहनी।
बेलबूटा० ना० पु० झाड़ी, लताविशेष।
बेला० ना० पु० पुष्प विशेष, कटोरा, बेला।
बेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पौधा आप से खड़ा न होसके।
बेसन० ना० पु० चनेका आटा।
बेसनी० ना० स्त्री० बेसनसे बनीहुई।
बेसनौटी० ना० स्त्री० बेसनकी रोटी।
बेसर० ना० स्त्री० नथनी।
बेसरा० ना० पु० पक्षीविशेष।
बेसवा० ना० स्त्री० वेश्या।
बेह० ना० पु० छिद्र, साल।
बेहड़० ना० स्त्री० पृथ्वी जहांऊंची नीचीहो।
बैंगन० ना० पु० भांटा, तरकारीविशेष।
बैंगनी० } गु० रंग जो बैंगन के समान हो,
बैंजनी० } पिंगल।
बैंदी० ना० स्त्री० टिकुली।
बैठक० ना० स्त्री० } बैठनेकास्थान, चौपाड़, बैठ-
बैठका० ना० पु० } ने की चाल वा रीति।
बैठना० अ० क्रि० आसन मारना।
बैठवा० गु० चपटा, चौपट।
बैठा० ना० पु० चप्पू, डांड़।
बैठाना० } स० क्रि० स्थापन कराना।
बैठालना० }
बैतरा० ना० स्त्री० सोंठिविशेष।
बैतरणी० ना० स्त्री० नरकमार्ग की नदी।
बैदिक० ना० पु० वैदिक, वेदका जाननेवाला।
बैन० ना० पु० वचन, वाणी, बनसी।
बैनतेय० ना० पु० बिनताके पुत्र गरुड़, अरुण।
बैना० ना० पु० माथेपरका भूषणविशेष, पकवान जो विवाह आदि में बांटते हैं, ब्यौहारी, पवन।
बैपार० ना० पु० ब्यापार, तिजारत।
बैपारी० ना० पु० सौदागर, ताजिर ब्योपारी।
बैर० ना० पु० वैर, दुशमन।
बैरख० ना० स्त्री० झंडी, ध्वजा, पताका।
बैरागी० ना पु० वैरागी, जिसको वैराग्यहो।
बैल० ना० पु० वृषभ, बरध।
बैस० ना० पु० आयुर्दा, वयः, वैश्य, राजपूतों में जातिविशेष।
बैसन्दर० ना० पु० आग।
बैसांडु० गु० आसकती, मक्खीमार, घर में बैठनेहारा।
बोआई० ना० स्त्री० बोने का काम, बोने का समय।

बोआना० स० क्रि० बीजडलवाना,बसाना।
बोआरा० ना० पु० बोने का समय।
बोंट० ना० पु० डांट, डटा, डाली।
बोक०, बोकड़ा०, बोकरा० } ना० पु० बकरा, अज।
बोकरी० ना० स्त्री० बकरी।
बोच० ना० पु० मगर, कुम्भीर।
बोचा० ना० गु० पालकी विशेष, बूचा।
बोझ० ना० पु० भार, लौदी।
बोझना० स० क्रि० लादना।
बोझल०, बोझेल० } गु० लदा, भरा।
बोटी० ना० स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।
बोतू० ना० पु० बकरा।
बोदली० ना० स्त्री० भोली, गेगली।
बोदा० गु० निर्बल, आसक्त, भोला, गेगला।
बोद्धा० गु० बुद्धिमान्।
बोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनौती, धीरज।
बोधक० ना० पु० जिससे ज्ञानहो, बोधकर्त्ता।
बोधना० स० क्रि० फुसलाना, समझाना।
बोना० स० क्रि० बीजडालना।
बोनी० ना० स्त्री० बोनेका समय।
बोर० ना० पु० पाजेब के घुंघरू।
बोरा० ना० पु० गोन, गठिया, लोथा, टाट का थैला।
बोरी० ना० पु० रामधनुष, चावल विशेष।
बोल० ना० पु० शब्द, गीतका शब्द, बात।
बोलचाल० ना० स्त्री० बात चीत।
बोलता० ना० पु० प्राण,जीव, बोलने की शक्ति।
बोलना० अ० क्रि० बातकरना, कहना, बजना।
बोलबाला० ना० पु० आशीर्वादविशेष।
बोली० ना० स्त्री० वाणी, भाषा, बात।
बौंड़० ना० पु० बेलि, लता।
बौंड़ना०, बौंड़ियाना० } अ० क्रि० लिपटना, घूमना, भवँर, स्यान।
बौंड़ी० ना० स्त्री० बेलि, लता।
बौछार० ना० स्त्री० वायुसहित बड़ी वृष्टि वा जो वायु के झकोड़ से बूंदें घरमें चलीआती हैं।
बौद्ध० ना० पु० बुधका मतावलम्बी।
बौना० गु० छोटा, बावन, नाटा।
बौनी० ना० स्त्री० ठिंगनी,बोनेका समय वा काम।
बौरहा० गु० बौराहा।
बौरा० गु० गूंगा, मूक।
बौराना० अ० क्रि० बावला होना।
बौरापन० ना० पु० सिड़पन।
बौराहा० गु० बावला, सिड़ी।
बौला० गु० पोपला, मुर्ला।
बौहा० गु० पथरीला।
बौहाई० ना० स्त्री० जिस स्त्रीको गर्मी का रोगहै।
ब्यान० ना० पु० पश्वादि का प्रसव।
ब्याना० अ० क्रि० जन्मना, उत्पन्न होना।
ब्याह० ना० पु० विवाह।
ब्याहता० गु० विवाहिता।
ब्याहनयोग० गु० जो ब्याहने के योग्य है।
ब्याहना० स० क्रि० विवाह करना।
ब्याहा० गु० विवाहित, जिसका विवाह होगया।
ब्योंगा० ना० पु०, ब्योंगी० स्त्री० } चमड़ा छीलनेका अस्त्र।
ब्योंत० ना० पु० गढ़न, डौल, रीति, ढब।
ब्योंतना० स० क्रि० कपड़े को डौलियाना वा बनाना।
ब्यौरा० ना० पु० भेद, वृत्तान्त, बखान,अन्तर।
ब्योपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत,सौदागरी।
ब्योपारी० गु० व्यापारी, ताजिर, सौदागर देशावरी।
ब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर, जगत् का कारण ब्रह्मा, वेद, देवता, जीव, कुल।
ब्रह्मअस्त्र० ना० पु० ब्रह्माजीका अस्त्र विशेष।
ब्रह्मकाष्ठ० ना० पु० शहतूत, तूत।

ब्रह्मगिरा॰ ना॰ स्त्री॰ आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी।

ब्रह्मघोष॰ ना॰ पु॰ जहां वेद पढ़ाया वा पढ़ा जाता है, वेदपाठशाला।

ब्रह्मचर्य्य॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मचारी का व्यवहार।

ब्रह्मचारी॰ ना॰ पु॰ प्रथमाश्रमी, ईश्वरपूजक।

ब्रह्मदारु॰ ना॰ पु॰ शहतूत।

ब्रह्मदैत्य॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्मन॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मण।

ब्रह्मपादप॰ ना॰ पु॰ ढांकका वृक्ष।

ब्रह्मपुत्र॰ ना॰ पु॰ नदविशेष, ब्रह्माका पुत्र।

ब्रह्मबान॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मास्त्र।

ब्रह्मभवन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्माका स्थान।

ब्रह्मभुवन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्माका लोक।

ब्रह्मभोज॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणोंको भोजनदेना।

ब्रह्ममेखला॰ ना॰ स्त्री॰ मूंज।

ब्रह्मरन्ध्र॰ ना॰ पु॰ मस्तकका मध्यस्थान।

ब्रह्मरात्रि॰ ना॰ स्त्री॰ ब्रह्माकी रात जो सहस्र चतुर्युगी होती है।

ब्रह्मराक्षस॰ ना॰ पु॰ प्रेत विशेष, लूका।

ब्रह्मवाद॰ ना॰ पु॰ वेदान्तकथन।

ब्रह्मवादी॰ ना॰ पु॰ वेदान्ती।

ब्रह्मविचार॰ ना॰ पु॰ वेदान्तविद्या, अध्यात्मज्ञान।

ब्रह्मलोक॰ ना॰ पु॰ लोकविशेष जहां ब्रह्माजी का निवासस्थान है।

ब्रह्मश्रव॰ ना॰ पु॰ वेद।

ब्रह्मसूत्र॰ ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत, जनेऊ।

ब्रह्महत्या॰ ना॰ स्त्री॰ ब्राह्मणकी हत्या।

ब्रह्मज्ञान॰ ना॰ पु॰ ईश्वरतत्त्वज्ञान, परमज्ञान, आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।

ब्रह्मा॰ ना॰ पु॰ देशविशेष जो पूर्व में है वा उस देश के राजा की जातिविशेष, विधाता, सृष्टिकर्त्ता।

ब्रह्माचारी॰ ना॰ पु॰ ईश्वरपूजक, ब्रह्मविचारी।

ब्रह्माण्ड॰ ना॰ पु॰ जगत्, संसार, शिरकीहाड़।

ब्रह्मानन्द॰ ना॰ पु॰ निज स्वरूपानन्द, आत्मानन्द।

ब्रह्माणी ना॰ स्त्री॰ सरस्वती।

ब्राह्मण॰ ना॰ पु॰ प्रथम वर्ण।

ब्राह्मणी॰ ना॰ स्त्री॰ ब्राह्मण की स्त्री।

ब्राह्मण्य॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवां ग्रह।

ब्राह्मी॰ ना॰ स्त्री॰ संहिताविशेष, सरस्वती, बासा औषधि।

ब्राह्म्य॰ ना॰ पु॰ अचम्भा, आश्चर्य्य, ब्राह्मणों की सभा।

ब्राह्ममुहूर्त्त॰ ना॰ पु॰ सूर्योदय से पहले चार घड़ी पोह,पह।

[भ]

भ॰ ना॰ पु॰ नक्षत्र, राशि।

भंवर॰ ना॰ पु॰ भौंरा, चकर।

भंवर॰
भंवरा॰ } ना॰ पु॰ अलि, लता, भ्रमर।

भंवेरी॰
भंबीरी॰ } ना॰ स्त्री॰ तीतरी, पतंगाविशेष।

भंबोरना॰ स॰ क्रि॰ काटना, काटखाना।

भकसी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी में गुफा, अंधेरी।

भकुवा॰ गु॰ निर्बुद्धि, मूर्ख, अहमक।

भकुवाना॰ अ॰ क्रि॰ निर्बुद्धि होना, उल्लू होजाना।

भकोसना॰ स॰ क्रि॰ खालेना, ढुकसना।

भक्त॰ ना॰ पु॰ अर्चक, सेवक, उपासक, भात, गु॰ धर्मी, चाहक।

भक्तवत्सल॰ ना॰ पु॰ भक्तप्रिय, श्रीभगवान्।

भक्ता॰ ना॰ पु॰ भक्त।

भक्ताई॰ ना॰ स्त्री॰ भगताई, सेवकाई, भक्ति, धर्म।

भक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ मत, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा।

भग॰ ना॰ स्त्री॰ योनि, बुर, सुभाग, ऐश्वर्यादि गुण, ना॰ पु॰ सूर्य, भागवते यथा, धाता

विधाता वरुणोअर्यमा सविता भगः।
भगण० ना० पु० त्र्यक्षरीगणविशेष, जिस में आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राघव।
भगत० ना० पु० भक्त।
भगतन० ना० स्त्री० भगत की स्त्री वा वेश्या।
भगताई० ना० स्त्री० भगतपन।
भगतिया० ना० पु० भवैया, कथिक, राधा, जाति।
भगन्दर० } ना० पु० गुदा में रोग विशेष।
भगन्धर० }
भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी।
भगर० ना० पु० भगल।
भगल० ना० पु० छल, कपट, फरेब, इन्द्रजाल।
भगवत० ना० स्त्री० भागवत।
भगवती ना० स्त्री० माया, आदिशक्ति, ईश्वरी।
भगवन्त० ना० पु० भगवान्।
भगवां० ना० पु० गेरुवावस्त्र।
भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसंयुक्त, तेजस्वी, प्रतापवान्, ईश्वर।
भगाना० स० क्रि० हँकाना, चलाना, दूरकरना।
भगीरथ० ना० पु० राजाविशेष जो श्रीगंगाजी को स्वर्ग से लाया।
भगेल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भगोड़ा।
भगोड़ा० ना० पु० भागने हारा।
भग्गुल० ना० पु० दूत, हरकारह, भग्गू।
भग्गू० ना० पु० भगोड़ा।
भग्न० गु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा।
भंकार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द।
भंग० ना० पु० खण्डन, तोड़, लहर, पराजय, भांग गु० भग्न।
भंगड़ा० ना० पु० जड़ीविशेष, भृंगराज।
भंगड़ी० गु० भांग पीनेहारा।
भंगन० ना० स्त्री० भंगी की स्त्री।
भंगना० ना० स्त्री० मछलीविशेष।
भंगा० ना० स्त्री० भांग, पक्षी विशेष।
भंगार० ना० पु० भंगरा, भंगड़ा।
भंगी० ना० पु० भंगड़ी, मिहतर, चुहड़ा, गु० नाशक, मेटनेवाला।
भंगेरन० ना० स्त्री० भंग की बेचनेहारी।
भंगेरा० ना० पु० भंग बेचनेहारा।
भंगेला० ना० पु० भंग के त्वचाओं का वस्त्र विशेष।
भचक० गु० घाबड़ा, विस्मित, अचम्भित।
भचकना० अ० क्रि० अचम्भित वा विस्मित होना।
भचक्र० ना० पु० दौरह, चालभर, निजगति पर्यन्त।
भजन० ना० पु० अर्चा, पूजन, सेवन और नौविधि ईश्वर का यशगाना।
भजना० स० क्रि० अर्चा वा पूजा वा सेवा, जप करना अ० क्रि० भागना।
भजनी० गु० भजन करनेहारा।
भजनीक० ना० पु० अर्चक, भजन करनेहारा।
भजामि० स० क्रि० भजताहूं, ध्यावताहूं।
भजजाना० अ० क्रि० भागजाना।
भजिज० अ० क्रि० भागकर।
भज्य० अ० क्रि० भागके, बांटके।
भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन, तोड़न।
भञ्जाना० स० क्रि० तोड़ाना, भुनाना, बदलाना।
भट० ना० पु० योधा, शूरवीर, धिक्कार, तनूर।
भटई० ना० स्त्री० भाट की स्तुति, भाट का काम।
भटकना० अ० क्रि० भूलजाना, भ्रमना, चूकना, टपना।
भटका० गु० भूलाहुआ, भूला, चूका, भ्रमित।
भटभेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मुलाकात।
भटकाना० स० क्रि० बहकाना, भुलाना, भड़काना।
भटकीला० गु० जिसमें भटका पायाजावे।

भटाई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, भटई।

भट्ट० ना० स्त्री० सखी, निधीसिंह प्रकाशे, देखिके भट्टको मैं लट्टू हैरहो शिवनाथ ओढ़े पीत पट्ट सो अटापै बालठाढ़ी है।

भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, पण्डित, दक्षिणीब्राह्मणों का आस्पद, भट।

भट्टाचार्य्य० ना० पु० पण्डितों में जो सब से बड़ाज्ञानवान् बंगाले के ब्राह्मणों का उपनाम वा आस्पद।

भट्टी० ना० स्त्री० चूल्हाविशेष।

भठियारपन० ना० पु० भठियारे का काम।

भठियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने द्वारा, जातिविशेष।

भठियारन० ना० स्त्री० भठियारे की स्त्री।

भठियाल० गु० जो नदी की धारापर से बहे।

भड़० ना० पु० बड़ी नाव विशेष।

भड़क० ना० स्त्री० चटक, झलक, घबराहट, झझक, चौंक।

भड़कना० अ० क्रि० झिझकना, चौंकना, आंच उठना, जलउठना।

भड़काना० स० क्रि० डराना, भटकाना, आंच करना, लूकालगाना, चौंकाना।

भड़की० ना० स्त्री० चटकी, चमक,आंच, चौंक।

भड़कीला० गु० चटकीला, चमकीला, चौंकेल।

भड़कैल० गु० जंगली, अनपहिचान, चौंकेला।

भड़भड़िया० गु० निष्कपट, सीधा।

भड़भूजन० ना० स्त्री० भुर्जिन।

भड़भूजा० ना० पु० भुर्जी, भुजवा।

भड़रिया० ना० पु० ठग, भद्री, जोसी।

भड़सांई० ना० पु० भाड़।

भड़िहा० गु० चोर, चाटने द्वारा, घिनौना, निर्लज्ज।

भड़िहाई० ना० स्त्री० भड़िहापन, रामायणे यथा, सो दशशीश श्वान की नाईं, इत उत चितै चला भड़िहाई।

भडुवा० ना० पु० कुटना, वेश्याका भ्राता, पितादि।

भडुवाई० ना० स्त्री० कुटनापन।

भड़ैत० } ना० पु० भाड़ादेनेद्वारा प्रजा।
भड़ैती० }

भणन० ना० पु० कथन।

भणित० गु० कथित, कहाहुआ, कविता।

भण्टाकी० ना० स्त्री० भांटा, बैंगन।

भण्ड० ना० पु० भांड, अष्टता।

भण्डा० ना० पु० मटका, मोटी, अरुई।

भण्डार० ना० पु० कोठा, खाता बखार।

भण्डारा० ना० पु० योगी, वा संन्यासी, वा उदासियों का ज्योनार वा जिमाना, भोजन।

भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रोकड़िया, रसोइयां।

भण्डेरिया० ना० पु० भड़रिया।

भण्डेला० ना० पु० भांड़।

भण्डौवा० ना० पु० निन्दा, फक्कड़।

भतरा० ना० पु० भतार, पति।

भतरौड़० ना० पु० मथुरा वृन्दावन के मध्य स्थानविशेष।

भतार० ना० पु० भर्तार, पति, स्वामी, कन्त।

भतीजा० ना० पु० भाई का बेटा।

भतीजी० ना० स्त्री० भाईकी कन्या।

भत्ता० ना० पु० भात।

भद० ना० स्त्री० धप्पा, धड़ाका, कुयश।

भदभद० ना० पु० वृक्षके फल गिरने का वा मनुष्य के चलनेका शब्द।

भदभदाना० स० क्रि० मारने से जो शब्द निकलता है, वारंवार मारना।

भदभदाहट० ना० स्त्री० भदभद।

भदाक० ना० पु० धड़ाक, फटाक।

भदाका० ना० पु० धड़ाका शब्द।

भदेस० } गु० जो अच्छा नहो कुडौल, भोंड़ा,
भदेसल० } अनाड़ी रामायणे यथा, भणित भदेसवस्तु भलि वरणी।

भद्दा० गु० निर्बुद्धि, उल्लू, भोंड़ा।

भद्र० ना० पु० भागमानी, मूंछ सहित शिरका

मुण्डन, कल्याण, बढ़ती, नवखण्डों में से एक का नाम गु० भला, श्रेष्ठ, भाग्यवान् ।
भद्रक० ना० स्त्री० प्राप्त, लाभ, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई ।
भद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।
भद्रकाष्ठ० ना० पु० देवदारु ।
भद्रचन्दन० ना० पु० जवासा ।
भद्रजयव० ना० पु० इन्द्रजौ ।
भद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसार ।
भद्रपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
भद्रमस्त० ना० पु० नागरमोथा ।
भद्रवती० ना० स्त्री० कायफल ।
भद्रवृक्ष० ना० पु० गोखुरू ।
भद्रश्रिय० ना० पु० चन्दन ।
भद्रहोना० अ० क्रि० मूंछसहित शिरमुड़ाना ।
भद्रा० ना० स्त्री० अशकुन समय, पक्षकी दूसरी सातवीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुघड़ी, कल्याणकारिणी, ना० पु० पक्षी विशेष ।
भद्राक्ष० ना० पु० कृत्रिमरुद्राक्ष ।
भद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी ।
भद्री० ना० पु० डकौत, सामुद्रिकी, कायफल ।
भद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी ।
भबकना० अ० क्रि० क्रोधित होके दौड़ना, आग लगना, लोट आदि से पानी गिरने का शब्द ।
भबका० ना० पु० बड़े मुखका पात्रविशेष ।
भबकाना० स० क्रि० सुलगाना, जलाना, उकसाना, खिजाना, एड़मारना ।
भबकी० ना० स्त्री० धमकी ।
भभ्भड़० ना० पु० डर, खटका, भभर ।
भभक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदि की कुवास आजावे ।
भभकना० अ० क्रि० सनसनाना, बुलबुला उठना, खलबलाना ।
भभर० ना० पु० डर, खटक ।
भभराना० अ० क्रि० खटका होना, सूजना ।
भभरि० क्रि० डरकर, घबड़ाकर ।
भभूका० ना० पु० ज्योति, आंच, एकाएक आग जलउठना, गु० लाल, सुन्दर, भड़कीला ।
भभूत० ना० स्त्री० भस्म, विभूति ।
भय० ना० पु० डर, शङ्का, खौफ ।
भयकार० } **भयंकर०** } गु० भयानक, डरौनी मूर्त्ति ।
भयचक० गु० भयकरके जो व्याकुल हो ।
भयद० } **भयदायक०** } गु० भयानक, भयंकर ।
भयभीत० गु० शंकित, डराक, डराहुआ ।
भयमान० गु० डरपोक, शंकित ।
भया० ना० पु० भाई, क्रि० हुआ ।
भयातुर० गु० भयचक, भयग्रस्त ।
भयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डरलगे, डरौना, रसविशेष ।
भयापा० ना० पु० अपनाहत, भाईपन ।
भयावना० } **भयावहा०** } गु० भयंकर, भयानक ।
भर० गु० पूर्ण, पूरा, सब ।
भरका० ना० पु० जब बरीपर पानी दिया उस का नाम ।
भरकाना० स० क्रि० बरीपर पानी डालना ।
भरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण ।
भरणी० ना० स्त्री० दूसरा नक्षत्र, सांपभक्षक, जीवविशेष ।
भरत० ना० पु० अनेक धातु का मेल, राजा विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई ।
भरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान ।
भरतपुर० ना० पु० शूरसेन देशका एक नगर विशेष ।
भरद्वाज० ना० पु० मुनिविशेष, खंजनपक्षी ।
भरद्वाजसुत० ना० पु० द्रोणाचार्य ।
भरन० अव्य० तक, तलक ।

भरना॰ स॰ क्रि॰ पूर्ण करना, छोपना, लेसना, घाव चंगा होना, निकालना, फटे वस्त्र में सूत डालना, ढालना।

भरनी॰ ना॰ स्त्री॰ बाना, भरणी।

भरिपाना॰ अ॰ क्रि॰ दामपाना, फलपाना।

भरिपूर्ण॰ गु॰ मुहामुह।

भरभराना॰ अ॰क्रि॰सूजना, एकाएक उड़ना।

भरभरी॰ ना॰ स्त्री॰ सूज, फुलाव।

भरभाड़॰ ना॰ पु॰ ऊंटकटीला, छोटा पौधा विशेष।

भरम॰ ना॰ पु॰ भय, भ्रम, साख।

भरमगमाना॰ अ॰ क्रि॰ असाखहोना, अपयशी होजाना।

भरमाना॰ स॰ क्रि॰ फुसलाना, व्याकुलकरना, फिराना, घुमाना।

भरवाना॰ स॰ क्रि॰ पूर्णकराना।

भरा॰ गु॰ पूरा।

भराना॰ स॰ क्रि॰ भरवाना, घोड़ाघोड़ीलगाना।

भरावट॰ ना॰ स्त्री॰ वस्तु जिससे दूसरी वस्तु भराते हैं।

भरित॰ गु॰ पालाहुआ, भराहुआ।

भरिता॰ गु॰ भरीहुई।

भरी॰ ना॰ स्त्री॰ तोला, बारह माशेका परिमाण।

भरु॰ ना॰ पु॰ बोझ।

भरैत॰ ना॰ पु॰ भड़ैत।

भरोटा॰ ना॰ पु॰ तृणादि का बोझा।

भरोसा॰ ना॰ पु॰ आशा, आसरा, प्रतीत।

भर्ग्गो॰
भर्ग्गु॰ } ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, रामचन्द्रिकायां यथा, श्रदेवदेव जयभीतरक्षमान लेखिये, अमेयतेज भर्गुभक्त भार्गवेश देखिये।

भर्जन॰ ना॰ पु॰ भूनने का काम।

भर्त्त॰ ना॰ पु॰ निजपति, भर्त्ता, स्वामी, विवाहितपति।

भर्त्ता॰ ना॰ पु॰ पति, स्वामी, मालिक, प्रतिपालक, तरकारी जो भांटाआदि भूनके बनाते हैं।

भर्त्तार॰ ना॰ पु॰ भर्त्ता, स्वामी।

भर्त्तिया॰ ना॰ पु॰ ठठेरा, कसेरा।

भर्ती॰ ना॰ स्त्री॰ समाप्ति, भरावट, बढ़ाव।

भर्त्सना॰ ना॰ स्त्री॰ तिरस्कार।

भर्म॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, यथा, तपनीयंशातकुंभंगांगेयंभर्मकर्बुरम्, इत्यमरः।

भर्वर॰ ना॰ पु॰ नदी का भँवर, भौंरा।

भल॰ गु॰ भला, ना॰पु॰ ओर।

भलका॰ ना॰ पु॰ सोने की टिकली जो नथ में लगती है।

भलमनसाई॰
भलमनसात॰
भलमनसी॰ } ना॰ स्त्री॰ सत्गुण, अच्छाई।

भला॰ गु॰ अच्छा, शीलवन्त, चंगा, धर्मी, अद्भुत, चुहला।

भलाई॰ ना॰ स्त्री॰ अच्छापन, क्षेम, कुशल, सुयश, सुकृत।

भलाचंगा॰ गु॰ अच्छा।

भलूक॰ ना॰ पु॰ भालु, रीछ।

भल्ल॰ ना॰ पु॰ भल्लूक, भालु।

भल्लक॰ ना॰ पु॰ लम्बे, पैंने, तेज।

भल्लात्॰
भल्ली॰
भल्लुक॰ } ना॰ पु॰ भालु, रीछ।

भल्लू॰
भल्लूक॰ } ना॰ पु॰ रीछ, आलू, तरकारी।

भल्लूकप्रिय॰ ना॰ पु॰ स्योना वृक्ष।

भव॰ ना॰ पु॰ संसार, शिवजी, कल्याण, भय, जन्महोना।

भवद्दर्शन॰ ना॰ पु॰ आपका दर्शन।

भवन॰ ना॰ पु॰ घर, मकान।

भवा॰ ना॰ स्त्री॰ पार्वती।

भवानी॰ ना॰ स्त्री॰ पार्वती।

भावापवर्ग॰ ना॰ पु॰ मोक्ष, जीवन्मुक्ति।

भवार्णव॰ ना॰ पु॰ संसारसागर।

भवार्पण० ना० पु० शिवहेतु देना ।

भविक० ना० स्त्री० कुशल, क्षेम, कल्याण।

भवितव्य० गु० होनहार, जो होवेगा ।

भवितव्यता० ना० स्त्री० प्रारब्ध, होनहार ।

भवर० ना० पु० पानी की गांठि, भारा ।

भवावर्त्त० ना० पु० संसार का भँवर, जगत् भँवर ।

भविष्य०
भविष्यत्० गु० होनहार, जो कुछ होवेगा, आनेहारा समय ।

भविष्यत्वक्ता०
भविष्यद्वक्ता० ना० पु० भविष्यत् कहनेहारा, आगमज्ञानी ।

भवैया० ना० पु० कथक, राधा नर्तक ।

भव्य० गु० भाग्यवान्, योग्य, कल्याण, होनी, ना० पु० कमरख वृक्ष ।

भष०
भषण० ना० पु० भोजन, भक्षण, खाना ।

भस० ना० पु० राख, खाक ।

भसकना० अ० क्रि० गिरना, पड़ना, फांकना ।

भसना० अ० क्रि० तैरना, बहना ।

भसभसा० गु० पिलपिला ।

भसम० ना० पु० भस्म, राख।

भसाना० स० क्रि० बहाना, चलाना ।

भस्म० ना० स्त्री० विभूति, राख।

भस्मी० ना० पु० शिवजी, गु० खाकी।

भस्मीभूत० गु० जलगया, भस्महोगया ।

भहराना० अ० क्रि० कांपना, लड़खड़ाना, डगमगाना ।

भक्ष० ना० पु० भोजन, चर्वण ।

भक्षक० गु० खानेहारा ।

भक्षण० ना० पु० भोजन, चर्वण ।

भक्षी० गु० भक्षक ।

भक्ष्य० गु० जो खाने के योग्यहै, खाद्य ।

भा० ना० स्त्री० शोभा, कांति ।

भांग० ना० स्त्री० बूटी, विजया, भंग ।

भांज० ना० स्त्री० ऐंठ, बल, रस्सी बनानेका काम।

भांजना० स० क्रि० फिराना, घुमाना, ऐंठना, हिलाना, चमकाना ।

भांजा० ना० पु० बहनका पुत्र ।

भांजी० ना० स्त्री० बहन की कन्या, हरज, नुकसान ।

भांट० ना० पु० औषधि, पौधा विशेष ।

भांटा० ना० पु० बैंगन, तरकारी विशेष ।

भांड़० ना० पु० हण्डा, बहुरूपिया, स्वांगी ।

भांड़ना० स० क्रि० गालीदेना, बिगाड़ना ।

भांड़ा० ना० पु० माटीका बड़ा बर्तन, सामग्री, जो रुपया किसी को पृथ्वी में गड़ाहुआ मिले, परुआ, दफ़ीनह ।

भांडीर० ना० पु० अंजीर का वृक्ष,स्थानविशेष।

भांड़ैती० ना० स्त्री० बहुरूप्य, स्वांग ।

भांति० ना० स्त्री० रीति, डौल, ढब, जाति, शोभा, प्रकार ।

भांवर०
भांवरि०
भांवरी० ना० स्त्री० फेर, घुमावा ।

भाई० ना० पु० भ्राता, बिरादर।

भाईचारा० ना० पु० भयापा, आपस ।

भाईबन्द० ना० पु० जाति के लोग।

भाक्क० ना० पु० परवश, पिछलगा ।

भाखना० स० क्रि० बोलना, कहना।

भाग० ना० पु० अंश, प्रारब्ध, कर्म, हिस्सह ।

भागजाना० अ० क्रि० टलना, पीछादेना ।

भागड़० ना० स्त्री० बराव, देशत्याग, धड़का ।

भागना० अ० क्रि० भागजाना, टलना ।

भागमान्० गु० भाग्यवान् ।

भागमानी० ना० स्त्री० सुभाग, धनाढ्यता ।

भागलपुर० ना० पु० नगरविशेष।

भागवत० ना० पु० पुराणविशेष, भगवत्धर्मी।

भागवती० ना० पु० श्रीभगवान्, भागवतपाठक, ना० स्त्री० संहिताविशेष, सुभागिन ।

भागवन्त० } गु० भाग्यवान्।
भागवान्० }

भागाभाग० ना० पु० भागड़, बिन ठहरे चला जाना।

भागनेय० ना० पु० भान्जा, बहन का पुत्र।

भागी० ना० पु० साझी, अंशी, बटैत, गु० भाग्यवान्।

भागीरथ० ना० पु० भगीरथ।

भागीरथी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

भाग्य० ना० पु० प्रारब्ध, कर्म, तक़दीर, गु० जो भाग करने के योग्य है।

भाग्यवन्त० } गु० प्रारब्धी, लक्ष्मीवान्, क़िस्मतवर, प्रतापी, धनाढ्य।
भाग्यवान्० }

भाग्यहीन० गु० मन्दभाग्य, दरिद्री, कम्बख्त।

भाजक० गु० जिसपर बांटाजावे, भागकारी।

भाजन० ना० पु० बासन, बर्तन।

भाजना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० भूनना, तलना।

भाजी० ना० स्त्री० तरकारी, शाक, बथुआ, बैना।

भाज्य० गु० जो भाग किया जावे, विभाग किया जावे।

भाट० ना० पु० बरदैत, कविविशेष, जाति विशेष।

भाटन्० ना० स्त्री० भाटकी स्त्री।

भाठा० ना० पु० धारा, समुद्र का उतार, भट्ठा।

भाठियाल० ना० पु० भठियाल।

भाठी० ना० स्त्री० भट्ठी, धौंकनी, भठियाल।

भाड़० ना० पु० अन्न भूनने के लिये अग्नियुक्त स्थान।

भाड़ा० ना० पु० किराया।

भाण्ड० ना० पु० बासन, बर्तन।

भाण्डार० ना० पु० भण्डार।

भाण्डारी० ना० पु० भण्डार का अधिपति।

भाण्डीर० ना० पु० व्रज में वनविशेष।

भात० ना० पु० ओदन, रांधे हुये चावल।

भाता० ना० पु० भत्ता।

भाथा० ना० पु० तूण, तरकश।

भाथे० ना० पु० बहुभाथा।

भादवा० }
भादौं० }
भाद्र० } ना० पु० छठामहीना, वर्षा का मास।
भाद्रपद० }
भाद्रमास० }

भान० ना० पु० स्मरण, सूर्य, भानु।

भानजा० ना० पु० बहनका पुत्र।

भानजी० ना० स्त्री० बहन की पुत्री।

भानना० स० क्रि० हनना, मारना, फाड़ना, ताड़ना, भांजना।

भानमती० ना० स्त्री० नटनी।

भाना० अ० क्रि० भाला लगाना, सजना।

भानु० ना० पु० सूर्य।

भानुज० ना० पु० शनैश्चर, राजाकर्ण और यमराज ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी, का०ये यथा, भानुजसरि प्रणाम करि आसु, कृष्णस्थल विहार तट जासु।

भानुमति० गु० सुन्दर, ना० स्त्री० राजा विक्रमादित्य वा राजा दुर्योधन की रानी का नाम।

भानुरिपु० ना० पु० राहु, केतु।

भानुयोगेश्वरी० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी विशेष।

भाफ० ना० स्त्री० बाष्प, बाफ।

भाफना० स० क्रि० समझना, अटकलना।

भाभी० ना० स्त्री० भौजाई, भाई की स्त्री।

भाम० ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा, दोहा, गंगाधर हर शूलधर शशिधर शंकर वाम। शर्व शम्भु शिव भीम भव भर्ग भाम रिपुकाम।

भामरि० ना० स्त्री० भांवरी।

भामा० ना० स्त्री० पार्वती, सामान्य स्त्री।

भामिनि० } ना० स्त्री० त्रिय वा कर्कशा स्त्री, लड़ाका।
भामिनी० }

भाय० ना० पु० भ्रात, स्वभाव, भाई।

भायप० ना० पु० भाईबन्दी, भाइयों का परस्पर स्नेह।

भायमान्०
भायवन्त०
भायवान्० } गु० सुशोभित, अच्छा, योग्य।

भार० ना० पु० बोझ, आंटी, बरही, जितना एक मनुष्य लेचलता है।

भारक० ना० पु० गन्ना, ऊख, यथा भारकेक्षुमहारसः इतिनिघंटुः।

भारंगी० ना० स्त्री० औषधिविशेष।

भारत० ना० पु० व्यासरचित इतिहास वा पुराण विशेष, कौरव पांडव का समर।

भारतवर्ष० ना० पु० जम्बूद्वीप के नवखंडों में से एकका नाम, हिन्दुस्तान।

भारतवर्षीय० गु० जो भारतवर्षका सम्बंधीहो।

भारती० ना० स्त्री० वाग्देवता, सरस्वती।

भारद० गु० भारदाता, परंतु सतसई काव्य में भाका अर्थ हुआ और रद फ़ारसीशब्द का अर्थ तोड़ना लियाहै अर्थात् तोड़ागया, नाशहुआ।

भारद्वाजी० ना० स्त्री० वनकपास, नर्मा।

भारवाह० ना० पु० गधा, खर।

भारवाहक० गु० जो भार को ले चलताहो, यथा मोटिया, हम्माल।

भारा० ना० पु० बोझ, भाड़ा, किराया।

भारी० गु० गरुव, बड़ा, महंगा, मोटा, गंभीर, पोढ़ा, टेढ़ा, ना० पु० मोटिया।

भार्गव० ना० पु० शुक्र, जमदग्नि।

भार्गवी० ना० स्त्री० दूब घास।

भार्गवेश० ना० पु० परशुराम।

भार्या० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू।

भाल० ना० पु० तीर आदिकी नोक, ललाट, रीछ।

भाला० ना० पु० बर्छा विशेष।

भालु०
भालू० } ना० पु० रीछ।

भालुनाथ०
भालुपति० } ना० पु० जामवन्त, भालुवाला, रीछ पालनेवाला।

भाव० ना० पु० प्रकृति, स्वभाव, सम्मति, मोल, चसका, शोच, बूझ, चोचला, भेद, द्रव्य, उद्देश, स्वांग झांवली, मनकी लहर, जंतु।

भावक० गु० शोची, मित्र, सज्जन।

भावज० ना० स्त्री० भाई की स्त्री।

भावता० गु० प्रिय, चाहता।

भावती० ना० स्त्री० चाहती, प्रिया।

भावन० ना० पु० सुहावन, दिखनौट।

भावना० ना० स्त्री० कामना, वासना, इच्छा, चिन्ता, सुहावना, शंका।

भाववाचक० ना० पु० वह संज्ञा जिससे उसका वा शब्द का धर्म वा भाव जानाजावे।

भावह० ना० स्त्री० छोटे भाई की जोरू।

भावान्तर० ना० पु० प्रकारांतर, दूसरेप्रकार।

भावित० गु० चिन्तित, शंकित।

भावी० ना० स्त्री० भविष्यत्, होनहार, बदा।

भावुक० ना० पु० भव्य, कल्याण।

भाव्य० वांछित, जो भावके योग्यहै, सुन्दर।

भाषण० ना० पु० कथन।

भाषा० ना० स्त्री० बोली, वाणी, सरस्वती, जो संस्कृत नहीं है।

भाषित० गु० कथित, कहाहुआ।

भाष्य० ना० पु० व्याकरणादि सूत्रों का प्रथम विवरण।

भास० ना० पु० प्रकाश, चमत्कार, दीप्ति।

भासना० अ० क्रि० प्रकट होना, सूझना।

भासित० गु० प्रकाशित, समझागया।

भासुर० ना० पु० पतिका बड़ाभाई।

भास्कर० ना० पु० सूर्य।

भास्वान्० ना० पु० सूर्य, गु० प्रकाशित।

भास्वर० ना० पु० सूर्य।

भिखारी० ना० पु० याचक, भिक्षुक, फ़क़ीर, मँगता, मंगन।

भिगाना॰
भिगोना॰
भिजाना॰ } स॰ क्रि॰ गीला वा ओदाकरना।

भिटनी॰ ना॰ स्त्री॰ कुचके ऊपर की नोक,फुनगी।

भिड़ना॰ अ॰ क्रि॰ मिलना, सटना, लड़ना।

भिड़ाना॰ स॰ क्रि॰ मिलाना, सटाना, लड़ाना।

भिण्डमाल॰ ना॰ पु॰ गोफना, धनवासी, जिस में ढेला रखकर घुमायके चलाते हैं।

भिण्डी॰ ना॰ स्त्री॰ तरकारीविशेष।

भित्ती॰ ना॰ स्त्री॰ भीत, दीवार।

भिनकना॰
भिनभिनाना॰ } स॰ क्रि॰ मक्खी उड़ने से जो शब्द निकले।

भिनसार॰ ना॰ पु॰ तड़का।

भिन्न॰ गु॰ पृथक्, अलग, कसर।

भिन्नता॰ ना॰ स्त्री॰ अलगाहट।

भिन्नाना॰ अ॰ क्रि॰ शिरघूमजाना, चकराना।

भिन्सार॰ ना॰ पु॰ भोर, प्रात, तड़का, सबेरा।

भिरना॰ अ॰ क्रि॰ भिड़ना।

भिरत॰ ना॰ स्त्री॰ चरट, लड़ाई।

भिलावां॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फलविशेष, जो देहमें लगने से छाला पड़आता है।

भिलौंजी॰ ना॰ स्त्री॰ भिलावांका बीज।

भिषक्॰
भिषज॰ } ना॰ पु॰ वैद्य, हकीम, तबीब।

भिक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ भीख, खैरात।

भिक्षाटन॰ ना॰ पु॰ भीखमांगना वा भीख मांगने के लिये फिरना।

भिक्षु॰ ना॰ पु॰ दण्डी, संन्यासी, म्योड़ी पौधा।

भिक्षुक॰ ना॰ पु॰ भिखारी।

भी॰ अव्य॰ च, हूं, और।

भीख॰ ना॰ स्त्री॰ भिक्षा, मँगनई।

भीगना॰
भीजना॰ } अ॰ क्रि॰ गीला वा ओदाहोना, दुःखी होना।

भीजा॰ गु॰ गीला, भीगा भया।

भीठ॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंची धरती वा जिस स्थान में पान उत्पन्न होते हैं।

भीड़॰ ना॰ स्त्री॰ मण्डली, ठठ, बहुतात, क्लेश।

भीड़ा॰ ना॰ पु॰ संकीर्ण।

भीत॰ गु॰ डरा, भययुक्त, ना॰ स्त्री॰ दीवार।

भीतर॰ अव्य॰ अन्तर, बीच में।

भीतरिया॰ ना॰ पु॰ भीतर रहनेवाला वा जो मनुष्य देवालयका प्रधानता से कामकरताहै अर्थात् भण्डारी, रसोइया, पुजारी।

भीतरी॰ ना॰ पु॰ भीतरिया, गु॰ भीतरका।

भीति॰ ना॰ स्त्री॰ भय, शंका, दीवार।

भीम॰ ना॰ पु॰ भय, अमलवेत वृक्ष, युधिष्ठिर का भाई, गु॰ भयानक, भयंकर।

भीमसेन॰ ना॰ पु॰ पांडुका दूसरा पुत्र।

भीमसेनी॰ ना॰ पु॰ कपूरविशेष।

भीर॰ ना॰ स्त्री॰ भीड़।

भीरु॰
भीरुक॰ } गु॰ कायर, डरपोक।

भील॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष।

भीलन॰
भीलिन॰ } ना॰ स्त्री॰ भील की जोरू।

भीलुक॰ गु॰ भीरुक।

भीषण॰ ना॰ पु॰ भय,गु॰ भयानक, भयंकर।

भीष्म॰ ना॰ पु॰ शिवजी, कौरवों का दादा।

भीष्माष्टमी॰ ना॰ स्त्री॰ माघकी शुक्लाष्टमी।

भुहार॰
भुआल॰ } ना॰ पु॰ राजा।

भुक्॰ गु॰ भोक्ता, भोगी, खानेहारा।

भुक्त॰ गु॰ जो भोजन किया गया है।

भुक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ भोगवस्तु, भोजनादि।

भुगतना॰ अ॰ क्रि॰ सुख वा दुःखको भोगना, पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना।

भुगतमान्॰ गु॰ जो भुगतने के योग्य है।

भुगताना॰ स॰ क्रि॰ भोगकराना, निपटाना।

भुग्गा॰ गु॰ सीधा, भोला।

भुच॰ अनगढ़, मूर्ख, जो छीला नहीं गया।

भुचम्पा० ना० पु० वृक्षविशेष।
भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मेंड, भोजपत्र।
भुजग० ना० पु० सांप।
भुजंग० } ना० पु० कालासर्पविशेष, गु० काला।
भुजंगम० }
भुजंगपर्णिनी० ना० स्त्री० नागदौन।
भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी।
भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु।
भुजाभूषण० ना० पु० बाजूबन्द।
भुजाली० ना० स्त्री० तलवारविशेष, बाजूबन्द।
भुजिया० ना० स्त्री० भाजी।
भुट्टा० ना० पु० बाली ज्वारकी, बड़ी ज्वार।
भुण्डली० ना० पु० कीड़ाविशेष।
भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोकस।
भुतनी० ना० स्त्री० भुतने की स्त्री।
भुतवा० ना० पु० भुतना।
भुताहा० गु० जो भूतके समानहै।
भुतियाना० अ० क्रि० भुताहा होना।
भुनि० अव्य० मानो, गोया, सी।
भुना० अ० क्रि० कहलना, भुनना, पकना।
भुरभुरा० गु० सूखी बुकनी।
भुरभुराना० स० क्रि० लोन आदि खाने की वस्तु पर छिड़कना, बुरकाना।
भुलसना० अ० क्रि० झुलसना, जलजाता।
भुलाना० स० क्रि० भूलकराना, फुसलाना, बहकाना।
भुलावा० ना० पु० धोखा, ठगपन।
भुव० ना० पु० स्वर्ग, आकाश, अम्बर, धरती।
भुवंग० } ना० पु० भुजंग, सांप।
भुवंगम० }
भुवन० ना० पु० जगत्, संसार, लोक, मन्दिर, आकाश, पानी, भोग, १४ लोक।
भुवाल० } ना० पु० राजाधिराज, बादशाह, राजा, भूमिपाल।
भुवालु० }
भुस० ना० पु० चोकर।
भुशुण्ड० ना० पु० माथा, शिर, टांट।
भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बन्दूक, रामायण विशेष।
भुसूडा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल की जड़।
भुसेरा० ना० पु० } स्थानविशेष जिस में भूसा रखते हैं।
भुसैला० ना० पु० }
भुसौरा० ना० पु० }
भुसौरी० ना० स्त्री० }
भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
भूंईडोल० ना० पु० भूकम्प, हालाचाला।
भूं० } ना० स्त्री० भूमि।
भूंइ० }
भूंजा० ना० पु० भड़भूंजा।
भूंसना० अ० क्रि० हौं हौं करना।
भूकम्प० ना० पु० भौंचाल, हालाडोला।
भूख० ना० स्त्री० क्षुधा।
भूखा० गु० क्षुधित।
भूगोल० ना० पु० धरामण्डल।
भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेहारे जन्तु।
भूजन० ना० पु० पृथ्वीपर के मनुष्य, भोगना।
भूड़० ना० स्त्री० रेतली धरती।
भूत० ना० पु० अतीतकाल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नभ, और प्रेतविशेष, जीव।
भूतघ्नी० ना० स्त्री० तुलसी।
भूतनया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
भूतनाशन० ना० पु० हींग।
भूतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी।
भूतंडुला० ना० स्त्री० विडंग।
भूतपति० ना० पु० भूतनाथ, शिवजी, भैरव।
भूतभक्षी० ना० पु० समुद्रलोन।
भूतल० ना० पु० पृथ्वी, धरातल।
भूतवास० ना० पु० बहेड़ा।
भूतवृक्ष० ना० पु० स्योना।
भूति० ना० स्त्री० विभूति, सम्पदा, राख, मुक्ति।

भूतिक० ना० पु० कपूर।
भूतेश० ना० पु० भूतनाथ।
भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
भूधर० ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेघ, सांप, शेष, गो. सूर्य, कच्छप।
भूधात्री० ना० पु० भूआंवला।
भूनना० स० क्रि० पकाना, कहलाना, तलना।
भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता।
भूप०
भूपति० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूपपद० ना० पु० राज्य, बादशाहत।
भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति।
भूभल० ना० पु० गरम राख।
भूभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
भूमण्डली० ना० स्त्री० बिल्व, धरामण्डल।
भूमध्यस्थ० ना० पु० जो समुद्र यूरुप और आफ्रिका के मध्यवर्ती है।
भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।
भूमिका० ना० स्त्री० दीबाचह, सारार्थ।
भूमिज० ना० पु० मंगल, भौमासुर, उद्भिज, लोन।
भूमिनाग० ना० पु० साधारण सांप।
भूमिपति०
भूमिपाल० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूमिया० ना० पु० भूमि का देवता।
भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा।
भूयः० अव्य० पुनः, फेर।
भूयोभूयः० अव्य० पुनः पुनः, फिर फिर।
भूर०
भूरसी० } ना० स्त्री० दक्षिणा, बाड़ा, दान, भीख।
भूरा० गु० खेरा, कपिल, पिंगल।
भूरि० गु० बहुत अधिक।
भूर्ज० ना० पु० भोजपत्र।
भूर्जतरु० ना० पु० भोजपत्र वा उसका वृक्ष।
भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
भूल० ना० स्त्री० विस्मरण, चूक, धोखा।
भूलना० अ० क्रि० बिसरना, चूकना, भटकना, खोजाना, लोपहोना।
भूलाबिसरा०
भूलाभटका० } गु० जो भटकगया।
भूलोक० ना० पु० मनुष्यलोक।
भूषण० ना० पु० आभरण, गहना, शोभा।
भूषित० गु० अलंकृत, भूषणयुत, शोभित।
भूसा० ना० पु० गेहूं और जौ आदिका सूखा तृण।
भूसिता० ना० स्त्री० अंकोल।
भूसी० ना० स्त्री० छिलका, धान आदि का चोकर, बूरा।
भूसुता० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण।
भूस्वामी० ना० पु० भूपति।
भृकुटी० ना० स्त्री० भौंह, भ्रू, घुड़का।
भृगु० ना० पु० मुनिविशेष, वासना।
भृगुनन्दन०
भृगुनाथ०
भृगुनायक०
भृगुपति० } ना० पु० परशुराम।
भृगुबन्धु० ना० पु० कुन्दपुष्प।
भृगुभवा० ना० स्त्री० भारंगी औषधि।
भृंग० ना० पु० भ्रमर, भौंरा, कीटविशेष।
भृंगराज० ना० पु० झाड़ीविशेष, पक्षीविशेष, भंगरा, बूटी।
भृंगाह्व० ना० पु० भँगरा बूटी।
भृंगारि० ना० पु० झींगुर।
भृंगी० ना० स्त्री० कुम्हारी, कीट, कीड़ाप्रसिद्ध जो झींगुरको लाकर निजरूप करता है, शिवगण विशेष।
भृत्य० ना० पु० दास, सेवक, गुलाम।
भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह।
भृत्या० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
भेउ० ना० पु० प्रकार, स्वभाव, भेद, मर्म।
भेंगा० गु० स्वर्गपताली, ढेरा।

भ्रूणहत्या० ना० स्त्री० गर्भपातन वा विनाशन।
भ्रूभंग० ना० पु० भ्रूविक्षेप, घुड़की।

[म]

मउआ० ना० पु० अन्न विशेष।
मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है।
मकड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाचलना, जीचुराना।
मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, सूत्रक।
मकर० ना० पु० दशवीं राशि, मगर, मृग, मच्छ।
मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीबलदेवजी, श्रीहनुमान्‌जी का पुत्र।
मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कोकिला।
मकरन्दी० ना० पु० कमल।
मकराकृत० गु० मछली के डौल।
मकराक्ष० ना० पु० खरासुर का पुत्र।
मकरी० ना० स्त्री० मछली, मकर की स्त्री, मकड़ी।
मकुष्ट०, मकुष्टक० } ना० पु० मोट अन्न।
मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूंटा।
मकोय० ना० पु० फल वा पौधा वा झाड़ी विशेष।
मक्खन० ना० पु० नवनीत, माखन, नैनू, मसकह।
मक्खी० ना० स्त्री० माछी, बन्दूक का मासा।
मख० ना० पु० यज्ञ।
मखन० ना० पु० माखन।
मखना० ना० पु० हाथीविशेष जिस के दांत न हों, पुरुष जिस के खाग न हों।
मखनिया० ना० पु० माखन बनानेहारा।
मखाना० ना० पु० पौधाविशेष।
मखी० ना० स्त्री० मक्खी।
मग० ना० पु० मार्ग, पन्थ, बाट, मगध देश।
मगध० ना० पु० देशविशेष, जिस में गयातीर्थ है वा पटनादि नगर हैं।
मगधभाषा ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो ब्रह्मा और श्याम में प्रचलित है जिस को वहां पालिक कहते हैं।
मगण० ना० पु० गणविशेष जिस में तीन अक्षर दीर्घ होते हैं।
मगन० गु० मग्न।
मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता।
मगर०, मगरमच्छ० } मकर, ग्राह, कुम्भीर।
मगरा० गु० ढीठ, घमण्डी, हठीला, मचला।
मगराई० ना० स्त्री०, मगरापन० पु० } ढिठाई, घमण्ड, मचलाइट।
मगरेला० ना० पु० कालेरंग का छोटा बीज विशेष।
मगसिर० ना० पु० मंगसिर, अगहन महीना।
मगही० गु० मगध देश की वस्तु।
मगहैया० ना० पु० मगध देश के वासी।
मगुरी० ना० स्त्री० मछलीविशेष।
मग्न० गु० डूबा, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित।
मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, मुद।
मघवा० ना० पु० इन्द्र।
मघवास्त्र० ना० पु० वज्र।
मघा० ना० स्त्री० दशवां नक्षत्र।
मघोनी० ना० स्त्री० इन्द्राणी।
मंका० ना० पु० जापी, माला, सुमिरन, गुट्टी।
मंगत०, मंगता० } ना० पु० भिखारी।
मंगन० ना० पु० भिक्षुक, भिखारी, कवि।
मंगनी० ना० स्त्री० सगाई, उधार।
मंगरा० गु० बलवान, ढीठ, मगरा।
मंगल० ना० पु० कुशल, आनन्द, तीसरा ग्रह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और, तीसरा वार, रागविशेष जो विवाहादि आनन्द में गायाजाता है।
मंगलकोटी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
मंगलघट० ना० पु० विवाहादि का कलश।

मंगलद्रव्य० ना० पु० फूलआदि।
मंगलवार० ना० पु० तीसरा बार।
मंगलसमाचार० ना० पु० शुभ समाचार, अच्छी खबर।
मंगला० ना० स्त्री० पार्वती, दशाविशेष, मसूरान्न।
मंगलाचार० ना० पु० बधावा, विवाह का गीत।
मंगलाचरण० ना० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि देवताओं की विनय वा पूजा वा नमस्कारवाक्य।
मंगलामुखी० ना० स्त्री० बजंत्री, गवैया, वेश्या।
मंगली० गु० मंगलकारक, जयवन्त।
मंगल्या० ना० स्त्री० सजीवन, गोरोचना।
मंगवाना० स० क्रि० बुला भेजना।
मगशिर० ना० पु० मार्गशीर्ष, अगहन।
मंगाना० स० क्रि० बुलाभेजना, उठवालेना, तलबकरना।
मंगूला० ना० पु० छोटाडब्बा।
मंगतर० ना० स्त्री० सगाई।
मचक० ना० स्त्री० गांठ की पीड़ा, मरमराहट, दबन।
मचकना० अ० क्रि० गांठों में पीड़ाहोना, चरचराना, मरमराना।
मचकाना० स० क्रि० चरचराना, झपकना, पलकमारना।
मचना० अ० क्रि० लगना, उठना, होना, रचना।
मचमचाना० अ० क्रि० चरचराना, मरमराना।
मचलना० अ० क्रि० हठकरना, मचलाहोना।
मचलपन० ना० पु० हठ, मगरापन, ढिठाई।
मचला० गु० हठीला, मगरा, ढीठ।
मचलाई० ना० स्त्री० मचलापन, मचलाहट।
मचलाना० अ० क्रि० हठ करना, मतलाना, बहाना, करना।
मचलाहट० ना० स्त्री० हठ, ढिठाई।
मचलाहा० गु० हठीला।
मचान० ना० पु० मंच।
मचामच० गु० लदालद।
मचिया० ना० स्त्री० पीढ़ी, चौकी, पलंगिया।
मचोड़ना० स० क्रि० निचोड़ना, ऐंठकेतोड़ना।
मच्छ० ना० पु० मत्स्य, मछली।
मच्छड़० ना० पु० मसा, छोटा कीट उड़नेहारा।
मच्छी० ना० स्त्री० मछली, मक्खी।
मछ० ना० पु० मत्स्य, मछली।
मछन्दर० ना० पु० चूहा, गु० मूर्ख।
मछली० ना० स्त्री० जलशयनी, जलतुरई, मत्स्य।
मछवा० ना० पु० धीमर, कहार, मच्छीमार।
मछी० ना० स्त्री० मछली।
मछुवा० ना० पु० मछवा, धीमर।
मजीठ० ना० पु० औषधि विशेष जिससे लालरंग बनता है।
मजीत० गु० सस्ता, जो वस्तु काम में लाई जावे और फिर बेंचीजावे।
मजीरा० ना० पु० मंजीर, बाजा विशेष, झांझ।
मजूर० ना० पु० कमेरा, ठीक शब्द मज़दूरहै, यह शब्द फ़ारसी काहै।
मज्जा० ना० स्त्री० हाड़ के भीतर का गूदा, चर्बी।
मझला० गु० मझोला, बीचवाला, मध्यवर्ती।
मझार० ना० पु० बीच, मांझ।
मझैली० ना० स्त्री० मझोली।
मझोला० गु० जो न छोटा न बड़ा अथवा न अच्छा और न बुरा, अर्थात् मध्यम।
मझोली० ना० स्त्री० छोटीगाड़ी वा बहल।
मञ्च० ना० पु० गरगज, डाजा, सिंहासन विशेष, खाट, बेदी, मचान, तख़्त, तख़्तपोश।
मञ्जन० ना० पु० दांत धोने का चूर्ण विशेष, मार्जन, स्नान, नहान।
मञ्जना० अ० क्रि० उजला होना, साफ़होना,

भैंट० ना० स्त्री० भेट।
भैंटना० स० क्रि० भेटना।
भेक० ना० पु० मेढ़क, मेघा।
भेज० ना० स्त्री० लगान, धरती का पठावन।
भेजना० स० क्रि० पठाना, पहुंचाना।
भेजा० ना० पु० गूदा मस्तकका, भीतरी मांस।
भेट० ना० स्त्री० दर्शन, मुलाकात, सौगात, अर्पण, उपायन, उपहार, नजर।
भेटना० स० क्रि० मिलना, उपायन करना।
भेटी० ना० स्त्री० } बोंट, डठा, भेंटना, मि-
भेटू० ना० पु० } लैया।
भेड़० ना० स्त्री० मेद, मेषकी जाति विशेष।
भेड़ा० ना० पु० मेढ़ा।
भेड़िया० ना० पु० विक, हुण्डार।
भेड़ियाधसान० ना० पु० गचपच करके मण्डनी।
भेड़ी० ना० स्त्री० मेढ़ी, मेष।
भेद० ना० पु० भिन्नभाव, बीचविशेष, गुप्त बात, मर्म, छेद, अन्तर, फ़र्क़, क़िस्म।
भेदक० गु० भेदकरानेहारा, पाषाणभेद।
भेदक्रिया० ना० पु० भेदलगानेहारा, खोजी।
भेदन० ना० पु० भेद करनेका काम।
भेदिका० } ना० पु० भेदकरनेहारा, खोजी,
भेदिया० } जासूस, घातिया, मर्म जानने
भेदी० } हारा।
भेदू० ना० पु० भेदरखनेहारा।
भेद्य० गु० भेदके योग्य।
भेना० ना० स्त्री० बहन।
भेर० }
भेरि० } ना० स्त्री० बाजा विशेष, कर्नाय।
भेरी० }
भेला० ना० पु० भिलावां।
भेली० ना० स्त्री० गुड़कादेला।
भेव० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म, भेद।
भेष० ना० पु० रूप, चाल, सूरत।
भेषज० ना० पु० औषधि, दवा।
भेषरज० ना० पु० भंगरा।
भैंस० ना० स्त्री० महिषी।
भैंसा० ना० पु० महिष, जामूश।
भैंसिया० ना० स्त्री० छोटीभैंस।
भैंसियादाद० ना० पु० दादु रोगविशेष।
भैचक गु० भयचक।
भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्ल एकादशी, दमयन्ती, नलकी स्त्री।
भैया० ना० पु० भाई।
भैरव० ना० पु० रागविशेष, शिवजी वा उन का सहचर, घृणा, कराल।
भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरव की स्त्री, दुर्गा।
भैहू० }
भैहा० } ना० स्त्री० छोटे भाई की स्त्री।
भोंकना० स० क्रि० टोकना, हूलना।
भोंडा० गु० कुडौल, कुरूप।
भोंदू० गु० सीधा, भोला।
भोंप० ना० पु० नरसिंहा।
भोई० ना० पु० कहार, क्रि० भिगोई।
भोकस० ना० पु० ओझा, मन्त्री।
भोक्ता० गु० भोजन में जो निपुण, अच्छा खानेहारा।
भोग० ना० पु० सुख वा दुखका उठाना, हर्ष, सुख, खाना, नैवेद्य, विहार, विलास।
भोगना० अ० क्रि० सुख दुख का उठाना वा पाना, सुख विलास करना।
भोगवती० ना० स्त्री० शेषका निवासस्थान।
भोगा० ना० पु० छल, ठगई, धोखा।
भोगी० गु० भोग करनेवाला, आनन्दी ना० पु० सांप।
भोग्य० गु० जो भोग करने के योग्य है।
भोज० ना० पु० ज्यौनार, राजा विशेष, देश विशेष जो पटना और भागलपुर का प्रदेशहै।
भोजन० ना० पु० आहार, खाना।

भोजनचार॰ ना॰ पु॰ चारप्रकार का आहार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य।

भोजपत्र॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष की छाल।

भोजपुर॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष।

भोज्य॰ ना॰ पु॰ जो खाने के योग्य है, सीधा।

भोट॰ ना॰ पु॰ भोट देश के वस्त्र, देशविशेष, जो तिब्बत का एक देश है।

भोटन्त॰ ना॰ पु॰ देश विशेष जो नेपाल के पूर्व है।

भोटिया॰ ना॰ पु॰ भोट देश के लोग।

भोडर॰ / **भोडल॰** } ना॰ पु॰ अभ्रक, अबरक।

भोता॰ गु॰ जो अस्त्र तेज नहीं है, मन्द।

भोपा॰ ना॰ गु॰ टोनहा, उल्लू, बाजाविशेष।

भोपाल॰ ना॰ पु॰ देश वा नगरविशेष।

भोर॰ ना॰ पु॰ प्रातःकाल, पौह।

भोरा॰ ना॰ पु॰ धोखा, गु॰ भोला, सीधा, दयालु।

भोरे॰ गु॰ धोखे, भूले, रामायणे यथा, का छति लाभ जीर्ण धनु तोरे। देखा राम नये के भोरे।

भोला॰ गु॰ छलहीन, सीधा, ना॰ पु॰ शिव जी।

भोलानाथ॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

भोली॰ गु॰ स्त्री॰ सीधी।

भौं॰ ना॰ स्त्री॰ भृकुटी, भ्रू, भूमि।

भौंकना॰ अ॰ क्रि॰ हौं हौं करना, मूर्खता से बोलना, कुत्तेका शब्द।

भौंचाल॰ ना॰ पु॰ भूमिकम्प, हालाचाला।

भौंर॰ ना॰ पु॰ भंवर।

भौंरा॰ ना॰ पु॰ भ्रमर, आलि, षट्पद।

भौंरियाना॰ स॰ क्रि॰ फिराना, घुमाना।

भौंरी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़े के दोष विशेष, भौंरे की स्त्री, छोटी रोटी, फेरी।

भौंसना॰ अ॰ क्रि॰ भौंकना।

भौ॰ ना॰ पु॰ भय, डर।

भौचक॰ गु॰ भयचक।

भौजाई॰ / **भौजी॰** } ना॰ स्त्री॰ बड़े भाई की स्त्री।

भौनास॰ ना॰ पु॰ बड़ा खूंटा जिस में हाथी बांधते हैं।

भौतिक॰ गु॰ जो भूत करके हाव, शरीरराग।

भौतिकदेह॰ ना॰ स्त्री॰ पञ्चतत्त्वकृतशरीर।

भौम॰ ना॰ पु॰ मंगल, उद्भिज, लोन, भौमासुर।

भौमबार॰ ना॰ पु॰ मंगलवार।

भौमासुर॰ ना॰ पु॰ दैत्यविशेष जिसको नरकासुर भी कहते हैं।

भ्रंस॰ ना॰ पु॰ ध्वंस।

भ्रम॰ ना॰ पु॰ भूल, चूक, सन्देह, संशय।

भ्रमण॰ ना॰ पु॰ पर्यटन, भांवर, फिरना।

भ्रमणा॰ ना॰ स्त्री॰ भ्रम, भूल, सन्देह, फिरना।

भ्रमभीर॰ ना॰ पु॰ भूलका समूह वा बोझ।

भ्रमर॰ ना॰ पु॰ भौंरा, आलि।

भ्रमरी॰ ना॰ स्त्री॰ भ्रमर की स्त्री, भौंरी।

भ्रमरका॰ ना॰ स्त्री॰ बावरी, जुल्फें।

भ्रष्ट॰ गु॰ पतित, स्वधर्महीन, छुटखेला।

भ्रष्टा॰ ना॰ स्त्री॰ व्यभिचारिणी, कुलटा।

भ्रष्टाचार॰ ना॰ पु॰ अधर्म, स्वधर्महीन, सर्व्वभक्षी।

भ्राजमान॰ गु॰ शोभित, सुशोभित, फबा।

भ्राता॰ ना॰ पु॰ भाई।

भ्रातृज॰ ना॰ पु॰ भतीजा, भाईका लड़का।

भ्रान्त॰ गु॰ जो घुमायागया।

भ्रान्ति॰ ना॰ स्त्री॰ भूल, चूक, भ्रम, मति भ्रम।

भ्रामक॰ गु॰ भ्रमदाता, ठग, धोखा देनेवाला।

भ्रुव॰ / **भ्रू॰** } ना॰ स्त्री॰ भौंह, पंक्ति, घुड़कना।

मथना० स० क्रि० महना, बिलोवना, मथोना, ना० पु० मथनी, पात्रविशेष।
मथनियां० ना० स्त्री० मथानी।
मथनी० ना० स्त्री० बिलोनी, महानी, रई।
मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाहुआ।
मथानी० ना० स्त्री० दूधहांडी, मटकी, चाटी।
मथित० गु० छांछ, मठ्ठा जो मथागया।
मथुरा० ना० पु० नगरविशेष, जहां श्रीकृष्णचन्द्र जन्मेथे।
मथुरिया० ना० पु० मथुराके ब्राह्मण।
मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरियाकी जोरू।
मथौट० ना० पु० चन्दा, बिहरी, बाछ।
मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, छाता, छतुरी।
मद० ना० पु० गर्व, अहंकार, कस्तूरी, मादक वस्तु, मदिराआदि।
मदकल० ना० पु० हाथी।
मदकारिणी० ना० स्त्री० खुरासानी अजवाइन।
मदन० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष, मैनफल, कामदेव, प्रद्युम्नजी, दौना।
मदनांकुश० ना० पु० लिंग।
मदनाह्वा० ना० स्त्री० खिरहटी।
मदनारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मदमाता० ना० पु० } गु० मतवाला, मत-
मदमाती० ना० स्त्री० } वाली।
मदमाल० ना० पु० बिछुआ, पादांगद।
मदयन्तिका० ना० स्त्री० मालती।
मदान्ध० गु० अभिमानी, मदिरा में गलित।
मदार० ना० पु० आक, अर्क।
मदारिया० ना० पु० मदारका फूल।
मदारी० ना० पु० सँपेरा, नटवर, सांपवाला।
मदिक० गु० अहंकारी, मदान्ध।
मदिरा० ना० स्त्री० शराब, दारू, ना० पु० छन्द।
मदोत्कट० ना० पु० कपोत, कबूतर।
मदोत्कंठ० ना० पु० हाथी।
मद्गुर० ना० पु० मोगरा, मत्स्यविशेष, मुद्गर।
मद्य० ना० स्त्री० सुरा, मदिरा, शराब।
मद्यगन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी।
मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला।
मद्या० ना० स्त्री० बकरी।
मधुमाता० गु० मतवाला।
मधुवोषित० ना० पु० कंकोल, मिरच।
मधु० ना० पु० मदिरा, पुष्प का रस, शहद, पानी, चैत्रमास, बसंतऋतु, वृक्ष, दूध, अमृत, दैत्यविशेष।
मधुक० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुकर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मधुकरी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी, रोटीविशेष।
मधुकर्कटिका० ना० स्त्री० मधुककेटी।
मधुकोष० ना० पु० मधुमाखी का छत्ता।
मधुकोष० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुग० ना० पु० महुआ भेद।
मधुतृण० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मधुदूतिका० ना० स्त्री० कोयल।
मधुद्रुम० ना० पु० मधूपवृक्ष, चैत्रके वृक्ष।
मधुप० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
मधुपर्क० ना० पु० पूजाकी सामग्री, मधु और दही आदि मिलाकर खाना।
मधुपर्णी० ना० स्त्री० दूधिया, पौधा।
मधुपर्श० ना० पु० पका रसीला फल।
मधुपुर० ना० पु० } मथुराजी।
मधुपुरी० ना० स्त्री० }
मधुफला० ना० पु० अंगूर, दाख।
मधुमल० ना० पु० मोम।
मधुमक्षी० ना० स्त्री० शहदकी मक्खी, ममाखी।
मधुमात० ना० पु० रागिनी विशेष।
मधुमास० ना० पु० चैत्रमास।
मधुयष्टी० ना० स्त्री० मुलहठी।
मधुयोनि० ना० पु० अंगूर, दाख।
मधुर० गु० मीठा, चाहता, सुन्दर, अच्छा।
मधुरमल० ना० पु० मोम।
मधुरसा० ना० स्त्री० मुरहरी, अंगूर, दाख।

मधुरा॰ ना॰ स्त्री॰ काकोली।
मधुरी॰ गु॰ स्त्री॰ मीठी, रसीली।
मधुरान्न॰ ना॰ पु॰ मीठाभोजन यथा रसावर।
मधुलिट्॰
मधुलिह॰ } ना॰ पु॰ भौंरा, भ्रमर।
मधुबन॰ ना॰ पु॰ मथुरा नगर।
मधुव्रत॰ ना॰ पु॰ मधुकर, भौंरा, भ्रमर।
मधुशिग्रु॰ ना॰ पु॰ अगस्त्य वृक्ष।
मधुश्रवा॰ ना॰ स्त्री॰ गुड़हर, संजीवन बूटी।
मधुष्ठीली॰ ना॰ पु॰ महुआ वृक्ष।
मधुष्ठीव॰ ना॰ पु॰ गुड़हर।
मधुसूदन॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र।
मधूक॰ ना॰ पु॰ महुआ वृक्ष।
मधुकरी॰ ना॰ स्त्री॰ पकाये अन्न की भिक्षा जो अतिथि को देते हैं, भौंरी, रोटी।
मधूलका॰ ना॰ स्त्री॰ मुलहठी।
मधूप॰ ना॰ पु॰ गुड़हर।
मधोर्दन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्भी तालाब की।
मध्य॰ अव्य॰ अन्तराल, बीच, विषय।
मध्यदिवस॰ ना॰ पु॰ दुपहर।
मध्यदेश॰ ना॰ पु॰ मुख्य वानर, बीचका देश अर्थात् हिमालय और विंध्य और प्रयाग और कुरुक्षेत्र के मध्यका देश, अवध आदि।
मध्यभाग॰ ना॰ पु॰ मध्यस्थान।
मध्यम॰ गु॰ न भला, न बुरा, समासम, धीरे, न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष।
मध्यमपुरुष॰ ना॰ पु॰ मध्यभागीनर, सामनेवाला, मुखातिब, हाज़िर।
मध्यमा॰ ना॰ स्त्री॰ अनामिका और तर्जनी के बीचकी अंगुली।
मध्यलोक॰ ना॰ पु॰ मनुष्यलोक।
मध्यवर्ती॰
मध्यस्थ॰ } ना॰ पु॰ बिचवैया, बिचवई, समानवर्ती।
मध्यस्थल॰
मध्यस्थान॰ } ना॰ पु॰ कटि, कमर, बीचका स्थान।
मध्याह्न॰ ना॰ पु॰ ठीकदोपहर, दिनकाबीच।

मध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ मदिरा, शराब।
मन॰ ना॰ पु॰ चित्त, हृदय, आत्मा, ४० सेरका
मनकामना॰ ना॰ स्त्री॰ मनोयोग।
मनघटा॰ ना॰ पु॰ कुवांकी जगत।
मनचला॰ गु॰ चरफरा, अगमना, सूरमा।
मनजात॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मनत॰ ना॰ स्त्री॰ मनौता, स्वीकार।
मनन॰ ना॰ पु॰ चिन्तन, मनसूबा।
मनभावन॰
मनभावना॰ } गु॰ ग्राह्य, भला, चाहता।
मनमत्त॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मनमारना॰ स॰ क्रि॰ अपनीइच्छाको रोकना।
मनमोहन॰ ना॰ पु॰ सज्जन, प्यारा, श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे।
मनस्विनी॰ ना॰ स्त्री॰ पतिव्रता स्त्री।
मनसा॰ ना॰ स्त्री॰ इच्छा, अर्थ विचार, इरादह।
मनसिज॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मनसी॰ ना॰ स्त्री॰ संकल्पकी, देनेकीइच्छाकी।
मनसेधू॰ ना॰ पु॰ मनुष्य।
मनस्ताप॰ ना॰ पु॰ मनकी पीड़ा।
मनहु॰ अव्य॰ मानो, जानो।
मनहारी॰ गु॰ मनका हरण करनेहारा।
मनाना॰ स॰ क्रि॰ अंगीकार करवाना, आकर लेना, बहलाना, मनकोथांभना, कृपालकरना।
मनावना॰ स॰ क्रि॰ मनाना।
मनि॰ ना॰ स्त्री॰ मणि।
मनिका॰ ना॰ स्त्री॰ मणिका, दाना, गुरिया।
मनिहार॰ ना॰ पु॰ चूड़ीवाल, जातिविशेष।
मनिहारी॰ ना॰ स्त्री॰ चूड़ीबेचनेवाली।
मनीषा॰ ना॰ स्त्री॰ बुद्धि।
मनीषी॰ ना॰ गु॰ बुद्धिमान्, चतुर।
मनु॰ ना॰ पु॰ स्वायंभुव आदि १४ जो प्रत्येक कल्प में होते हैं, स्वायंभुवमनु विरचित स्मृति, ब्रह्मा, ब्रह्मा का पुत्र, प्रथम मनुष्य।
मनुआ॰ ना॰ पु॰ मन, बिलार, ना॰ स्त्री॰ रुई विशेष।

मञ्जरी० ना० स्त्री० फूलोंका गुच्छा फली समूह।
मञ्जल० ना० पु० अंजीरवृक्ष।
मञ्जा० ना० पु० नये वर्षेपानी का फेन अर्थात् प्रथम आषाढ़ में बर्षनेकापानी मछली को विष होताहै, रामायणे यथा, मंजा मनहुं मीन कहं व्यापा।
मञ्जार० ना० पु० बिलार, बिलाव।
मञ्जारी० ना० स्त्री० बिल्ली।
मंजित० गु० मंजन कियागया, वा किये हुये, धोयाभया।
मंजिष्ठ० ना० पु० मजीठ।
मंजीर० ना० पु० बिछुवा, पांवका भूषण।
मंजीरा० ना० पु० मजीरा।
मंजु० गु० सुन्दर, मनोहर, चाहता।
मंजुघोष० ना० पु० कबूतर, परेवा।
मंजुघोषा० ना० स्त्री० कबूतरी, कोयल, कोकिला।
मंजुल० गु० सुन्दर, मनोहर, चाहता, अच्छा।
मंजुला० ना० स्त्री० मजीठ।
मंजूषा० ना० स्त्री० टोकरा।

मटक०
मटकना० } ना० स्त्री० चोचला, झांवली, अठिलानपन, चमकन।

मटकना० ना० पु० पुरवा, बधना, मृत्तिकाका छोटापात्र।
मटकना० अ० क्रि० पलक वा झांवली मारना, चमकना।
मटका० ना० पु० मठोर मृत्तिकाकाबड़ाबर्त्तन।
मटकाना० स० क्रि० आंख घुमाना, चमकाना, दूसरे को बिराना।
मटकी० ना० स्त्री० छोटा मटका, चूतनी, गुल्ली, छगुनी, झपकी, सैन।
मटकोठा० ना० पु० मिट्टीका घर।
मटर० ना० पु० अन्न विशेष, किराउ।
मटरा० ना० पु० मटरविशेष, रेशमीवस्त्र विशेष।
मटरी० ना० स्त्री० मटर विशेष।
मटरीला० गु० जिसमें मटर मिलाहो।

मटियाना० स० क्रि० मिट्टीसे मांजना, अ० क्रि० सून खींचना, आंख छुपाना, होनेदेना, शिथिल होजाना।
मटियार० ना० पु० एकप्रकारकी धरती विशेष जो रेतली नहीं है।
मटियारा० गु० जो किसीकामकानहो, जाताऊ खेती के योग्य।
मटियाव० ना० पु० आनाकानी, आंखछुपाव।
मट्टी० ना० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका।
मट्ठा० ना० पु० छांछ, मठा।
मठ० ना० पु० शिवालय, गोसाइयों का घर, मण्डप।
मठड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

मठपति०
मठपती० } ना० पु० गोसाईं, अतिथि वा जो मनुष्य शिवार्पितवस्तु लेताहो।

मठा० ना० पु० मट्ठा, गु० ढीला, धीमा, धीरा।
मठोर० ना० पु० मटका।
मड़ियाना० स० क्रि० चपकाना, माड़ीलगाना, जमाना।
मड़ोड़० ना० स्त्री० ऐंठ, बल, पेच।
मड़ोड़ना० स० क्रि० ऐंठना, बलदेना, पेचडालना।
मड़ोड़ा० ना० पु० पेटमेंकी पीड़ा, पेचिश।
मड़ोड़ी० ना० स्त्री० मुररी, ऐंठन, जोड़न।
मढ़न० ना० पु० मढ़ने की वस्तु वा काम।
मढ़ना० स० क्रि० लेसना, लगाना, चिपटाना।
मढ़ा० गु० जो मढ़ागया, ना० पु० विवाह का मण्डप, बड़ी मढ़ी।
मढ़िया० ना० स्त्री० छोटी मढ़ी।
मढ़ी० ना० स्त्री० कुटी, झोपड़ी, मण्डप।
मणि० ना० स्त्री० भूषण के लिये पाषाण विशेष हीरा मोती आदि चमकदार, शिरोमणि और प्रसिद्ध है कि वस्तु विशेष सर्प के पास होती है जो रात्रिको प्रकाशितरहती है।

मणिकर्णिका॰ ना॰ स्त्री॰ काशीजी में स्थान विशेष जहां देवीजी के कान की मणि गिरीथी।

मणिका॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी मणि, गुरिया।

मणिपूर॰ ना॰ पु॰ चक्रविशेष, देश विशेष, जो बंगाल देश के पूर्व में है।

मणियां॰ ना॰ पु॰ मालाकी गुरिया वा दाना।

मणियार॰ ना॰ पु॰ सर्पविशेष जिसके मणि होतीहै, जातिविशेष जो चूड़ी बनाता है।

मण्ड॰ ना॰ पु॰ जूस, माड़, पोच, वा खाता जिसमें शीराभराजाता है।

मण्डन॰ ना॰ पु॰ भूषणविशेष, भिलान।

मण्डप॰ ना॰ पु॰ तृणादि से रचित देवताकाघर, मढ़ा, मड़वा।

मण्डल॰ ना॰ पु॰ स्थान, देश, गोला, कुंडल, आकाश, तल।

मण्डला॰ ना॰ स्त्री॰ घीकुवार।

मण्डलाकार॰ गु॰ गोलाकार।

मण्डलाग्र॰ ना॰ पु॰ खड्ग, तलवार।

मण्डलाना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, उड़ना, यथा, पक्षी उड़ते हैं।

मण्डलिया॰ ना॰ पु॰ कपोत विशेष।

मण्डली॰ ना॰ स्त्री॰ समूह, सभा, बैठक, घर।

मण्डलीक॰ ना॰ पु॰ राजा, महन्त, चौधरी।

मंण्डलेश्वर॰ ना॰ पु॰ राजा, मंडलपति।

मण्डवा॰ ना॰ पु॰ कुज ना॰ स्त्री॰ मंडवी।

मण्डवी॰ ना॰ स्त्री॰ अन्नविशेष।

मण्डा॰ ना॰ पु॰ पेड़ाविशेष।

मंडित॰ गु॰ जड़ित, शोभित, भूषित, मढ़ाहुआ।

मण्डियाना॰ अ॰ क्रि॰ कलपदेना वा लगाना।

मण्डी॰ ना॰ स्त्री॰ हाट, गोला, गंज।

मण्डूक॰ ना॰ पु॰ मेढ़क, भेक।

मण्ढना॰ स॰ क्रि॰ मढ़ना।

मत॰ ना॰ पु॰ धर्म, दीन, सलाह, सम्मत, रीति, ढब, डौल, पन्थ, अभिप्राय, बुद्धि, अव्य॰ निषेधार्थ अर्थात् नहीं, जनि।

मतंग॰ ना॰ पु॰ हाथी, मुनि विशेष।

मतना॰ ना॰ पु॰ ऊख विशेष।

मतभेद॰ ना॰ पु॰ मतान्तर, अभिप्राय का भेद।

मतराना॰ स॰ क्रि॰ मनाना।

मतलाना॰ अ॰ क्रि॰ जीघिनाना, उबकाना।

मतवाला॰ गु॰ मत्त, मदमाता।

मतहीन॰ गु॰ मतरहित, बुद्धि रहित।

मता॰ ना॰ पु॰ उपदेश, सलाह, परामर्श।

मतानुसार॰ ना॰ पु॰ अभिप्राय के अनुकूल, मजहब के मुवाफ़िक़, सलाह के मुवाफ़िक़।

मतान्तर॰ ना॰ पु॰ द्वितीयमत, मतके विपरीत, दूसरा धर्म।

मतान्तराचार॰ ना॰ पु॰ द्वितीय धर्म का व्यवहार।

मतावलम्बी॰ ना॰ पु॰ मताश्रयी, पन्थी।

मताश्रयी॰ ना॰ पु॰ मत के आश्रित, मतके आधीन, पन्थी।

मति॰ ना॰ स्त्री॰ बुद्धि, सम्मति, रीति, राय।

मतिमान्॰ }
मती॰ } गु॰ बुद्धिमान्।

मतीर॰ ना॰ पु॰ तरबूज, हिन्दुवाना, सप्तशतिकायां यथा, मरुधर पाइ मतीर ही मारुक है पयोधि।

मतो॰ ना॰ पु॰ मत, सम्मत।

मत्त॰ गु॰ मधुमाता, मस्त, मतवाला हाथी।

मत्तवत्॰ गु॰ मधुमाता, मधुमाते के समान।

मत्सर॰ ना॰ पु॰ डाह, जलन, ईर्षा, गु॰ जलनी।

मत्स्य॰ ना॰ पु॰ मछली, देशविशेष।

मत्स्यघ्नी॰ }
मत्स्यबंधन॰ } ना॰ स्त्री॰ बडिश, जिससे मछली मारते हैं।

मत्स्यपित्ता॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी।

मत्स्याक्षी॰ ना॰ स्त्री॰ ब्राह्मी, श्वेतदूब।

मथन॰ ना॰ पु॰ बिलोवन, घंघोवन, दुहाव।

मनुज॰ ना॰ पु॰ मनुष्य, आदमी।
मनुजाद॰ ना॰ पु॰ असुर, दैत्य, राक्षस।
मनुष्य॰ ना॰ पु॰ मानव, मर्त्य, आदमी।
मनुष्यता॰ स्त्री॰ } मनुसाई, पुरुषार्थ, भल-
मनुष्यत्व॰ पु॰ } मनसात।
मनुसाई॰ ना॰ स्त्री॰ पुरुषार्थ, मनुष्यता, भल- मनसी।
मनुहार॰ ना॰ स्त्री॰ मोहनी, सुन्दरी।
मनो॰ अव्य॰ मानो, जानो।
मनोगुप्ता॰ ना॰ स्त्री॰ मनसिल।
मनोज॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मनोभव॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मनोयोग॰ ना॰ पु॰ मनका योग।
मनोरथ॰ ना॰ पु॰ इच्छा, कामना, वासना, मतलब।
मनोरम॰ ना॰ पु॰ गु॰ मनोज्ञ, सुन्दर, कुन्द।
मनोहर॰ गु॰ मनका हरनेहारा, मनोज्ञ।
मनोज्ञ॰ गु॰ सुन्दर, स्वरूप, चाहता, मनभावित, मनको जाननेहारा।
मनौती॰ ना॰ स्त्री॰ जामिनी ना॰ पु॰ बिचवई, और मध्यस्थ।
मन्त्र॰ ना॰ पु॰ टोटका, वशीकरणी, लटका, एकान्त वा गुप्त उपदेश, सम्मति, सलाह।
मन्त्रणा॰ ना॰ स्त्री॰ परामर्श, विचार, उपदेश।
मन्त्रराज॰ ना॰ पु॰ तारकादि मन्त्र।
मन्त्री॰ ना॰ पु॰ जिस के साथ परामर्श कीजावे, वजीर, सम्मती, सलाही, गु॰ मन्त्रजानने हारा।
मन्थन॰ ना॰ पु॰ मथन।
मन्थरा॰ ना॰ स्त्री॰ केकयी की दासी विशेष।
मन्थित॰ गु॰ छाछ, मट्ठा, मथित।
मन्थी॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, कामदेव, नाका, स्व र्भानु अर्थात् राहु, शनैश्चर।
मन्द॰ गु॰ अल्प, थोड़ा, शिथिल, बुरा, दुष्ट, नीच, अभागी, धीरा, मलीन, ना॰ पु॰ पाप, शनैश्चर, अज्ञान।
मन्दतर॰ गु॰ अतिमन्द, अतिनीच।
मन्दर॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष।
मन्दरा॰ ना॰ पु॰ नाचगीना, गु॰ नाटा, ठिगना।
मन्दराचल॰ ना॰ पु॰ मन्दर।
मन्दराज॰ ना॰ पु॰ समुद्र के तट पर नगर विशेष।
मन्दा॰ गु॰ धीरा, कोमल, नम्र, सस्ता, हलका।
मन्दाकिनी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीगंगाजी, स्वर्गीय।
मन्दार॰ ना॰ पु॰ कमल, मदार, कल्पवृक्ष।
मन्दिर॰ ना॰ पु॰ घर, देवालय।
मन्दिरा॰ ना॰ पु॰ मजीरा।
मन्दोदरी॰ ना॰ स्त्री॰ रावण की स्त्री, पांचवीं कन्या।
मन्मथ॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मन्वन्तर॰ ना॰ पु॰ एक मनुका राज्य, अर्थात् इकहत्तरि युगका परिमाण वा दो मनुवों के मध्य का काल।
मपान॰ ना॰ पु॰ नाप, परिमाण।
मपाना॰ स॰ क्रि॰ माप करवाना, नपाना।
मफेनक॰ ना॰ पु॰ अफयून, अफीम।
मम॰ सर्व॰ मेरा, मैं, ना॰ स्त्री॰ ममता, ईर्षा।
ममता॰ स्त्री॰ } घमण्ड, दम्भ, मनमौज, माया,
ममत्व॰ पु॰ } मोह, दया, प्यार।
ममाखी॰ ना॰ स्त्री॰ मधुमक्खी।
ममियासास॰ ना॰ स्त्री॰ पति वा पत्नी की ममानी।
ममियाससुर॰ ना पु॰ पति वा पत्नी का मामू।
ममेरा॰ गु॰ मामूका॰ यथा, मामूका पुत्र।
ममेराभाई॰ ना॰ पु॰ मामूका पुत्र।
ममीश॰ ना॰ पु॰ मेराईश्वर, मेरास्वामी।
मय॰ ना॰ पु॰ कार्य, प्रधान, रूप, दैत्यविशेष, मदिरा गु॰ बहुत।
मयकल॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष।

मयंक॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।
मयन॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
मयना॰ ना॰ स्त्री॰ पार्वती की माता, मैना।
मयसुता॰ ना॰ स्त्री॰ मन्दोदरी।
मया॰ ना॰ स्त्री॰ माया, दया।
मयूर॰ ना॰ पु॰ मोर, पक्षीविशेष, हंस।
मयूरक॰ ना॰ पु॰ ऊंगा।
मयूरग्रीवक॰ ना॰ पु॰ नीलाथोथा, तूतिया।
मयूरचोख॰ ना॰ पु॰ स्योना।
मयूख॰ ना॰ पु॰ किरण।
मरक॰ ना॰ पु॰ सर्वव्यापक रोग महामारी।
मरकत॰ ना॰ पु॰ नीलम, नीलमणि, प्रवाल।
मरकन्हा॰ }
मरकहा॰ } गु॰ मारनेहारा।
मरगजी॰ ना॰ पु॰ मुरझाया हुआ मरगशब्द फ़ारसीका अर्थात् मौत और जो जीव अर्थात् मुआ जीव यह शब्द सतसई में है।
मरघट॰ ना॰ पु॰ मृतकों के जलाने का स्थान।
मरजाना॰ अ॰ क्रि॰ मरना।
मरजिया॰ ना॰ पु॰ समुद्र से मोती निकालनेहारेका नाम।
मरण॰ ना॰ पु॰ प्राणवियोग, मृत्यु।
मरदनिया॰ ना॰ पु॰ मर्दनी।
मरना॰ अ॰ क्रि॰ प्राण निकलना।
मरपच॰ अ॰ गु॰ सरा, गन्दा, जीर्ण।
मरपचना॰ अ॰ क्रि॰ दुःख वा शोकका भोग करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम अर्थात् मिहनत करना।
मरभूखा॰ गु॰ उपासा, लंघा, खाऊ, बड़पेटा।
मरमर॰ ना॰ पु॰ पाषाण विशेष, बिल्लौर।
मरमराना॰ स॰ क्रि॰ चरचराना, यथा नई जूती बोलती है।
मरवैया॰ ना॰ गु॰ मरनेहारा वा मारनेहारा, मृतक।
मरहट्टा॰ ना॰ पु॰ छन्दविशेष, जातिविशेष।
मरा॰ गु॰ मरगया, मृतक।
मराल॰ ना॰ पु॰ हंस, बतक।
मराली॰ ना॰ स्त्री॰ मराल की स्त्री, बाचाल।
मरिच॰ ना॰ स्त्री॰ मिरच, कालीमिरच।
मरीचि॰ ना॰ स्त्री॰ किरण, लहरी, ना॰ पु॰ मुनिविशेष।
मरीचिका॰ ना॰ स्त्री॰ मृगतृष्णा, शराब।
मरु॰ ना॰ पु॰ रेता, बालू।
मरुआ॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष, जिसमें सुगन्धि होती है।
मरुक॰ ना॰ पु॰ मरुआ।
मरुतिप्रय॰ ना॰ पु॰ ऊंट।
मरुद्भवा॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रवारुणी, जवासा।
मरुभूमि॰ ना॰ स्त्री॰ मारवाड़कीधरती, रेतली।
मरुव॰ ना॰ पु॰ मरुआ।
मरुत्॰ ना॰ पु॰ वायु, पवन।
मरोड़॰ ना॰ स्त्री॰ मरोड़।
मरोड़ना॰ स॰ क्रि॰ मड़ोड़ना।
मरोड़फली॰ ना॰ स्त्री॰ पौधाविशेष की फली।
मरोड़ा॰ ना॰ पु॰ मड़ोड़ा।
मरोड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ मड़ोड़ी, ऐंठन, मुरही।
मरोर॰ ना॰ स्त्री॰ मरोड़।
मरोरना॰ स॰ क्रि॰ मरोड़ना।
मरोह॰ ना॰ स्त्री॰ छोह, प्यार, माया, भलमनसात।
मरोही॰ गु॰ छोही, मायावन्त, दयाशील।
मर्कट॰ ना॰ पु॰ वानर, कपि।
मर्कटी॰ ना॰ स्त्री॰ कौंचबीज, जाल, मकड़ी, बानरी, गणितमर्कटी जो पिंगलमें है।
मर्त्य॰ ना॰ पु॰ मनुष्य।
मर्त्तलोक॰ }
मर्त्यलोक॰ } ना॰ पु॰ मनुष्यलोक।
मर्दक॰ ना॰ पु॰ पवार पौधा, गु॰ मलनेहारा।
मर्दन॰ ना॰ पु॰ शरीर का मलना, रगड़न, घिसाव, नाशन।
मर्दना॰ स॰ क्रि॰ मलना, नाशना, मिटाना।

मर्द्दनछर्द्दन० ना० पु० मैनफल।
मर्द्दनी० गु० मलनेहारा।
मर्द्दित० गु० जो मलागया, मारागया।
मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, कोर, कठोर हृदयादि अंग।
मर्मर० ना० पु० एक पत्थर का नाम है यह शब्द फारसी का है।
मर्मस्थान० ना० पु० शरीर के जिसस्थान का घाव संघातिक है, भेद का स्थान।
मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी।
मर्मी० गु० भेदू, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ।
मर्य्याद०, मर्य्यादा० ना० स्त्री० महत, पति, सन्मान, सीमा, हद्द, वादा, प्रमाण।
मल० ना० पु० मैल० विष्ठा, स्त्री की रज, पाप।
मलक० ना० पु० पानी, आंवला, जी घिनाना।
मलकना० अ० क्रि० कहारके समान चलना, जी घिनाना वा उबकाना।
मलंग० ना० पु० पक्षीविशेष।
मलंगी० ना० पु० लोन बनाने हारा।
मलत० ना० पु० रुपया वा पैसा जो घिसगया हो, सिलपट।
मलथ० ना० स्त्री० कटुंबरि।
मलन० ना० पु० बाट, लोक, मलनेकाकाम।
मलना० स० क्रि० मर्दना, घिसना, मींजना।
मलबा० ना० पु० कूड़ा, मैल, बर्तन विशेष।
मलमल० ना० पु० कपड़ाविशेष।
मलमास० ना० पु० लौंद, अधिमास।
मलमेट० ना० पु० उजाड़, सत्यानाश, होचुका जैसे संवाद।
मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है।
मलयज० ना० पु० चन्दन।
मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहां चन्दन अधिकता से उपजता है।
मलया० ना० स्त्री० पद्माक, ना० पु० मलय।
मलयागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग।
मलयुत० गु० मैला।
मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम।
मलविका० ना० स्त्री० कालानिशोत।
मलवैया० ना० पु० मलनेहारा।
मलाई० ना० स्त्री० साढ़ी, बालाई, मलने का काम वा पैसा।
मलान० ना० पु० दुःख, उदास, दुःखी।
मलाना० स० क्रि० मर्दन कराना, घिसाना, मिजाना।
मलार० ना० पु० रागविशेष।
मलिच्छ० गु० म्लेच्छ।
मलिन० गु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री० कालीमिरच।
मलिनता० ना० स्त्री० मालिन्य, अपवित्रता, मैलापन।
मलिनमुख० गु० उदास, कठोर, लिहाड़ा, दुष्ट।
मलिनी० ना० स्त्री० पुष्पवती, रजस्वला।
मलिन्द० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मलिया० ना० स्त्री० काष्ठ वा नारियल वा मिट्टीकापात्र, जिसमें तेल रखते हैं, हँड़िया।
मली० गु० मैला।
मलीन० गु० मैला, अपवित्र, धुंधला, उदास, दुःखित, व्याकुल।
मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता।
मलेपख० गु० घोड़ा जिसकी आयुदशवर्ष से अधिक हुई।
मलेच्छ० गु० म्लेच्छ।
मल्ल० ना० पु० आलू, जो बाहुयुद्ध में निपुण, योद्धा, पहलवान।
मल्लयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध, कुश्ती।
मल्लार० ना० पु० मलार।
मल्लिक० ना० पु० पर्वतविशेष।
मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चम्बेली, पुष्पविशेष।
मल्लूर० ना० पु० बेल, बिल्व।
मवास० ना० पु० शरण पाला, आसरा।